CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीणा

संस्था पंजीयन क्र. १/३५

स्वर्ण जयन्ती विशेषांक

श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन
उच्चतर माध्यमिक कन्याशाला
बीना (म.प्र.)

सन् १९८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम-खण्ड

4513
2-8-99

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन हितोपदेशिनी सभा बीना की
स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित

शाला-पत्रिका

प्रथम पुष्प

वीणा

१९८५

१—संरक्षक
श्रीमति हरवंश डांगे
प्राचार्या
एम० ए० एल० टी०

२—प्रधान सम्पादक
कुमारी इन्द्रा श्रीपति
एम० ए०, बी, एड०

३—सह-संपादक मंडल
श्रीमति सुनीता स्टेनली
एम० ए० बी० एड०
प्रधान—अध्यापिका
श्रीमति सुधा श्रीवास्तव
बी० ए० आयुर्वेदरत्न

४—कक्षा प्रतिनिधि
कु० किरन जैन, कु० कीर्ति जैन कु० अलका शाह

विशेष परामर्शदाता
श्री अभयकुमार शास्त्री
बीना

५—प्रकाशक
—श्री नाभिनदंन दिगम्बर जैन
हितोपदेशिनी सभा
बीना, जिला—सागर
बीर नि० सं०—२५११
फरवरी—१९८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंशीलाल धृतलहरे
मंत्री
शालेय शिक्षा एवं हरिजन कल्याण

दूरभाष : कार्यालय ६२४२८
निवास ६३६४१
भोपाल

दिनांक २३-१२-८४

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके विद्यालय द्वारा "वीणा" पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है।

यह पत्रिका छात्रों के हित में उनके मार्ग दर्शन में प्रेरणा के पथ में अग्रसर होगा। पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए,

बंशीलाल धृतलहरे

डा० राजेन्द्र जैन
मंत्री
वाणिज्य, उद्योग एवं खनिज साधन

दूरभाष—कार्यालय : ६१४८६
निवास : ७४६३३
७.२८०

निवास : ४, श्यामला हिल्स

अ. शा. पत्र क्रमांक १२८०
भोपाल, दिनांक २०. १२. १९८४

सन्देश

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन उच्चतर माध्यमिक कन्या शाला बीना द्वारा छात्राओं की साहित्यिक प्रतिभा एवं अभिरुचि के विकास के लिये "वीणा" पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है कि सरस्वती देवी की "वीणा" के तारों के स्वर की मधुर झंकार की भांति "वीणा" पत्रिका छात्राओं में साहित्यिक चेतना जाग्रत करेगी और जैन धर्म के सिद्धान्तों का अनुशीलन करेगी। रचनात्मक प्रयास एवं सुन्दर प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनायें।

डा० राजेन्द्र जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यनारायण अग्रवाल
राज्य मंत्री
वाणिज्य एवं उद्योग, खनिज साधन
मध्यप्रदेश शासन

भोपाल

दिनांक २३. १२. १९८४

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय छात्राओं में साहित्यिक अभिरुचि जागृत करने तथा शाला संबंधी जानकारी प्रकाशित करने के उद्देश्य से शाला पत्रिका "वीणा" का प्रकाशन कर रहा है। छात्रों में साहित्य अभिरुचि के साथ ही उनमें सुप्त प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने का कार्य भी शालेय पत्रिका के माध्यम से हो सकेगा।

"वीणा" के सफल प्रकाशन के लिये मेरी ओर से शुभ कामनाऐं स्वीकार करें।

सत्यनारायण अग्रवाल

अरविन्दभाई पटेल

विधायक बीना
एवं
अध्यक्ष निर्यात निगम
म. प्र. शासन भोपाल

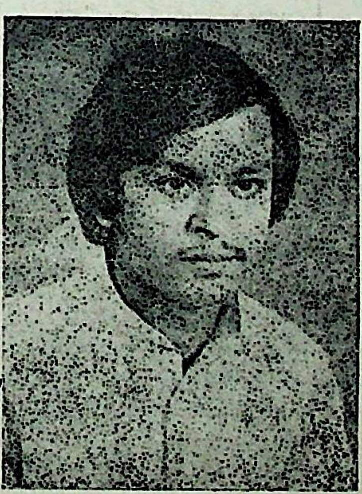

बीना

१ फरवरी १९८५

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि नाभि० दिगम्बर जैन कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बीना जिला सागर अपनी शाला पत्रिका "वीणा" का प्रथम अंक प्रकाशित कर रहा है। मैं इस हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

विद्यालय पत्रिका से छात्राओं में लेखन के प्रति रुचि जागृत होगी। इसमें विद्यालय की समस्त गतिविधियों का समावेश होगा। विद्यालय पत्रिका छात्राओं के विकास में विशेष महत्व रखती है। इससे छात्राओं की रचनात्मक प्रवृत्ति विकसित होगी ऐसी मेरी कामना है।

विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करे इस आशा के साथ पुनः अपनी शुभ कामना भेज रहा हूँ।

अरविन्द भाई पटेल
"विधायक बीना"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिला सागर द्वारा प्रथम बार "वीणा" का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका में श्रीमान् संचालक महोदय, लोक शिक्षण संचालनालय, म०प्र० के निर्देशों के अनुरूप आवश्यक सामग्री का समावेश किया गया होगा।

आशा है, आपकी पत्रिका छात्राओं के बौद्धिक एवं नैतिक विकास में सहायक सिद्ध होगी, साथ ही शिक्षा जगत एवं समाज सेवा की दिशा में विद्यार्थियों को सद्प्रेरणा और मार्गदर्शन सभी देगी।

आपके इस प्रयास के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(उपेन्द्र सिंह)
संभागीय शिक्षा अधीक्षक
सागर संभाग सागर

फोन : ५०

जी० एन० चौबे
एम. एम, एम. एड.
प्राचार्य

गवर्नमेंट हा. सेकेन्डरी
स्कूल बीना, न. १
दिनांक १. ११. ८४

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि नाभिनंदन कन्या जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रथम पुष्प प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका छात्र-छात्राओं की विकासोन्मुख प्रतिभा का प्रतिविम्ब होती है। गुणात्मक विकास हेतु रचनात्मक प्रयत्न शालेय पत्रिका के माध्यम से ही मुखरित होते हैं।

उद्देश्य की सफलता हेतु हमारी शुभ कामना हैं।

जी० एन० चौबे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचार्या की कलम से

उद्‌वोधन

शाला परिवार की ओर से ऐतिहासिक प्रगति में एक ओर मील का पत्थर लगना "वीणा" यह पत्रिका आपके हाथ में होना है। पत्रिका का प्रवेशांक है। जो श्री नाभिनंदन दिग० जैन हितो सभा बीना की स्वर्ण जयन्ति के शुभ अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है प्रयत्न होगा कि प्रतिवर्ष प्रकाशित होती रहे। क्योंकि—

विद्यालय में विद्याध्ययन करने वाली छात्राओं को शिक्षा देने का तात्पर्य केवल अध्यापन मात्र से नहीं है। अक्षर ज्ञान या परीक्षा में सफलता ही शिक्षा का उद्देश्य हो ऐसा नहीं, ये तो शिक्षा के उद्देश्य की ओर अग्रसर होने के प्रयत्न मात्र है। वर्तमान समय में शाला की शिक्षा ऐसी ही देखने में आती है, कि उसमें व्यस्त पाठ्यक्रम सामने रहता है। केवल शाला पत्रिका ही एकमात्र ऐसा साधन है, जो विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को उद्‌बुद्ध कर सकने में सफल हो सकती है।

पत्रिका के लिये प्रथम प्रोत्साहन एवं सहयोग सम्मानीय उच्चाधिकारियों का है, जिन्होंने १६८१ दिसम्बर से अनुदान प्रदानकर इस प्रकार के अन्य प्रगति के मार्गों की ओर अग्रसर होने के लिये प्रेरित किया। समाज से मान्यवर अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जी, मन्त्री श्री विमलकुमार सराफ जी एवं परामर्शदाता श्री अभय कुमार शास्त्री जी एवं अन्य समिति के सदस्यों का जहां कारगर मार्गदर्शन एवं सहयोग मिला, वही शाला परिवार की शिक्षिकाओं ने भी रचनात्मक पहल व भरपूर सहयोग दिया। छात्राओं ने भी उत्साह प्रदर्शित किया। समय-समय पर अभिभावकगण भी शाला का मानक (Standered) बढ़ाने में अपना अमूल्य समय प्रदान करते है। शासकीय प्रतिनिधि के रूप में श्री जी० एन० चौबे जी (प्राचार्य बीना क्रमांक १) भी अपना उत्तरदायित्व निर्वाह करते रहे।

मैं आप सभी के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए, कोटिशः मंगलकामनाओं एवं विश्वास के साथ, आपके आशीर्वाद एवं शालेय प्रगति की कामना करते हुए, आप सभी के अथक परिश्रम का फल "वीणा" का प्रथम पुष्प आपको समर्पित करती हूँ।

—श्रीमति हरवंश डांगे
प्राचार्या
संरक्षक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पादकीय

"यत्र नार्युस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" का उपदेश देने वाले आदि पुरुष मनु के पवित्र देश में ही आज नारी की दारुण और मर्मस्पर्शी दुर्दशायें हो रही हैं। प्रतिदिन अखबारों में छपी खूनी सुर्खियां दिल दहला देती हैं। किसी को आग में जलाकर भस्म कर दिया, तो किसी को फांसी के फंदे पर लटका दिया, किसी को जहर की रोटी खिला दी तो किसी की देह को केरोसिन से नहला दिया और इन नवविवाहिताओं का जीवन प्रारम्भ होने के पूर्व ही पूर्ण हो गया। पुरुष प्रधान समाज की रूढ़ियों और अत्याचारों की कहानियां ये अग्निदग्ध आत्मायें मानों चीख चीख कर कह रही है मुझे मरने के लिये विवश किया गया मेरे अरमान अधूरे रह गये, मैं अपनी असामयिक मृत्यु का इस समाज से प्रतिशोध लेना चाहती हूं।

वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों और दिन प्रतिदिन गिरते नैतिक मूल्यों ने आज भारतीय नारी की गरिमा को नि: संदेह असुरक्षा, अन्याथा, शोषण और उत्पीड़न के घेरे में कैद कर लिया है। प्रेम लज्जा, मर्यादा, त्याग सहन शीलता आदि गुणों को आज खुले आम नीलाम किया जा जा रहा है। "सृष्टि के सर्वोत्तम उपहार" का सरेआम अनादर किया जा रहा है। लगता है साहित्यिक अभिरूचि ममता, कलात्मकता का प्रतिबिंब नारी जीवन मात्र प्रवंचना और शब्द जाल रह गये हैं। 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, का कथन झूठा हो गया है।

एक औसत भारतीय नारी के सामान्य जीवन का तार्किक विश्लेषण करने पर पता चलता है कि आज के विषम सामाजिक परिवेश में कन्या जन्म का अभिशाप, उसका पालन-पोषण एक बंदिश और विवाह एक खौफनाक हौवा बन गया है।

आज के पर्यावरण में आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय नारी की इस दयनीय, व्यथापूर्ण दशा को सुधारने के लिये ठोस कदम उठाये जाये ताकि समाज के अनावश्यक बंधनों एवं पराश्रिता जैसी विवशताओं से मुक्ति पा सके।

सर्वप्रथम जहाँ एक ओर समाज में व्याप्त रूढ़ियों को समाप्त करना होगा। वही दूसरी तरफ हमें पश्चिमी अंधानुकरण को पूरी तरह से त्यागना होगा इस हेतु नारियों में संबल और चेतना आना जरूरी है और बिना शिक्षिप्त चेतना आना असंभव है। हमें अपने ज्ञान को बहुआयामी बनाना होगा। खोये हुये आत्म-विश्वास को पुन: जगाना जरूरी है। तभी हम शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सकती है। यद्यपि यह सच है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे नारी जिस साहस, कौशल चातुर्य और बुद्धिमानी से प्रवेश पाने में सफल हो जाती है, उनमें से अनेक के दरवाजे तो पुरुषों के लिये सदैव बंद ही रहते हैं। तथापि आज गिरते हुये नैतिक मूल्यों को पुन: ऊँचा उठाना होगा। इसके लिये जरूरी हैं नारी नारी का सहयोग करे तथा समाज में अपना सम्मानित स्थान बनाने का प्रयास करें अन्यथा युगों-युगों तक नारी सीता बनकर अग्नि-परीक्षा देती रहेगी या फिर द्रौपदी की तरह दुःशासन से चीर-हरण करवाती रहेगी, क्योंकि प्रत्येक युग में राम के साथ रावण भी जन्मते रहेंगे।

श्रीता० नं० दि० जैन हितो० सभा की स्वर्णजयन्ती के शुभ अवसर पर "वीणा" का यह प्रथम दीप आपसबके हाथों में सौंपते हुये परमानंद की अनुभूति हो रही है, साथ ही विश्वास भी कि वीणावादिनी का वृहद हस्त हम सब में मानसिक चैतन्यता प्रज्जवलित करने में समर्थ हो, ताकि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी उत्थान के संघर्ष में अपना योगदान देकर खोये हुये आत्म-गौरव एवं भारतीय संस्कृति में विद्यमान नारी की प्राचीन गरिमा को पुनः साकार रूप देने में सहायक बन सकें ।

वीणा के इस प्रथम अंक प्रकाशन में जिन महानुभावों ने अपने प्रेरणास्पद शुभ संदेश एवं मंगल कामनायें भेजी है, उनकी मैं अभारी हूँ, शाला परिवार की प्राचार्या श्रीमति एच० डागे संरक्षक के प्रति मैं आभारी हूँ। जिन्हों ने पत्रिका प्रकाशन में विशेष दिलचस्पी दिखाई। पत्रिका का रूपसंवारने में जिन शिक्षकाओं एवं छात्राओं ने सहयोग दिया, उनकी आभारी हूँ विशेष रूपसे श्री अभयकुमार जी शास्त्री व्याख्याता की आभारी हूँ, जिन्होंने पांडुलिपि तैयार कराने में एवं पत्रिका प्रकाशन में अपना अमूल्य समय एवं सहयोग देकर हम सब के प्रयासों को साकार रूप दिया उन सभी सहयोगियों का जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपसे अपना सहयोग दिया, मैं आभार मानती हूँ। पत्रिका में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखकों के कथनानुसार उनके अपने निजी अनुभव एवं विचार है। अंत में सभी सहयोगियों एवं पाठकों को नववर्ष की मंगल कामनाओं सहित।

दिनांक ८।१।८५

कुमारी इन्द्रा श्रीपति
एम० ए० बी०एड०
प्रधान सम्पादक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

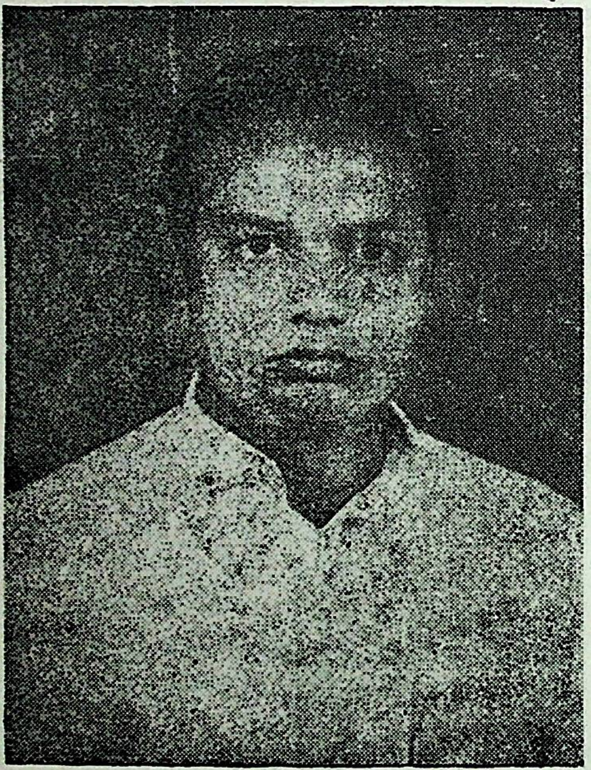

दो शब्द

राजेन्द्र कुमार जैन

यह सारा जगत नारी और नर के समन्वित जीवन पर आधारित है। नारी के बिना नर का और नर के बिना नारी का जीवन अधूरा है। घर परिवार, समाज और राष्ट्र के नव निर्माण तथा उत्थान में जितनी अहं भूमिका नर की है उससे भी अधिक नारी की भी है। नारी को शिक्षित होना जरूरी है तभी वह अपने महत्वपूर्ण दायित्वों को भली भांति निभा पायेगी। आज के प्रगति शील वैज्ञानिक युग में तो नारी शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। भारत जैसे लोकतांत्रिक प्रगतिशील राष्ट्र में तो नारी शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता है क्यों कि एक शिक्षित विवेकशील सुयोग्य नारी ही परिवार को सुखी और समृद्ध बनाये रख सकती है तथा देश को प्रगति की ओर अग्रसर कर सकती है। यही कारण है कि आज भारत में ही नहीं अपितु अखिल विश्व में नारी को उसकी दयनीय दशा से उभारने और उसे शिक्षित करने की तथा मानव के ही समान उसे अधिकार दिलाने की मुहिम चालू है। नारी शिक्षा पर इसलिये आज सर्वाधिक जोर दिया जा रहा है। सदियों से प्रताड़ित और उपेक्षित होकर आज घर परिवार समाज तथा राष्ट्र के नवनिर्माण एवं पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है।

नारी के शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखकर आज हमारी सरकार जगह-जगह बालिकाओं को शिक्षण-प्रशिक्षण के लिये स्कूल कालेज खोल रही है और उन्हें शुल्क में रियायतें, छात्रवृत्तियाँ आदि देकर अधिकाधिक सुविधायें प्रदान कर रही है। अशासकीय स्तर पर खोले जाने वाली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कन्या शालाओं और महाविद्यालयों के लिये भी यथासंभव नियमानुसार भरपूर सहयोग शासन द्वारा दिया जा रहा है।

बीना नगर में बालिकाओं के शिक्षण हेतु कोई शासकीय विद्यालय नहीं था एक दो अशासकीय विद्यालय बीना नगर की जनसंख्या और आवश्यकता को देखते हुये पर्याप्त नहीं थे तथा दूरी का भी प्रश्न था अतः बिना की जैन समाज ने लगभग ११ वर्ष पूर्व बालिकाओं के शिक्षण हेतु माध्यमिक विद्यालय एवं सन् १९७८ में उच्चतर माध्य० विद्यालय खोलकर नगर की बालिकाओं के शिक्षण की समुचित व्यवस्था की है। यहां लौकिक शिक्षण के साथ साथ खेलकूद, गाइड एवं नैतिक शारीरिक शिक्षण की भी समुचित व्यवस्था है। साथ ही साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से उनमें वक्तृत्व, कला, विचारों एव भावों की अभिव्यक्ति के लिये भी अवसर दिये जाते हैं। कन्याशाला में योग्य परिश्रमी स्टाफ है। जो बड़े श्रमपूर्वक बालिकाओं के शिक्षण एवं उनके सर्वांगीण विकास में रूचि लेता है। यही कारण है कि प्रारंभ से लेकर यह शाला दिनों दिन उन्नति करती जा रही है। परीक्षा परिणाम अन्य शालाओं की अपेक्षा सदा अच्छे रहते हैं। शाला की इसी प्रगति से प्रभावित हो शासन ने अनुदान देना भी आरम्भ कर दिया है। शिक्षा प्रबन्ध समिति के मंत्री श्री विमल कुमार जी सराफ का योगदान, लगन एवं कर्मठता इस विषय में सराहनीय है। इस कन्या शाला में बिना किसी भेदभाव के सभी को समान रूप से शिक्षण दिया जाता है। बीना नगर के सभी नागरिकों से अपेक्षा है कि वे इस कन्या शाला में अपनी बालिकाओं को प्रवेश दिला कर इसका लाभ लेवें।

मेरी हार्दिक भावना है कि यह शाला बीना की बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु अधिकाधिक कार्य करे। यहाँ से पढ़कर निकली हुई बालिकायें घर, समाज तथा राष्ट्र के नवोत्थान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायें और इस शाला तथा बीना नगर के नाम को देश में रोशन करें।

दिनांक ८।१।८५

राजेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
श्री ना० नं० दि० जैन शिक्षा प्रबन्ध
समिति, बीना०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन उच्चतर माध्यमिक शाला का जन्म एवं विकास

विमलकुमार सराफ साहित्यरत्न
प्रवन्धक शाला एवं
मंत्री
श्री नाभि० दिग० जैन हितो० सभा
बीना इटावा

इटावा ग्राम काफी प्राचीन एवं ऐतिहासिक है समय-समय पर इसकी उन्नति होती गई। आस-पास के ग्रामों मे हजारों परिवार बीसा नगर में रहने लगे। इटावा मुख्यता निवासीय क्षेत्र होने से शासन को शिक्षालयों को खोलने हेतु

पर्याप्त स्थान प्राप्त नहीं हो सका। अतः नवीन विद्यालय नगर के बाहर बने। दिगम्बर जैन समाज की प्रतिनिधि सभा श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन हितोपदेशनी सभा का शुरू से ही मूल उद्देश्य (शिक्षा) रहा है। इसीलिये संस्कृत विद्यालय करीब ७८-७९ वर्ष से लगातार सभा द्वारा संचालित किया जा रहा है। बालकाओं को भी शिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक है पर इटावा में इसकी कमी निम्न कारण से सभी अनुभव कर रहे थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) बीना नगर में शासकीय कन्या शाला का अभाव

(२) नगर की जनसंख्या को देखते हुए अशासकीय कन्या शालाओं की अपर्याप्तता तथा दूर स्थिति।

(३) आधुनिक वातावरण तथा असामाजिक तत्वों से बालिकाओं की सुरक्षा आदि के परिपेक्ष्य में यहां उपर्युक्त कन्याशाला की आवश्यकता बहुत समय से महसूस की जा रही थी।

उक्त परिपेक्ष्य में सिंघई आनन्दकुमार जी की अध्यक्षता में मन्त्री श्री सिंघई भैयालालजी ने सर्वप्रथम बजट की मीटिंग दिनांक ८-६-१९७१ को पूर्व माध्यमिक कन्याशाला खोलने का निर्णय लिया। पर उसी वर्ष सभा के चुनावों के कारण उक्त निर्णय पर क्रियान्वयन नहीं हो सका। तब नव—निर्वाचित मन्त्री नन्हेलालजी बुखारिया ने दिनांक २१-५-७२ को मीटिंग में पुनः कन्याशाला खोलने का प्रस्ताव को रखा। माननीय सिंघई राजकुमार जी की अध्यक्षता में दिनांक २५-५-७२ को पूर्व माध्यमिक कन्याशाला खोलने का निर्णय लिया एवं शाला संचालन हेतु ३ सदस्यीय उपसमिति बनाई गई। (१) श्री मोहन लालजी श्रीपति (२) श्री कोमलचन्द जी बुखारिया (३) मै (विमलकुमार सराफ)।

उक्त उपसमिति ने सभा के निर्णय के अनुसार शाला खोली। अध्यापिकाओं की नियुक्त की। प्रथम अध्यापिका श्रीमति शीला जैन नियुक्त हुई। उन्होंने मात्र एक सवा माह की कार्य किया एवं स्तीफा देकर चली गई। प्रारम्भ में छात्राओं की संख्या कम थी। दिनांक २१-३ ७३ को उक्त समिति का विस्तार हुआ। एवं श्री लखमीचन्द मुगावली वालों को अध्यक्ष, कोमलचन्द बुखारिया को मन्त्री एवं श्री भैयालाल जी कंजिया वाले, प्रेमचन्द सेमरा, निर्मलकुमार बड़कुल, लखमीचन्द मृगावली एवं मुझे सदस्य नियुक्त कर कार्य—संचालन का संपूर्ण अधिकार इस समिति को दिया गया। प्रथम बार कन्या शाला के खर्च हेतु १४५६०—०० का प्रावधान बजट में रखा गया। सन् १९७३ में कक्षा ७ वीं एवं जुलाई ७४ में कक्षा ८ वीं खोली गई। दिनांक ११-९-७७ के निर्णयानुसार श्री अभयकुमार के संयोजन में मा० रमेशकुमार, श्री प्रेमचन्द सेमरा, श्री देश दिवाकर एवं मैं एकत्र ५ सदस्यीय कमेटी गठित हुई।

दिनांक ५-१-७८ को मान्नीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में सभा ने उच्चतर माध्यमिक कन्याशाला खोलने का प्रस्ताव पारित किया एवं जुलाई ७८ से कक्षा ९ वी ७९ में कक्षा १० एवं ८० में कक्षा ११ वीं खोली गई।

सभा बैठक दि० २१।७।१९८० को शिक्षा विभाग के अनुरूप प्रथक से शाला संचालन हेतु एक समिति श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन शिक्षा प्रबन्ध समिति बनाई गई जिसमें निम्न सदस्य वर्तमान समय में हैं।

(१)—श्री राजेन्द्र कुमार जैन	अध्यक्ष
(२)—श्री सिंघई राजकुमार जी	उपाध्यक्ष वरिष्ठ
(३)—श्री संतोषकुमार जी	उपाध्यक्ष कनिष्ठ
(४)—श्री विमलकुमार सराफ	मन्त्री
(५)—श्री अभयकुमार जी शास्त्री	उपमन्त्री
(६)—श्री सनमत कुमार जी कठरया	सदस्य
(७)—श्री लखमीचन्द मृगावली वाले	,,
(८)—श्री प्रेमचन्द सेमरा वाले	,,
(९)—श्रीमति प्राचार्या श्री नाभि०	

दि० जैन उच्चतर माध्य० शाला०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०)—श्री जी. एन. चौबे प्राचार्य   शासकीय प्रतिनिधि

उक्त समिति द्वारा वर्तमान में निम्न संस्थायें संचालित की जा रही है।

१—श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन उच्चतर माध्य.	कन्या शाला
२—श्री " " "	पूर्व "
३ " " " "	प्राथमिकशाला
४—" " "	दिगम्बर जैन शिशु मन्दिर

उक्त शालायें इटावा बाजार के मध्य में जैन मन्दिरजी के प्रवेश द्वार में से भीतर प्रवेश करने पर पाठशाला भवन में लगती हैं। यह शाला प्रकाश युक्त कमरे, सीलिंगफेन, पानी हेतु नल, फ्लस लैट्रिन, बाथरूम आदि सभी आवश्यक साधनों से संपन्न है।

इसके अतिरिक्त शाला विकास समिति भी शासन के सुझाव अनुसार गठित है जिसके पदाधिकारी व सदस्य निम्न है

(१)	श्री मान् अरबिन्दभाई पटेल, विधायक (बीना) क्षेत्र	अध्यक्ष
(२)	श्री " हरिनारायण चौबे जिलाधिकारी	शिक्षा प्रतिनिधि (सागर)
(३)	श्री " के. एन. जरिया तहसीलदार (बीना)	शासकीय "
(४)	श्री " विजयकुमार श्रीवास्तव एडव्होकेट (बीना)	पालक प्रतिनिधि
(५)	श्री " पूरनलाल अहिरवार भूतपूर्व उपाध्यक्ष नगरपालिका (बीना)	अनु० जाति प्रतिनिधि
(६)	श्रीमति चन्दा जैन धर्मपत्नी श्री राजकुमार जी बीना	महिला "
(७)	श्रीमति सुनीता स्टेनली प्रधानपाठिका (बीना)	मनोनीत प्रतिनिधि पूर्व माध्य. शाला.
(८)	श्रीमति हरवंश डांगें प्राचार्या	सचिव उच्च. माध्य. शाला.

शाला संचालन समिति का शुरू से ही प्रयत्न रहा है कि बिना भेद-भाव के योग्य से योग्य शिक्षिकाओं का शासकीय नियमानुसार अध्यापन हेतु नियुक्त किया जावें ताकि उक्त शाला की गिनती जिले की आदर्श कन्याशालाओं में हो बालिकाओ के वार्षिक परीक्षाफल इस बात के द्योतक हैं कि शाला प्रबन्ध समिति इस कार्य में पूर्ण सफल रही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परीक्षाफल १९७९

कक्षा	परीक्षा में सम्मिलित छात्राओं की संख्या	उत्तीर्ण	पूरक	अनुत्तीर्ण	रिजल्ट प्रतिशत	विशेष
६	४५	३५	७	३	७८%	७ पूरक की पास
७	४१	४१	५	३	८४%	२ " "
८	३३	१८	१३	२		
९	२२	२२	X	X	१००%	
			वर्ष १९८०			
६	५४	४२	७	४	७८%	८ वीं में २ पास
७	४९	३४	१२	३		७ पास
८	४३	४०	३	X		११ पूरक में पास
९	३४	३४	X	X	१००%	
१०	२२	२२	X	X	१००%	
			वर्ष १९८१			
६	४६	४६	X	X	१००%	८ वीं में २४
७	५०	५०	X	X	१००%	प्रथम जिसमें
८	४३	४२	१	X	९८%	२१ को विशेष
९	३८	३८	X	X	१००%	योग्यता
१०	३१	३१	X	X	१००%	
११	१९	१७	२	X	९०%	
			वर्ष १९८२			
६	५०	४५	४	X	९२%	
७	४६	४३	२	X	९३%	२ पूरक में पास
८	५२	५१	१	X	९८%	१ पूरक में पास
९	४१	३८	३	X	१००%	पास पूरक में
१०	३८	३८	X	X	१००%	
११	२८	२७	१	X	९६%	एक प्रथम
			वर्ष १९८३			
६	५२	४४	४	४	८४%	पूरक में ४ पास
७	४५	३८	५	X	८४%	६ "
८	४२	३४	७	X	८१%	२ "
९	४६	३९	७	X	८५%	८ वीं में ९ प्रथम
१०	४१	४०	१	X	९८%	१ प्रथम
११	३९	२६	१३	X	६७%	३ बाद में पास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ष १९८४

६ वीं	८७	४६	४	२०	६६%	पूरक में
७ वीं	५०	३७	०७	०६	७४%	पूरक में सभी पास
८ वीं	४८	३५	१३	X	७३%	पूरक में ३ पास
९ वी	६१	३५	१५	११	५७%	५ पूरक में पास
१० वीं	४५	२६	००	१२	५८%	पूरक में पूरी पास
११ वीं	४३	२८	३	१३	६३%	पूरक में पूरी पास

अनुदान—इस समिति द्वारा संचालित पूर्व माध्य. एवं उच्च माध्य०कन्या शालाओं को म०प्र० शासन शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष अनुदान प्राप्त हो रहा है। वर्ष १९८०-८१ वितीय सहायता ३६०० ।- वर्ष ८१-८२ में तदर्थ अनुदान १८५००.- एवं ८२-८३ एवं ८३-८४ में पोषण अनुदान क्रमशः ७७८८२—८५ प्राप्त हुआ है। वर्ष ८४-८५ में भी अनुदान की २ किश्तों के द्वारा एक लाख रुपया की राशि संस्था को अध्यापकों एवं कर्मचारियों के वेतनों के संदाय हेतु प्राप्त हुई। जो पी० डी० एकाउन्ट खुरई में जमा की जाकर उससे वेतन का भुगतान नियमित रूप से म०प्र० अशासकीय शिक्षण संस्था अध्यापक एवं कर्मचारियों के वेतन का संदाय अधि० १९७८ के अनुसार किया जाता है। उक्त कार्य हेतु समिति ने अपना प्रतिनिधि दि० २-५८२ को शासी निकाय की बैठक में सर्वसम्मति से मुझे चुना है। अतः कोशिश कर सभी के आशीर्वाद एवं सहयोग से कार्य संपादित कर रहा हूँ।

मान्यता:—समिति द्वारा संचालित चारों शालाओं को शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त है। माध्यमिक विभाग शिक्षा भोपाल द्वारा भी हायर सेकेन्डरी परीक्षा की मान्यता प्राप्त है।

छात्रसंख्या:—वर्तमान में अध्ययनरत छात्रसंख्या निम्न है—

उच्च० माध्य०	पूर्व माध्य०	प्रायमरी	शिशु मंदिर
१४६	१९८	१२७	९४

पूर्व स्टाफ:—श्री नाभि० कन्या विद्यालय की स्थापना से लेकर अभी तक निम्न अध्यापिकाओं ने अपने सेवा शैक्षणिक कार्य से लाभान्वित किया है श्रीमती शीला जैन, बी० ए० बी० एड० श्रीमती प्रभावती जैन, शान्ति शर्मा, पुष्पा मेहता, मीना कोचर रमा सक्सेना, सुरजीत भजवानी, श्रीमती ऊषा जैन, कु० ईथल विक्टर, जयश्री जैन, मनजीत कौर, तारा कोछल, श्री वसंती मलैया, रामलली शर्मा, कु० रजनी भाकरे, कु० सुरेन्द्र किन्डा कु० कांचन भागवत। और हेमलता श्रीवास्तव संस्था इन सबकी आभारी है। किन्हीं कारणों से इन अध्यापिकाओं ने त्याग पत्र देकर अपनी सेवायें देना बंद कर दी है फिर भी समय समय पर उनके सुझावों के लिये संस्था आभारी रहेगी।

इसके अतिरिक्त श्री आर. सी. जैन भागचंद लोधी एवं महेश प्रसाद बुधोलिया भी क्लर्क पद पर कार्य कर चुके है। संस्था उनकी भी आभारी है।

वर्तमान स्टाफ:—वर्तमान में जो स्टाफ कार्यरत है उसकी सूची पत्रिका में होने से उल्लेख नहीं कर रहा हूँ।

समस्त स्टाफ योग्य अनुभवी, कर्मठ, अनुशासनप्रिय, एवं चरित्रवान है। अपवाद स्वरूप एकाद्य मामले को छोड़कर आज तक कोई भी शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। प्राचार्य श्रीमती हरवंश डाँगे अनुभवी व योग्य है। समस्त साथी शिक्षकाओं से मृदु व्यवहार से अधिक से अधिक कार्य लेती हुई प्रशंसा प्राप्त करती हैं। सिद्धांत एवं अनुशासन के मामलों में किसी भी प्रकार झुकने को तैयार नहीं होती हैं। श्रीमती स्टेनली भी स्टाफ में सीनियर है पर उन्हें भी घमंड का नामों निशान नहीं है। वर्ष १९८२ का वार्षिक हैं रिजल्ट कक्षा ८ वीं का निकाला। श्रीमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्टैनली एवं उनके आधीन स्टाफ की मेहनत रंग लाई एवं ५२ छात्राओं में से १ मेरिट लिस्ट ४१ प्रथम श्रेणी, १० द्वितीय श्रेणी १ पूरक ४१ में से ३० को विशेष योग्यता जिनमें ६ को सभी विषयों में डिस्ट्रिक्शन प्राप्त हुआ। हृदय को काफी संतोष हुआ और गर्व का अनुभव हुआ स्कूल जाकर जब श्रीमती स्टेनली को बधाई दी तो बड़ेनम्र भाव से बोली कि एक छात्रा को पूरक बीमारी के कारण आई इससे खुशी नहीं हो रही है। (यद्यपि वह बालिका पूरक परीक्षा में बाद में पास हो गई।) मैं और भी अकेली क्या कर सकती सभी सहयोगियों के प्रयास से ही रिजल्ट बनता है। मेरा हृदय गद्गदायमान हो गया कि इतनी प्रगति को भी किस नम्रभाव से स्टाफ कहता है

छात्रवृत्तिः—प्रतिवर्ष शाला की ८ वीं कक्षा में प्रथम आने वाली छात्रा को ९ वीं एवं ११ वीं में पढ़ाई हेतु योग्यता छात्रवृत्ति २५०।-वार्षिक प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त पिछड़े वर्ग की छात्राओं को छात्रवृत्ति मिलती है। वर्ष १९८२-८३ में ११६५५।छात्रवृत्ति का वितरण शासन द्वारा किया गया। वर्ष ८३-८४ में भी ९५ छात्राओं को २५०५६) स्वीकृत हुई है। वर्ष १९८४-८५ हेतु ४००००) छात्रवृत्ति हेतु स्वीकृत होने की आशा है।

खेलकूदः-उ० मा० वि० की छात्राओं ने खेलकूद प्रतियोगिता वर्ष १९८३ में भाग लिया जिला स्तरीय प्रतियोगिता में देवरी खेलने गई। जहाँ से दो छात्राओं कु० संध्या जैन तथा कु० राजकुमारी जैन का चयन संभागीय स्तर टीकमगढ़ पर किया गया, जहां इन्होंने कबड्डी खेल का संतोषजनक प्रदर्शन किया।

पूर्व माध्य. कन्या शाला की छात्रायें प्रत्येक वर्ष के समान इस वर्ष भी तहसील स्तर, जिला स्तर तथा संभागीय स्तर पर निम्नानुसार खेलने गई तथा छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया।

तहसील स्तर प्रतियोगिता:—

१६ छात्राओं ने भाग लिया :

(१) अंजुली खरे १०० मीटर दौड़ में द्वितीय आयी

(२) रश्मि श्रीवास्तव २०० मी० दौड़ में द्वितीय आयी

(३) तरुणा तवा फेंक में प्रथम आयी

(४) खो-खो में ६ छात्राओं ने भाग लिया।

(५) कबड्डी में ७ छात्राओं ने भाग लिया।

जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिये चुनी गयी छात्राओं के नाम:—

(१) तरूणा गोला फेंक

(२) रश्मि श्रीवास्तव खो-खो

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि श्री नाभिनंदन दिग० जैन हितो. सभा:बीना के स्थापना की स्वर्ण जयन्ति पर जैन कन्या शाला बीना "बीण" नाम से अपनी शाला-पत्रिका प्रकाशित कर रही है। "माँ" सरस्वती की "बीणा" का स्वर चहूँ ओर दिग्दिगन्त में फैल कर नारी-जाति को प्रबुद्ध, विवेकशील, कर्मठ व योग्य बनाये, जो घर परिवार समाज तथा राष्ट्र के नवनिर्माण में अपनी महं भूमिका का निर्वाह करे। यह कन्याशाला प्रगति पथ पर दिनोंदिन अग्रसर हो-ऐसी हार्दिक सद्भावना के साथ विराम लेता हूँ।

विमलकुमार सराफ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"शुभ सम्मतियां

"विद्यालय का जो नया भवन बना, बहुत सुन्दर है, उसमें कन्याओं के लिये काफी सुविधा है। कन्या विद्यालय की प्राचार्या के कार्य कुशल एवं प्रशंसनीय है।

—श्री अरविन्द भाई पटेल
विधायक बीना क्षेत्र
अध्यक्ष—आयात एवं निर्यात निगम

"संस्था प्रगतिशील है तथा संस्थापकगण इसको बहुत अच्छे स्तर पर चलाना चाहते हैं सभी बहुत उत्साही है। मै संस्था की प्रगति की कामना करता हूं।

—श्री मनमोहन
जिला शिक्षा अधिकारी, सागर

"मै विद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामना करता हुआ संचालक तथा शिक्षक वर्ग की निष्ठा को प्रणाम करता हूं।

—डॉ० नरेन्द्रप्रकाश, प्राचार्य-इन्टर कालेज
फीरोजाबाद,

"शाला का प्रबन्ध उत्तम पाया गया प्राचार्या हरवंश डांगे"भी प्रत्येक कार्य लगन एवं रूचि से करती हैं।"

—श्रीमती गार्गी गुप्ता
प्राचार्या रानी दुर्गावती
शा. कन्या उच्च मा.
विद्यालय गढ़ा (जबलपुर)

"श्रीमान् संभागीय शिक्षण।अधीक्षक सागर द्वारा नियुक्त अधिकारी की रिपोर्ट संक्षेप में—

उपस्थिति	—संतोषप्रद
अनुशासन	—संतोषप्रद एवं शिक्षिकायें तथा छात्राओं का व्यवहार शिष्ठ पाया
शिक्षण	—संतोषप्रद पाया
व्यायाम	—प्रतिदिन सांयकाल के समय कराया जाता है
लेखाजोखा	—हिसाब ठीक से रखा जाता है।
परीक्षाफल	—संतोषप्रद है, प्रतिशत बढ़ावे।
विशेष	—भविष्य में विद्यालय की उन्नति निश्चित है, क्योंकि प्राचार्य एवं मैनेजमेन्ट दोनों विद्यालय से सभी कार्यों में पूर्ण रूचि रखते हैं।

—श्री एस. सी. तिवारी
प्राचार्य—शा. उ. मा. वि. बीना क्र. २

दिगम्बर जैन समाज ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम अत्यन्त सराहनीय रहा, तथा इस ट्रस्ट के माध्यम से मानवता की जो सेवा की जा रही है, वह अनुकरणीय है।

—सुरेश पचौरी
सांसद एवं
अध्यक्ष—म. प्र. युवक कांग्रेस (इं)

दिनांक
१६-१-८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय-खण्ड

स्वर्ण जयन्ती परिशिष्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का प्रवेश द्वार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4513

मंगलाचरणम्

अम्भोजनेत्रं हरितोरुगात्रं
दयाकलत्रं वरशक्तिपात्रं ।
भव्याब्जमित्रं भुवने पवित्रं
नाभेयपादं प्रणमामिनित्यम् ।।

आदिनाथ स्तुति

जय-२ श्री आदि जिन, तुम हो तारण तरण, भविजन प्यारे,
गुण गण गाएँ सभी मिल तुम्हारे ।।टेक।।

प्रभु तुम सवार्थ-सिद्धि से आये, माता मरु देवी के सुत कहाए
नाभि नृप के नंदन, तुमको शत-२ वंदन, हो हमारे । गुण गण गायें सभी मिल०

कर्म-युग के प्रथम तुम विधाता, लोक-हित मार्ग के आदि ज्ञाता
अरु अक्षर कला, प्रगटी तुमसे प्रभु, शिल्प सारे । गुण गण गायें सभी मिल तुम्हारे

देख नीलांजना के निधन को, दाज छोड़ा, गये देव बन को
योग साधा कठिन, कर्म-बन्धन गहन, तोड़ डाले । गुण गण गायें सभी मिल तुम्हारे

सिद्ध परमात्म पद पा गये तुम, शंभु, ब्रह्मा, जिनेश्वर हुए तुम ।
सिर नवाते हुए, गुण-गण गाते हुए, गणधर हारे । गुण गण गायें सभी मिल तुम्हारे ।

नाथ अपनी चरण-भक्ति, दीजै, आत्म-गुण-सिन्धु में मग्न कीजै ।
छीजें आवागमन, शिवपुर में हो गमन, कर्म झारे । गुण गण गायें सभी मिल तुम्हारे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशीर्वाद

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बीना जैन समाज फरवरी ८५ में श्री ना० नं० दि० जैन हितोपदेशिनी सभा की स्वर्ण जयन्ती के साथ श्री कलशा-रोहण समारोह का भव्य आयोजन कर रही है और स्मारिका भी प्रकाशित कर रही है। बीना नगर की धर्मप्राण जनता एवं उत्साही सभी युवा कार्य-कर्ताओं के लिए मेरा शुभाशीर्वाद है। आपके सभी आयोजन सफल व प्रभावी हों तथा समाज एवं राष्ट्र के चरित्र के उन्नायक तथा प्रेरक बनें। ऐसी मेरी कामना है।

क्षु० सन्मति सागर

विजय कुमार पाटनी
राज्य मंत्री
ऊर्जा, नर्मदा घाटी विकास
मध्यप्रदेश

दूरभाषक क्र, ७४३८५, ७३२८२
३, सिविल लाइन, भोपाल

दिनांक..................

प्रिय श्री सराफ

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन हितोपदेशिनी सभा की स्थापना के ५० वर्ष पूर्ण होने पर शालेय पत्रिका "वीणा" का विशेषांक निकालने जा रहे हैं। दिगम्बर जैन हितोपदेशिनी सभा द्वारा किया जा रहा शिक्षा प्रसार का कार्य सर्वविदित एवं सराहनीय है। आयोजन अपने उद्देश्यों में पूर्ण सफल हो ऐसी कामना है।

शुभकामनाओं सहित

आपका
(विजय कुमार पाटनी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चैनरूप जी बाकलीवाल
अध्यक्ष—श्री भारतवर्षीय दि. जैन
महासभा—(पूर्वांचल समिति)

बाकलीवाल मोटर्स
डीमापुर]७६७११२[
नागालैण्ड

दिनांक..........................

समस्त धार्मिक समारोह फसल सम्पन्न हो एवं इन मांगलिक कार्यों से धर्म की प्रभावना हो—यही कामना करता हूँ। सामाजिक संगठनों की आज अत्यन्त आवश्यकता है। आपकी सभा की स्वर्ण-जयन्ती इसका ज्वलन्त उदाहरण है—आप सबको हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं से

आपका
चैनरूप बाकलीवाल

श्री पति जैन
अजमेर

अजमेर ३०५००२
दिनांक..................

प्रिय मंत्री जी महोदय,

सादर जय जिनेन्द्र।

आप श्री माभिनन्दन दिगम्बर जैन हितोपदेशिनी सभा बीना का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समायोजित कर रहे हैं। यह निश्चय ही गौरव-वृत्त है। किसी संस्था के जीवल काल के ५० वर्ष गरिमापूर्वक व्यतीत हो और संघ वह सतत् गतिशील हो, इसके कार्य-कर्ताओं एवं पदाधिकारी भी वस्तुतः साधुवाद के पात्र हैं। कृपया मेरी बधाई एवं सतत् उत्कर्ष के मंगल-शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

भवदीय
श्री पति जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्या-वारिधि

डा० महेन्द्र सागर प्रचंडिया,

एम.ए., पी-एच. डी., डी. लिट्.
जैन शोध अकादमी,
संचालक—

वरिष्ठ प्रवक्ता एवं शोध-निर्देशक-श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़

टेलीफोन ६४८६

मंगल-कलश
३६४ सर्वोदय नगर,
आगरा रोड, अलीगढ़
(उ० प्र०) २०२००१

दिनांक..................

प्रिय भाई

कृपा पत्र और निमंत्रण मिला कृतज्ञ हूँ।

'इस अवसर पर आप एक स्मारिका का प्रकाशन भी करने जा रहे हैं। वस्तुतः बड़ी बात है। स्मारिका के माध्यम से स्मरण कर-कर विगत में किये गये सभी सेवा-कार्यों और उन सभी उपलब्धियों का उल्लेख किया जाता है जिनसे जन-कल्याण का शुभ निमित्त जुटा करता है। आपके मन्त्रित्व में सभा के तत्वावधान में महती सेवाएँ सम्पन्न हुई हैं। ऐसी सभाएं देश-प्रदेश में उठे, खड़ीं हों और एक से एक अगाड़ी बढ़े। आपसे मेरा अनुरोध है कृपया इस अवसर पर मेरी बहुतशः बधाइयां स्वीकार कीजिए।

विनीत
प्रचंडिया

स० सिं० धन्यकुमार जैन

श्री महावीर कीर्ति स्तम्भ
नेहरू पार्क कटनी (म० प्र०)
पिन कोड—४८३५०१

दिनांक..................

माननीय प्रियवर श्री विमलकुमार जी सराफ

सादर जयजिनेन्द्र

श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन हितोपदेशनी सभा बीना की स्वर्ण जयंती मनाये जाने का सम्वाद ज्ञात कर प्रसन्नता हुई। यह सभा उत्तरोत्तर जनकल्याण के कार्य में अग्रणी रहे—यह मेरी मंगल कामना है।

दि० जैन मन्दिर के स्वर्ण कलशारोहण का भी पुण्यशाली समायोजन है। जैन धर्म की अभिवृद्धि में नितनूतन प्रचार प्रसार हो—यह मेरी आन्तरिक भावना है। यह आयोजन उद्देश्य के अनुरूप सफलता के चरण चुम्बत करें।

अपनी शुभकामनाओं सहित

आपका
धन्यकुमार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"चारित्तं खलु धम्मो"

डा० प्रो० सुपार्श्व कुमार जैन
उपाध्यक्ष
अ०भा०दिग० जैन शास्त्रि परिषद्

अर्थशास्त्र विभाग
दिगम्बर जैन कालेज
बड़ौत–२५०६११ (मेरठ)

दिनांक.......................

सेवा में,

श्री विमल कुमार सराफ,
मंत्री–श्री ना०नं० दिग० जैन हितोपदेशिनी सभा,
बीना : म० प्र०

महोदय,

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि श्री ना० नं० दिग० जैन हितोपदेशिनी सभा ने अपनी स्थापना की स्वर्ण-जयन्ती के शुभावसर पर श्री ना० नं० दिगम्बर जैन मन्दिर पर स्वर्ण-कलशा-रोहण का एवं एक स्मारिका प्रकाशित करने का अभूतपूर्व निर्णय किया है, आपका यह कार्य जैनधर्म की प्रभावना की दृष्टि से निःसन्देह अत्यन्त स्तुत्य है।

बीना के इतिहास में यह दिन स्वर्णाक्षरों से लिखा जायेगा और युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा। दोनों कार्यों की सफलता के प्रति कृपया मेरी हार्दिक शुभ-कामनाएँ स्वीकार करें।

आपका
डा० सुपार्श्व कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प० मोतीलाल जैन, एम०ए० साहित्याचार्य
प्राचार्य-श्री ना० नं० दि० जैन सं० विद्यालय
बीना-इटावा

बीना-इटावा
१०. १. ८५

शुभ कामना

श्रियं क्रियाद्यस्य सुरागमे नटत्सुरेन्द्र नेत्रप्रतिविम्ब लाञ्छिता।
सभा बभौ रत्नमयी महोत्पलैः कृतोपहारेव सवोऽग्रिमोजिनः ॥

अर्थ – प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (नाभिनन्दन) तुम सबको कल्याण सम्पत्ति प्रदान करें। इस युग में सबसे पहिले अवतरित होने से वे अग्रज अर्थात् आदि पुरुष कहे जाते हैं। उन्हें जब केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई तब समस्त इन्द्रों ने उत्सव मनाया था। उन्होंने देवों की उपस्थिति में उक्त ऋषभदेव सामने सभा (समवसरण) में नृत्य किया था। सभा की भूमि रत्नजड़ित थी अतः वहां इन्द्रों के नेत्रों की छाया पड़ने से ऐसा लगता था मानो वह सभा उन ऋषभदेव (नाभिनन्दन) के लिये स्वयं नील कमलों का उपहार भेंट कर रही हो।

सो भगवान के नाम से चिन्हित श्री नाभिनन्दन दि० जैन हितोपदेशिनी सभा की स्वर्ण जयन्ती की शुभ बेला मेमैं वियोग से इसकी शुभकामना करता हूं। और आशा करता हूं कि यह अपने नाम को यथा नाम तथा गुण के रूप को अनन्तकाल तक प्रकाशित करतं। रहेगी।

मोतीलाल एम० ए० साहित्याचार्य
बीना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० दयाचन्द्र जैन साहित्याचार्य
प्राचार्य
श्री गणेश दि० जैन संस्कृत महाविद्यालय
सागर म० प्र०

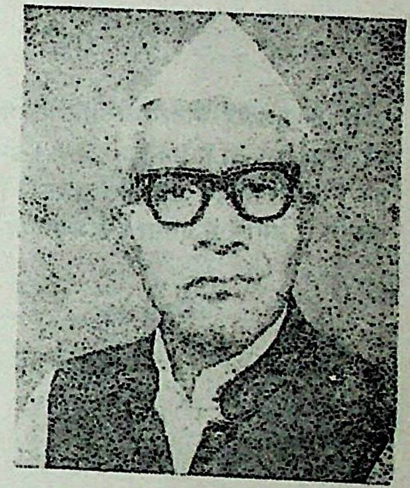

—: त्रैकालिक मंगल-कामना :—

विश्व में माता का पद पिता की अपेक्षा ऊंचा माना जाता है उदाहरण के लिये 'सीताराम' इस पवित्र शब्द में सीता का नम्बर प्रथम है इसी प्रकार 'राधेश्याम' इस शब्द में राधा का प्रथम स्थान है; व्याकरण में भी पिता माता का जब समास होता है तब माता पिता शब्द सिद्ध होता है जो विश्व में प्रसिद्ध है। माता की जयन्ती मनुष्य को मनाना ही चाहिये। प्रकृत में एक ऐसी माता भी है जिसका जन्म, वीणा की तरह कलकल ध्वनि करती हुई वीणा नदी के निकट हुआ था, उस वीणा नदी को बीना तथा निकटवर्ती नगर को भी बीना कहने लगे हैं। जिस माता ने संस्कृत विद्यालय के माध्यम से अनेक विद्वान तथा विद्यार्थी, मन्दिर के माध्यम से अनेक धर्मात्मा, समाज संगठन के माध्यम से अनेक सेवाभावी युवक उत्पन्न किये हैं। जो वर्तमान में अनेक संस्थाओं एवं समाज का संरक्षण कर रही है और भविष्य में भी संरक्षण करना उसका कर्तव्य होगा। उसी पवित्र माता की आज स्वर्ण जयन्ती, जैनमन्दिर पर स्वर्ण कलशारोहण के साथ, समारोह से मनाई जा रही है। उस माता का प्रसिद्ध नाम है "श्रीनाभिनन्दन दि० जैन हितोपदेशिनी सभा"। इस माता की समृद्धि और दीर्घायु के लिये हम त्रैकालिक मंगलकामना करते हैं।

—दयाचन्द्र साहित्याचार्य–प्राचार्य
श्री गणेश दि० जैन संस्कृत महाविद्यालय सागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डा० कोमल चन्द्र जैन
एम० ए०, पी-एचडी०, आचार्य (जैन दर्शन, प्राकृत)
प्राध्यापक-पालि, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

१३३।१३४ ए रवीन्द्रपुरी
वाराणसी-२२१००५
दिनांक ... ४. १. ८५

शुभ कामना

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन हितोपदेशिनी सभा अपनी स्थापना की स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रही है। इस सभा ने मन्दिर, विद्यालय, कन्याशाला, वाचनालय आदि के माध्यम से अभी तक समाज को प्रबुद्ध किया है। आशा है कि भविष्य में भी यह सभा समाज को उन्नति के पथ पर ले जायेगी तथा इसके माध्यम से समाज में एकता एवं अखण्डता पनपेगी।

—कोमल चन्द्र जैन

डा० पन्ना लाल साहित्याचार्य

कटरा बाजार
सागर (म० प्र०)

श्री नाभिनन्दन दि० जैन हितोपदेशनी सभा अपनी स्थापना की स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रही है। यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है। समारोह की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकायनाएं स्वीकार करें। स्वर्ण जयन्ती स्मारिका के प्रकाशन के लिये भी मेरी हार्निक शुभकामनाएँ ।

भवदीय
पन्नालाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैद्य कल्याण कुमार जैन 'शशि'

रजि० मेडिकल प्रैक्टिसनर
बाजार नसरुल्ला खाँ, रामपुर यू० पी

३०. १२. ८४.

आदरणीय

आमंत्रण पत्र मिला अत्यन्त आभारी हूँ। स्वर्ण स्मारिका की रूपरेखा भेजें उसके अनुरूप ही रचना भेजी जायेगी।

श्री नाभिनन्दन महोत्सव में सम्पूर्ण सफलता प्राप्त होने की मंगल कामना स्वीकार करें।
नव वर्ष शुभ कामना सहित।

विनीत
शशि

ब्र० भुवनेन्द्र कुमार शास्त्री

बांदरी

शुभ कामना

महा आनन्द का विषय है कि श्री नाभिनन्दन दि० जैन हितोपदेशिनी सभा बीना इटावा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का शुभ अवसर आ गया है और उसकी सुन्दर योजना भी तैयार हो रही है। यह संस्था करीब ८१ वर्ष से निरन्तर समाज सेवा के साथ-साथ जैन धर्म की प्रभावना, जैन धर्म एवं लौकिक शिक्षा का प्रचार प्रसार, राष्ट्र सेवा चारों दान देकर समाज की स्थिति करण आदि आदि महान कार्य कर रही है।

इस महती संस्था की एक सुव्यवस्थित विशेषता यह भी है कि आर्थिक दृष्टि से यह संस्था स्वतन्त्र और स्वाधीन है। इसका कारण बीना समाज का मनसा वाचा कर्मणा वर्धमान पुरुषार्थ है।

समाज की सर्वमुखी सेवा करने वाली इस संस्था के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर मेरी सहस्त्र २ शुभकामनाएं हैं। जब तक सूर्य चन्द का प्रकाश है तब तक यहाँ चिरंजीवी अमर होकर समाज की सदा सेवा किया करें—इस शुभ कामना के साथ मैं समारोह की पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

—ब्र० भुवनेन्द्र कुमार शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डा० रमेश चन्द जैन, एम० ए०, पी०एच० डी०, डी० लिट०

प्राध्यापक–श्री बर्द्धमान डिग्री कालेज, बिजनौर (उ० प्र०) ६. १. ८५

श्री विमल कुमार जी

सप्रेम जयवीर

आपका पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद। स्वर्ण जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रमों की सफलता हेतु मेरी शुभकामनायें हैं। भगवान वीतराग की वाणी हितोपदेशिनी सभा के द्वारा जन जन में फैले यही मेरी मङ्गल कामना है।

—रमेशचन्द जैन

पं० रमेश चन्द्र शास्त्री खुरई

शुभ कामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आप श्री नाभिनन्दन दि० जैन हितोपदेशिनी सभा बीना इटावा (जिला सागर) की स्थापना की स्वर्ण जयन्ति मनाने के स्वर्णावसर पर एक वृहद स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं। स्मारिकाओं के माध्यम से ऐतहासिक सामाजिक एवं धार्मिक तथ्य प्रगट होते हैं जो समाज की भावी पीढ़ी के लिये मार्ग दर्शन करने में सहायक होते हैं। स्मारिका मानव मात्र को उपयोगी सिद्ध हो- ऐसी कामना करता हूँ तथा आपके इस शुभ कार्य की सराहना करता हूँ।

शुभेच्छु

—पं० रमेशचन्द्र जैन

खुरई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० अमृत लाल शास्त्री
एम० ए०, साहित्यजैन दर्शनाचार्य

ब्राह्मी विद्यापीठ
लाडनूं (राजस्थान)

दि० ७. १. ८५.

श्रीमान् मन्त्री जी
श्री नाभिनन्दन दि० जैन हितोपदेशिनी सभा, बीना

सादर सयजिनेन्द्र

यह जान कर हर्ष हुआ कि दि० १४-२-८५ से श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन हितोपदेशिनी सभा की स्थापना की स्वर्ण जयन्ती मनायी जा रही है, दि० १८-२-८५ को श्रीनाभिनन्दन दिगम्बर जैन मन्दिर के शिखर पर स्वर्ण कलश चढ़ाया जायेगा और स्वर्ण जयन्ती स्मारिका का विमोचन भी होगा।

प्रस्तुत सभा पचास वर्षों से काम करती आ रही है–यह प्रसन्नता की बात है। इसी तरह यह आगे भी काम करती रहे–यह मेरी हार्दिक शुभ कामना है। आपसी मतभेद के कारण हमारे दिगम्बर जैन समाज में संघठन प्रबल नहीं हो पाता। इस सभा के माध्यम से बीना के दिगम्बर जैन समाज का आदर्श संघठन होना चाहिए।

आपका
—अमृत लाल शास्त्री

सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उद्बोधन

—आ० विद्यासागर जी महाराज

'सामाजिक कार्यकर्ता यदि विवाद से बचना चाहता है तो उसे घोड़े की तरह अपने मुंह में लगाम लगाना अर्थात् जुबान पर कन्ट्रोल रखना चाहिए तथा ऐसा मुखौटा धारण करना चाहिए जिससे उसके दोनों कान व मुंह ढके रहें और सिर्फ आंखें खुली रहें जिससे वह अपने लक्ष्य को सामने देख सके और उसकी पूर्ति हेतु सचेष्ट रह सके। उसे बोलना और सोना मना है तो अपने लक्ष्य और कर्तव्य पर ही ध्यान रख उसे पूरा करने का सतत प्रयत्न करना चाहिए'।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्ण जयंती — ८५

सन पच्चासी फरवरी वार सोम परभात ।
स्वर्ण जयन्ती सभा की सजी आज विख्यात ।।
सजी आज विख्यात सभी ने हर्ष मनायो ।
विधि विधान से पूजा रचकर कलश चढ़ायो ।
रथ विमान में बिठा प्रभु को नगर घुमायो ।
जन-जन में अति हर्ष बढ़ाकर दरश करायो ।। १

मेला लगा अपार हुए हर्षित नर-नारी ।
सरस धरममय सजी सुन्दरी नगरी सारी ।।
सब समाज ने प्रमुदित हो गज-रथ चलवाये ।
ढोल, मृदंग, मजीर, घण्ट-झालर बजवाये ।।
जगह जगह के सुजन दरश कर नहीं अघाये ।
नगर मार्ग अरु डगर डगर में नहीं समाये ।।

कु० सुधा जैन
शिक्षिका
श्री ना० नं० दि० जैन सं० विद्यालय
बीना

सभासद — हितोपदेशिनी सभा

बिमल-कमल-सन्मत-अभय नाथूराम महान् ।
खेमचन्द औ सुरेशजी मूलचन्द मतिमान ।। १ ।

काका प्यारेलाल जी अरु राजेन्द्र सुजान ।
श्रीकुमार सन्तोष जी अरु अशोक कप्तान ।। २ ।।

श्री नवीन संजीव जी पंडित भैयालाल ।
भैया लखमीचन्द जी श्रीपति मोहनलाल ।। ३ ।।

प्रेम-राज श्रीकृष्ण जी अरु रमेश जी भाई ।
नन्ना फूल प्रकाश जी बनी सभा सुखदाई ।। ४ ।।

—संजीव कुमार शास्त्री, बीना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हितोपदेशिनी सभाष्टक

सोरठा

श्री राजेन्द्र कुमार सभापति इस संस्था के
कीने विविध प्रकार कठिन कार्य जिनधर्म के ॥ १ ॥

भैया राजकुमार सिंघइ शब्द आगे लसत ।
करते कार्य विचार सभी विसम सम समय में । ॥ २ ॥

वैसे धनी उदार गरज नही पद लाभ की ।
उपाध्यक्ष पद धार करते परहित शक्ति भर ॥ ३ ॥

सरसिज पदके साथ नाम कुमार महासुभग ।
करते सभा सनाथ दूजे उप अध्यक्ष बन ॥ ४ ॥

श्रीमद्विमलकुमार धनी खूब सदबूद्धि के ।
मंत्री पद को धार पद से भी ऊँचे भये ॥ ५ ॥

इनके कार्यकलाप जैन जाति हित में घुले ।
बोलें अपने आप बिना किसी के कहे ही ॥ ६ ॥

सन्मत सन्मति छाप नहीं किसी के अहितकर ।
जाने जाते आप मंत्री में उपपद सहित ॥ ७ ॥

इन सब को ले साथ रही सभा उपदेशनी ।
आदीश्वर जिन नाथ शब्द मनोहर पूर्व में ॥ ८ ॥

— मोतीलाल साहित्याचार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राष्ट्रोन्नयन में सामाजिक संस्थाओं।संगठनों का योगदान

अभय कुमार जैन, शास्त्री, व्याख्याता

—किसी भी देश के सर्वतोमुखी विकास में सामाजिक संगठनों एवं सस्थाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। भारत जैसे विशाल देश में तो इनका दायित्व और भी है जहाँ साक्षरता का प्रतिशत अन्य प्रगतिशील देशों की अपेक्षा कम है और समाज में घातक तथा दूषित प्रवृत्तियाँ अधिक व्याप्त हैं। यहाँ करोड़ों लोगों के उन्नयन का तथा उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण दायित्व इन्हीं स्वयं सेवी सामाजिक संस्थाओं और संगटनों का है।

—राष्ट्रहित में इन संस्थाओं का अधिकाधिक योगदान तभी संभव है जबकि ये अपने सीमित एवं संकुचित दायरे से निकलकर राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ें, व्यापक दृष्टिकोण अपनायें तथा लोकहित के कार्यों को सम्पन्न करें। अपने उद्देश्यों को राष्ट्रीय मुख्यधारा तथा जनहित से जोड़ें।

—अपनी शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से ये संस्थायें जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय तथा भाषागत विभेदों को दूर कर देश के सच्चे आदर्श नागरिक बनने, आपस में सहयोग एवं भाई-चारे की भावना बढ़ाने तथा पारस्परिक प्रेम, सौहार्द्र, सहयोग एवं सहानुभूति की सद्‌भावनाओं को जाग्रत करने का कार्यक्रम राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के विकास में अहं भूमिका निभा सकती हैं। प्राणिमात्र के प्रति करुणाभाव एवं आत्मीयता के भाव जाग्रत कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना पैदा कर सकती हैं। अशिक्षा, कुशिक्षा और सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती हैं।

—राष्ट्र के अमर शहीदों और वीरों की गौरव-गाथाओं, प्रभावी महापुरुषों और सन्त महात्माओं के आदर्शों सिद्धान्तों के माध्यम से नागरिकों में देशभक्ति और देश-प्रेम की भावनाओं को बलवती बना सकती हैं। देश के समृद्धशाली अतीत और प्रगति की ओर अग्रसर वर्तमान की उपलब्धियों की जानकारी देकर उनमें राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना को पुष्ट कर सकती हैं।

—विपदा एवं संकट के समय सेवा, सहयोग एवं सहानुभूति द्वारा आपस में आत्मीयता एवं भाई चारे को बढ़ावा दे सकती हैं। औषधालय, अस्पताल, प्रसूतिकागृह जैसी लोकहित की व्यवस्थाएं कर राष्ट्र के विकास में सहयोगी बन सकती हैं।

—वाचनालय, पुस्तकालय, सत्साहित्य का प्रकाशन और प्रचार-प्रसार, भाषण, वाद-विवाद एवं विचार संगोष्ठियों के माध्यम से प्रबुद्ध एवं शिक्षित वर्ग में सद्‌विचारों और सही सूझबूझ को बढ़ावा दे सकती हैं। खेल-कूद की समुचित व्यवस्थाएँ और स्वस्थ स्पर्धाएँ सम्पन्न कर युवा-वर्ग के स्वास्थ्य विकास में सहयोगी बन सकती हैं।

—आर्थिक दृष्टि से सबल और साधन-सम्पन्न संस्थाएं तो और भी व्यापक तथा बड़ी लोककल्याण तथा समाजोत्थान की योजनाएं हाथ में लेकर देश के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

—स्थानीय आवश्यकताओं और समस्याओं से सुपरिचित ये स्थानीय सामाजिक संस्थाएं स्थानीय लोगों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जरूरतों की पूर्ति और समस्याओं का निदान सहज व आसान तरीके से कर सकती हैं और स्थानीय लोगों को लाभ पहुँचा सकती हैं।

—देश भर में फैली ये संस्थाएँ यदि अपनी-अपनी सामर्थ्य और उद्देश्यों के अनुरूप अपने-अपने क्षेत्रों में समाज एवं लोकहित के कार्य करें, नागरिकों को आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा और शिक्षा देवें, देशभक्ति-देशप्रेम तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना जाग्रत करें, पारस्परिक एकता और सद्भाव को बढ़ाएँ तो समूचे राष्ट्र का स्वरूप ही बदल सकता है, राष्ट्र का चरित्र ऊँचा हो सकता है और भविष्य उज्ज्वल बन सकता है तथा हम अतीत के गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

—श्री ना० न० दि० जैन हितों सभा ने समाज एवं देश के लिए उपयोगी कार्य किए हैं और कर रही है आगे भी यह देशकाल और परिस्थितियों के अनुकूल ऐसे भी कार्य करें जो सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास में सहायक हों। आयुर्वेद का शिक्षण, समृद्ध वाचनालय एवं पुस्तकालय, व्यायाम-शाला, संगीत एवं नाटक-मंडली, प्रसूतिकागृह, मुमुक्षु आश्रम, विशाल सभागार आर्थिक दृष्टि से गरीब और पिछड़े हुए लोगों को रोजगार हेतु आर्थिक सुविधाएँ आवास-सुविधाएँ, गरीब, विधवा एवं असहाय महिलाओं के जीवन-यापन के लिए उचित कार्यक्रम आदि सुविधानुसार क्षमतानुसार सम्पन्न कर सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति में सभी अपना योगदान दे। समाज के सभी घटकों को आपसी वैर-भाव भूलकर सामाजिक एव राष्ट्रीय विकास में एकजुट होकर लग जाना चाहिए– यही समय और देश की आज मांग है।

समाज एवं राष्ट्र के उत्थान की सभी योजनाएँ सफल हों—ऐसी मेरी हार्दिक शुभकामना है।

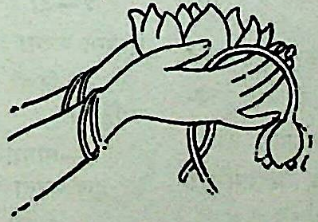

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज सेवी और उनके कर्तव्य

कु० सुधा जैन, आयुर्वेदरत्न, एम० ए० (फाइनल)
शिक्षिका—श्री ना० नं० सं० पूर्व मा०वि० बीना (इटावा

हमारा देश भारत एक विशाल राष्ट्र है जो दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातान्त्रिक देश है। इनमें नाना जाति, वर्ग, सम्प्रदाय व धर्मावलम्बियों तथा भाषा-भाषियों का निवास है परन्तु सभी में पारस्परिक सौहार्द, प्रेम, सदभाव, सहयोग एवं भाईचारे का सम्बन्ध है। सांस्कृतिक ऐक्य सभी में परिलक्षित होता है जो सारे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे हुए हैं। यह हम भारतीयों का बड़ा सौभाग्य है।

इतने विशाल देश में समाज सेवियों एवं सामाजिक संगठनों की कमी नहीं है। ये समाज-सेवी और सामाजिक संगठन अपनी-अपनी सेवाओं से देश के नागरिकों को उपकृत करते हुए देश की प्रगति और विकास में सहयोगी बनते हैं।

इतने विशाल देश के सर्वतोमुखी विकास हेतु सच्चे समाजसेवियों और आदर्श सामाजिक संगठनों की बड़ी आवश्यकता है। यदि समाज सेवी निःस्वार्थ सेवाभावी और समर्पण की भावना से कार्य करते हैं तो समाज लाभान्वित होता है और उन्नति करता है। तथा क्षुद्र स्वार्थों के वशीभूत हो जो सेवाभाव का दम्भ भरता है उससे समाज में विघटन व कटुता बढ़ती है।

अतः एक समाज सेवी को निःस्वार्थ, निष्पक्ष कर्मठ, लगनशील, सूझबूझ सम्पन्न, विवेकी, कर्तव्यपरायण, व्यवहार-कुशल, दूरदर्शी, विनम्र और सदाचारी होना चाहिए। ये उसके अमूल्य गुण हैं।

समाज हितार्थ कुछ सामाजिक संगठन भी होते हैं जो अपने निश्चित उद्देश्यों को लेकर चलते हैं। इन संगठनों में समाज के द्वारा चुने गये प्रतिनिधि होते हैं जो मिल-बैठकर सामाजिक प्रगति के विषय में विचार-विनिमय करते हैं, योजनाएँ बनाते हैं और उनकी क्रियान्विति करते हैं। इन सामाजिक प्रतिनिधियों को भी निःस्वार्थ सच्चरित्र, निष्ठावान और लगनशील होना जरूरी है तभी वे एकजुट होकर समाज-हित के कार्यों को सम्पन्न कर सकेंगे। एतदर्थ उन्हें—

१—निष्पक्ष व निःस्वार्थ होना चाहिए।

२—सभा की प्रत्येक बैठक में भाग लेना चाहिए।

३—अपने विचारों को स्पष्ट करना चाहिए।

४—अहितकारी नीतियों का विरोध करना चाहिए।

५—जो कार्य सौंपा गया हो उसे पूरी निष्ठा के साथ सम्पन्न करना चाहिए।

६—किसी की आलोचना या निन्दा नहीं करना चाहिए।

७—सामाजिक समस्याओं और उनके निदान पर विचार कर हल करना चाहिए।

८—किसी भी कार्यक्रम की भलीभाँति सोच-विचार के उपरान्त विधिवत क्रियान्वित करना चाहिए।

मुझे आशा है, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए यदि सभासद/समाजसेवी अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा और लगन के साथ करें तो निःसन्देह वे समाज और देश की प्रगति में अपना महान योगदान दे सकते हैं। वे सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर समाज में एकता, संगठन व सद्भाव बनाये रख सकते हैं। समाज तथा देश को सुसंगठित बना सकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

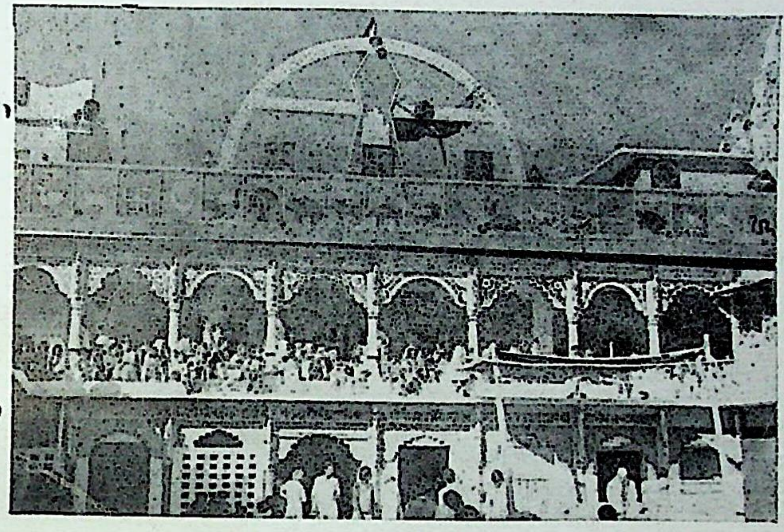

श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय के नव-निर्मित
भवन का दृश्य

संस्कृत विद्यालय के नये भवन का उद्‌घाटन करते हुए
श्री अरविन्द भाई पटैल विधायक बीना क्षेत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यक्ष की कलम से :-

यह बड़ी खुशी की बात है कि श्री ना०नं० दिग० जैन हितोपदेशिनी सभा के स्थापना काल से ५० वर्षों की अवधि पूर्ण होने पर उसकी स्वर्ण जयंती के अवसर पर शिक्षा प्रवन्ध समिति एक स्मारिका के रूप में शाला-पत्रिका प्रकाशित कर रही है। इसी अवसर पर श्री मन्दिर जी की शिखर का जीर्णोद्धार एवं कलशारोहण का कार्यक्रम भी विविध धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। यह विविध आयोजनों का सुघट संयोग हैं।

"सभा" ने शिक्षा प्रबन्ध समिति के अन्तर्गत विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं को जन्म देकर नगर के बालक-बालिकाओं को जो शिक्षण सुविधायें प्रदान की है तथा छात्र-छात्राओं में जो सद्ज्ञान नैतिकता तथा सच्चरित्र के संस्कार डाले हैं। एवं शैक्षणिक स्तर को अपेक्षाकृत उन्नत बनाया है उससे आप सभी सुपरिचित ही हैं। निःसन्देह देश के लिये योग्य, गुणवान, सच्चरित्र, निष्ठावान तथा आदर्शप्रतिभाशाली एवं सुयोग्य नागरिकों को तैयार कर ये सभी संस्थायें देश और समाज के विकास में अपना महान योगदान कर रही हैं।

इन शैक्षणिक संस्थाओं में ज्ञान के साथ-साथ खेलकुद, भाषण, वाद-विवाद साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये भी प्रोत्साहित किया जाता है। सदाचार एवं सद्व्यवहार की भी शिक्षा दी जाती है ताकि छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो और वे देश के सुयोग्य नागरिक बनें। यही कारण है कि यहाँ की छात्र-छात्राओं ने शिक्षा से खेल के साथ-साथ विभिन्न पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में भी कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

हितोपदेशिनी सभा देश की एवं युग की वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप अपनी सीमाओं के भीतर अपने अपने संसाधनों का उपयोग समाज एवं राष्ट्र के उत्थान हेतु करने के लिये सचेष्ट है। अपने उद्देश्यों की सम्पूर्ति हेतु सभा सतत प्रयत्नशील है।

अगस्त सन् १९७७ में बीना जैन समाज के आदेश से सर्वप्रथम मुझे हितोपदेशिनी सभा का सभासद होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सभासद होते ही समाज ने मेरे कन्धों पर सभापतित्व का गुरुतर भार डाल दिया जिसे वहन करने में मैं अपने आपको असमर्थ अनुभव करता था। परन्तु समाज प्रमुखों एवं बड़े-बूढ़ों के आदेशों की तथा समाज द्वारा निर्वाचित सदस्यों की भावनाओं का आदर करते हुए मैंने उक्त भार शिरोधार्य किया। मुझे बड़े-बूढ़ों का शुभाशीर्वाद, प्रेरणा तथा साथियों का सम्बल प्राप्त हुआ। और मैं जुट गया अपने कर्तव्य को पूरा करने में। फलतः सभी के सहयोग एवं प्रेरणा से सभा के अनेक महत्त्व-पूर्ण कार्य आसानी से पूर्ण होते गये। कतिपय ऐसे अपूर्व कार्य भी इसी के फलस्वरूप सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए जिनमें सन १९८१ में संस्कृत विद्यालय का. हीरक जयन्ती समारोह एवं स्मारिका का प्रकाशन उल्लेखनीय है।

नई धर्मशाला छात्रावास, भोजनालय एवं विद्यालय भवनों का निर्माण अन्य उल्लेखनीय कार्यों में से हैं।

यद्यपि कतिपय विघ्नसंतोषी व्यक्तियों ने विघ्नबाधायें खडी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, परन्तु श्री आदिनाथ प्रभु की अनुकम्पा, बड़े-बूढ़ों के शुभाशीर्वाद [समाज के सहयोग एवं साथियों के सम्बल से सभी कार्य सम्पन्न हो गये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन १९८३ के चुनाव के समय मैं उक्त उत्तरदायित्वों से मुक्त हो जाना चाहता था, परन्तु समाज ने पुनः चुनकर मुझे उक्त गुरुतर भार वाहन करने के लिए आदिष्ट किया। अतः १९८३ से पुनः मैं आप सभी की सेवा में हूं।

मेरे कार्यकाल में सभा, समाज एवं जनहित में जो भी कार्य सम्पन्न हुए है और हो रहे हैं। बीना नगर के नागरिक और विशेषतः जैन समाज उनका प्रत्यक्षदर्शी है। मैं उन सभी महानुभावों का, समाज का आभारी हूँ जिनके सहयोग एवं प्रेरणा से मैं अपने गुरुतर उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सका हूँ और कर रहा हूँ। श्री विमलकुमारजी सराफ जो इस ट्रस्ट के मंत्री है, को साभार धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ जो दिनरात एक कर सभा के कार्यों को संचालित कर रहे हैं। उनकी कर्तव्य-निष्ठा, लगन, और सूझबूझ के बूते पर ही ट्रस्ट के व्यापक कार्य यथासमय सम्पन्न होते हैं? उनका सेवा—भाव और योगदान सराहनीय है। उनके अथक प्रयास का ही फल है कि उच्च० माध्य० एवं पूर्व मा० कन्या शालाओं को शासन से १ लाख रुपया, वार्षिक, अनुदान प्राप्त हुआ है एवं हो रहा है जिससे समस्त शिक्षिकाओं एवं कर्मचारियों को शासकीय वेतनमान से वेतन प्राप्त हो रहा है। एवं सभा पर कोई १ पैसा का भी आर्थिक भार नहीं है।

मैं संस्था को अधिकाधिकसमाजोपयोगी और जनहितकारी बनाना चाहता हूँ। मेरा समाज से विनम्र अनुरोध है कि वे हमें अपने ऐसे सुझाव और योजनायें दें जिन्हें हम संस्था के माध्यम से लागू कर सकते हैं और जो सर्वसमाज के लिये उपयोगी तथा हितकर हों। आपके ऐसे सुझावों का स्वागत है।

यह संस्था समाज की एक धरोहर है। समाजहित और लोकहित करना इसका प्रमुख ध्येय है। इसे अधिकाधिक लोकोपयोगी बनाने में आप सबसे सहयोग, प्रेरणा व सम्बल की अपेक्षा है।

इसे संयोग कहा जाय या मेरा सौभाग्य जो मैं अपने ही कार्यकाल में विद्यालय की हीरक जयंती और सभा की स्वर्ण जयन्ती मनाने का अवसर प्राप्त कर रहा हूँ। सभा की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर शाला—पत्रिका प्रकाशन एक हर्ष का विषय है। इसके प्रकाशन से एक और जहां शालेय शिक्षा और शाला की गतिविधियों पर प्रकाश पड़ेगा साथ ही इससे नवीन प्रेरणा जागृति एवं दिशाबोध भी प्राप्त होगा। पत्रिका हेतु जिन्होंने अपनी शुभकामनायें, संस्मरण लेखादि प्रेषित किये हैं उनके हम आभारी हैं। साथ ही उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इसे तैयार करने में अपना योगदान दिया है।

— राजेन्द्रकुमार जैन
सभापति

श्री ना० नं० दि० जैन हितोपदेशनी सभा

बीना—८ जनवरी ८५ बीना इटावा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्मरण

श्री खेमचन्द खिया,
बीना

बीना जैन समाज का मेरे प्रति सद्भाव, प्रेम या विश्वास ही था और मेरा सौभाग्य ही था कि मुझे सभा के स्थापना—काल सन् १६३५ से लेकर अभी तक निरन्तर सभासद चुने जाने का तथा समाज सेवा का अवसर प्राप्त होता रहा। विगत ५० वर्षों में मैं प्रत्यक्ष तथा काफी नजदीकी से सभा के कार्यों को और उसकी गति—विधियों को देखता रहा हूँ। उनमें सहयोग भी करता रहा हूँ। समाज के प्रतिष्ठित और सम्पन्न व्यक्ति इस सभा के पदाधिकारी रहे और उन्होंने अपने-अपने अनुसार कानून और मर्यादाओं के भीतर सभा के कार्यों को संचालित किया और इसे आगे की ओर बढ़ाया। परन्तु मैंने अनुभव किया और देखा भी है कि सभा का बहु—आयामी विकास चतुर्मुखी उन्नति और इसके उद्देश्यों की पूर्ति जितनी विगत ४०-४५ वर्षों में नहीं हुई उतनी अभी हाल के ५-६ वर्षों में हुई है।

इसके कारणों और परिणामों पर विचार करते हुए मैं इन उत्कृष्ट पर पहुँचा हूँ कि पहलेसभा के पदाधिकारी बुजुर्ग,प्रौढ़ और परम्परावादी विचारों के रहे जो अपनी लीक से हटकर सभा के सर्वांगीण विकास हेतु एवं विस्तार हेतु सचेष्ट नहीं रहे। एक तरह से वे पुरातन परम्पराओं का ही निर्वाह करते रहे। युगानुकूल तथा समय की मांग के अनुसार कार्य करने की उन्होंने चेष्टा नहीं कि। परन्तु सभा के १६७७ के आठवें चुनाव में कुछ ऐसे समाज के नये प्रतिनिधि चुनकर सभा में आये तथा पदाधिकारी बने जिनमें युवाओं का प्रतिनिधित्व अधिक था जो उत्साही लगनशील होने के साथ-साथ आधुनिक विकासवादी और विस्तारवादी विचारों के थे। इनमें अनेक उच्च शिक्षा प्राप्त, अनुभवी, कर्मठ और लगनशील युवा थे। देश और समाज की आवश्यकताओं से सुपरिचित थे। उनमें कुछ करने की भावना थी। परिणामतः सभा का नेतृत्व समाज के एक सुयोग्य उदारवादी विनम्र युवक श्री राजेन्द्रकुमार जी को प्राप्त हुआ। वे सभा के सर्वसम्मति से सभापति १६७७ में चुने गये। उन्होंने अपनी युवा टीम के साथ समाज की भावनाओं को देखा परखा और सभा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बहु-आयामी कार्यों को हाथ में लिया। सौभाग्य से इन्हें अपने योग्य सहयोगी श्री विमलकुमार जी सराफ का साथ भी मिल गया। जो एक कानूनविद, अद्भुत सूझबूझ वाले, लगनशील, कर्मठ तथा समर्पण भाव से समाज सेवा में संलग्न रहते हैं। इन्होंने सभा के मन्त्रित्व के भार को बड़ी कुशलता दक्षता व बुद्धिमानी से वहन किया है और कर रहे हैं।

इन ४-५ वर्षों के भीतर सभा के उद्देश्यों की पूर्ति के के तहत जो उल्लेखनीय महत्वपूर्ण कार्य हुये हैं उनका संक्षिप्त दिग्दर्शन कराना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

शिक्षा के क्षेत्र में—(१) कन्या उ० मा० वि०, पूर्व मा० विद्या, प्राथमिक विद्यालय, शिशु मन्दिर की शुरूवाद कर उनका संचालन किया जाना तथा शासन से मान्यता प्राप्त कर उच्चतर एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों को करीब १ लाख रुपया वार्षिक अनुदान प्राप्त करना।

(२) संस्कृत विद्यालय में कक्षा ६ वी शुरूआत एवं म० प्र० शासन द्वारा मान्यता प्राप्त करना जो ८० वर्ष के कार्यकाल में भी प्राप्त नहीं थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) निर्माण कार्य—(१) छात्रावास, भोजनालय तथा विद्यालय भवन का तिमंजिला निर्माण (२) नई धर्म-शाला का निर्माण

उक्त निर्माण कार्यों में संस्था के मात्र ३ लाख रुपया बचत से इकट्ठे कर लगायें गये। धर्मशाला में १२ दुकाने बनी जिनसे आज बीस हजार रुपया साल की आय हो रही है। तथा नगर में वैवाहित आदि शुभ कार्यो की एक बहुत बड़ी जरूरत पूरी हुई।

३—आर्थिक—आर्थिक दृष्टि से भी इन हाल के वर्षो में सभा की आय कई गुना बढ़ी है। मेरे मोटे अनुमान के अनुसार जितनी बचत सभा ने विगत ४०-५० वर्षो में की है उससे कही ज्यादा इन ४-५ वर्षो में की गई है। यह भी अपने आप में एक विशेष उपलब्धि है।

४—धार्मिक—विगत ६-७ वर्षो में एक और विशेष उल्लेखनीय कार्य समाज में धार्मिक एव नैतिक जागरण का भी हुआ है। इसका श्रेय पूज्य श्री १०५ क्षु० सन्मति सागर जी महाराज द्वारा संस्थापित श्री स्याद्वाद शिक्षण परिषद को जाता है जिसका नेतृत्व युवा विद्वान श्री अभय-कुमार जी शास्त्री को प्राप्त है। परिषद के माध्यम से बीना नगर में अभी तक ६-७ छोटे बड़े शिक्षण-शिविरों का आयोजन हुआ। इससे बीना समाज की आवाल-बृद्ध नर नारियों में धार्मिक चेतना, अभिरुचि जागृत हुई उनमें नैति-कता बिकास हुआ और चारित्रिक दृढ़ता आयी फलतः यहां पूज्य साधु सन्तों मुनिवरों क्षुल्लकों, त्यागी व्रती ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी बहिनों का निरन्तर आना जाना हुआ।

युवा संत मूडवद्री के भट्टारक श्री चारूकीर्तिजी महा-राज का जहां दो बार शुभागमन हुआ।

आचार्यो मुनिवरों में पूज्य गुरुवर पुष्पदन्त, भूतबलिजी, क्षीरसागरजी महाराज छुल्लक श्री सन्मतिसागरजी, मणिभद्र सागर, श्री धवलसागरजी, श्री गुणसागरजी पूज्य श्री आचार्य श्री विद्यासागरजी; की शिष्या ब्रह्म-चारिणी बहिनों का आगमन क्षुल्लक श्री मणिभद्र-सागरजी एवं अनेकांतसागर जी का चातुर्मास

=स्याद्वाद शिक्षण परिषद महिला शाखा की स्थापना।

=श्री रज्जूलाला जी सेदपुर वालों के सहयोग से जून सन १९८३ में एक वृहद शिक्षण शिविर का आयो-जन।

=यह भी एक संयोग कहिए कि इन्हीं वर्षो में बीना-बजरिया में एक गजरथ महोत्सव तथा नौगांव में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भी सम्पन्न हुआ।

(५) ऐतिहासिक उल्लेखनीय कार्य—विद्यालय की की हीरक जयंति

सन १९८१ में श्री ना० नं० दिग० जैन सं० विद्या० की उसकी स्थापना काल से ७५ वर्ष पूर्ण होने पर हीरक जयंति का विशाल आयोजन हुआ जिसमें एक स्मारिका भी प्रकाशित की गई जो एक ऐतिहासिक धरोहर होगी। जिसमें विगत ७५ वर्षो का लेखाजोखा भी है।

इसी अवसर देश के उच्चकोटि के विद्वान यहां एकत्रित होकर सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु गोष्ठियां की और समाज को मार्गदर्शन दिया।

निःसन्देह हाल के ५-७ वर्ष सभी के सर्वगीण विकास में सर्वाधिक महत्व रखते हैं। इसका श्रेय सभा के गंभीर व्यक्तित्व के धनी युवा सभापति श्री राजेन्द्र कुमार जी एवं सूझबूझ सम्पन्न कर्मठ एवं लगनशील युवा मन्त्री श्री विमल-कुमार जी सराफ को ही जाता है। मुझे आशा है कि यदि कुछ समय तक और यह सभा उनके संरक्षण में रहे तो और भी वेहतर विकास की संभावनाएं सुनिश्चित हैं।

मेरी कामना है कि सभा का यह युवा नेतृत्व समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दे जिससे राष्ट्र में एक नया चरित्र उभरे और देश सर्वतोमुखी विकास की ओर अग्रसर हो। यह बड़े सोभाग्य की बात है कि हमारे देश का नेतृत्व भी युवा पीढ़ी के हाथों में आ गया है। फलतः देश भी नये ढंग से तेजी से अब समृद्धि की ओर आगे बढ़ेगा ऐसी आशा है।

युवा वर्ष की शुरूआत में देश के एवं समाज के युवाओं से हम भारतवासियों को बहुत कुछ आशाएं एवं, अपेक्षाएं हैं। ईश्वर उनके पथ प्रशस्त करे। वे देश को प्रगति के उच्च शिखर पर आरूढ़ करें—ऐसी हार्दिक सदभावना है। भद्रं भूयात् शुभं भूयात्

शुभाकांक्षी

बीना — खेमजन्द घिया, बीना

५।१।८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4513

भारतीय साहित्य के विकास में दिगम्बर जैन आचार्यों का योगदान

डा० रमेश चन्द जैन, डी लिट्
जैन मन्दिर के पास, बिजनौर, उ० प्र०

भगवान् महावीर की दिव्यध्वनि को उनके प्रमुख शिष्य गौतम गणधर ने अवधारण कर उसके आधार पर द्वादशाङ्ग की रचना की। भगवान के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर उनके उपदेश की अलिखित धारा लगभग ५०० वर्षों तक प्रवर्तित रही, इसके पश्चात् उपदेशों को लिपिबद्ध किया गया तथा पूर्वाचार्यों की ज्ञान परम्परा का आश्रय लेकर साहित्य सृजन और लेखन का कार्य किया जाता रहा, जो आज तक प्रवाहित है। साहित्य सृजन के क्षेत्र में दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों आचार्यों का योगदान रहा। प्रस्तुत निबन्ध का अभिप्रेत दिगम्बर जैन आचार्यों के योगदान विषयक है, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

प्राकृत भाषा—भगवान महावीर ने अर्द्धमागधी भाषा में उपदेश दिया। भगवान् महावीर की भाषा को अर्द्धमागधी इसलिए कहा गया कि वह मागधी से कुछ भिन्न थी। मगध के सीमान्त प्रदेशों तथा अन्य प्रदेशों की अठारह भाषाओं का उस पर प्रभाव था। इस नाम के पीछे दूसरा कारण यह बतलाया जाता है कि यह आधे मगध देश में बोली जाती थी।[1] भगवान् महावीर के उपदेशों को परम्परया अवधारित करने वाले आचार्यों की परम्परा म आचार्य माघनन्दि के शिष्य आचार्य धरसेन भगवान महावीर के ६१४ वर्ष पश्चात पदासीन हुए। उन्होंने महाकर्मप्रकृति प्राभृत पुष्पदन्त और भूतबलि को पढ़ाया। जिन्होंने महावीर निर्वाण की सातवीं शताब्दी में षट्खण्डागम के सूत्रों की रचना की। आचार्य कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, शामकुन्द, तुम्बलूर तथा बप्पदेव, आचार्य ने षट्खण्डागम पर टीकायें लिखीं। सम्प्रति ये टीकायें अनुपलब्ध हैं विक्रम की ९वीं शताब्दी में आचार्य वीरसेन ने षट्खण्डागम पर ७२ हजार श्लोक प्रमाण धवला टीका लिखी। उन्होंने कषायप्राभृत पर भी टीका लिखना आरम्भ किया, किन्तु उसे वे पूर्ण नही कर सके। उनके शिष्य जिनसेनाचार्य ने उसे पूर्ण किया। यह ६० हजार श्लोक प्रमाण है और जयधवला नाम से प्रसिद्ध हैं।

कषायपाहुड गुणधराचार्य की रचना है। इसका दूसरा नाम पेज्जदोसपाहुड है। पेज्ज का अर्थ राग है। इस ग्रन्थ में राग और द्वेष का निरूपण है। गुणधराचार्य का ज्ञान आचार्य आर्यमंक्षु नागहस्ति को प्राप्त हुआ। ये दोनों आचार्य दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में प्रतिष्ठित हैं। कषायपाहुड चूर्णसूत्र के रचयिता यतिवृषभ आर्यमंक्षु के शिष्य और नागहस्ति के अन्तेवासी थे। यतिवृषभ का समय वि० सं० ५२६ ई० से पूर्व माना जाता है। यतिवृषभ ने चूर्णिसूत्रों की रचना के बाद तिलोयपण्णत्ति की रचना की। तिलोयपण्णत्ति में तीनलोक का स्वरूप, आकार, प्रकार, विस्तार, क्षेत्रफल और युगपरिवर्तन आदि विषयों का निरूपण है। प्रसङ्गोपात्त जैनसिद्धान्त, पुराण और भारतीय इतिहास विषयक सामग्री भी निरूपित है। तिलोयपण्णत्ति में आचार्य वज्रयश का उल्लेख है और

१. मगदद्ध विसय भासा णिबद्धं अद्धमागहं, अट्ठारस देसी भासा णिमयं वा अद्धमागहं।

(निशीथ चूर्णि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हें अन्तिम प्रज्ञाश्रमण बतलाया गया है? इस प्रकार आचार्य बज्रयश आचार्य यतिबृषभ के पूर्ववर्ती हैं। कषायपाहुड की जयधवला टीका में उच्चारणाचार्य का निर्देश हुआ है। यतिबृषभाचार्य ने अपने चूर्णिसूत्रों में जिन सुगम तथ्यों की विवरणावृत्ति नहीं लिखी है, उनका स्पष्टीकरण उच्चारणाचार्य ने किया है। उच्चारणाचार्य और यतिवृषभाचार्य के विषय निरूपण में भी यत्र तत्र अन्तर दिखलाई पड़ता है। इस अन्तर का समाधान वीरसेन स्वामी ने विभिन्न नयों की उपेक्षा किया है।

विक्रम संवत् के प्रारम्भ में कुन्दकुन्द नामक महान् आचार्य हुए। इन्होंने अपने ग्रन्थों के माध्यम से अध्यात्म की सरिता प्रवाहित की। उनके महत्व का ख्यापन करने वाला एक श्लोक अ'तप्रसिद्ध है—

मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमो गणी।
मङ्गलं कुन्दकुन्दार्यो जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम्॥

इस श्लोक में भगवान् महावीर और गौतम गणधर के पश्चात् कुन्दकुन्द को स्थान दिया गया है। आचार्य कुन्दकुन्द ने निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना की।

१. समयसार
२. प्रवचनसार
३. पंचास्तिकाय
४. रयणसार
५. नियमसार
६. अष्टपाहुड
७. वारस अणुवेक्खा
८. सिद्धभत्ति
९. सुदभत्ति
१०. चारित्तभत्ति
११. जोइभत्ति
१२. आइरियभत्ति
१३. णिव्वाणभत्ति
१४. पंचगुरुभत्ति
१५. तित्थयरभत्ति

मुनि के आचार का विस्तृत वर्णन करने वाला एक प्राचीन ग्रन्थ है। इसके कर्त्ता आचार्य वट्टकेर हैं। डॉ० ए० एन० उपाध्ये ने अपनी प्रवचनसार की महत्वपूर्ण प्रस्तावना में मूलाचार को दक्षिण भारत की पाण्डुलिपि के आधार पर कुन्दकुन्दकृत लिखा है। स्व० पं० नाथूराम प्रेमी ने वट्टकेर आचार्य को कुन्दकुन्द से भिन्न माना है।

मुनि आचार पर शिवार्यकी भगवती आराधना अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है। भगवती आराधना के वर्ण्य विषय से स्पष्ट है कि इसके अनेक तथ्य ऐसे हैं जो ई०पू० तीसरी चौथी शताब्दी में प्रचलित थे। मुनियों की अन्त्येष्टि का चित्रण, सल्लेखना के समय मुनि परिचर्या, मरणों के भेद-प्रभेद आदि विषय पर्याप्त प्राचीन हैं। भाषा और शैली के अध्ययन से यह ध्वनित होता है कि यह ग्रन्थ ई० की आरम्भिक शताब्दियों में अवश्य लिखा गया था।

स्वामी कार्त्तिकेय कृत वारस अणुवेक्खा अनुप्रेक्षाओं का प्रतिपादक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें ४८९ गाथायें हैं। विषय सरल और सुबोध है। स्वामी कार्त्तिकेय का समय विक्रम की दूसरी-तीसरी शती माना जाता है। प्राकृत में साहित्य रचना करने वाले दिगम्बराचार्यों में आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती का नाम भी महत्वपूर्ण है। इन्होंने विक्रम की ११वीं सदी में गोमट्टसार, त्रिलोकसार, लब्धिसार तथा लक्षणसार ग्रन्थों की रचना की। इन्होंने अपने गोमट्टसार कर्मकाण्ड ग्रन्थ में बतलाया है—

जह चक्केण य चक्की छक्खंडं साहियं अविग्घेण।
तह मइ चक्केण मया छक्खंडं साहियं सम्मं॥

जिस प्रकार चक्रवर्ती अपने चक्ररत्न से भारतवर्ष के छह खण्डों को बिना किसी विघ्न बाधा के अधीन करता है उसी तरह मैंने (नेमिचन्द्र ने) अपनी बुद्धिरूपी चक्र से षट्खण्डागम सिद्धान्त को सम्यक् रीति से अधीन किया है।

नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती से भिन्न नेमिचन्द्र सिद्धान्ति देव हुए। इन्होंने लघु द्रव्य संग्रह और बृहद् द्रव्य संग्रह ग्रन्थों की रचना की। इन दोनों ग्रन्थों में द्रव्य का विवेचन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दार्शनिक रचनायें

संस्कृत साहित्य—उपलब्ध जैन संस्कृत ग्रन्थों में तत्त्वार्थसूत्र सबसे प्राचीन माना जाता है। यह ग्रन्थ दिगम्बर और श्वेताम्बर उभय परम्परा मान्य है। इसे जैनधर्म के विश्वकोश की संज्ञा दी जाती है। कुछ लोगों के मतानुसार इसके कर्त्ता यापनीय संघ के थे। गृद्धपिच्छाचार्य द्वारा रचित इस ग्रन्थ में जैन सिद्धान्त को सूत्र शैली में निबद्ध किया गया है। इसमें न्याय शास्त्र के भी बीज विद्यमान हैं। १२०-१२५ ई० के समय में निर्णीत स्वामी समन्तभद्राचार्य सर्वप्रथम स्तुतिकार थे। अपने इष्टदेव की स्तुति के व्याज से उन्होंने एक ओर हेतुवाद के आधार पर सर्वज्ञ की सिद्धि की, दूसरी ओर विविध एकान्तवादों की समीक्षा करके अनेकान्तवाद की प्रतिष्ठा की। उन्होंने जैन परम्परा में सम्भवतया सर्वप्रथम न्याय शब्द का प्रयोग करके एक ओर न्याय को स्थान दिया तो दूसरी ओर न्यायशास्त्र में स्याद्वाद का गुंफन किया। समन्तभद्र द्वारा प्रणीत ग्रन्थ बृहत् स्वम्भूस्तोत्र, स्तुतिविद्या, देवागमस्तोत्र, युक्त्यनुशासन, रत्नकाण्ड श्रावकाचार, जीवसिद्धि, प्रमाण पदार्थ, तत्त्वानुशासन, प्राकृत व्याकरण, कर्मप्राभृत टीका तथा गन्धहस्तिमहाभाष्य माने जाते हैं। वि० सं० ६२५ के आसपास होने वाले आचार्य सिद्धसेन ने सन्मति तर्क की रचना की। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने अपने ग्रन्थ में तत्कालीन नाना वादों को नयवादों में सन्निविष्ट कर दिया। जैन साहित्य के क्षेत्र में दिग्नीग जैसे प्रतिभासम्पन्न विद्वान् की आवश्यकता ने ही प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन को उत्पन्न किया हैं। उनका समय विभिन्न दार्शनिकों के वाद-विवाद का था, अतः इस समय को उन्होंने अनेकान्त की स्थापना हेतु उपयुक्त माना। विक्रम की नवम शताब्दी से पूर्व होने वाले स्वामी पात्रकेशरी ने दिङ्नाग त्रैरुप्य हेतु के लक्षण का खण्डन करने के लिए त्रिलक्षण कदर्थन नामक ग्रन्थ लिखा। त्रिलक्षण कदर्थन विषयक उनका निम्नलिखित श्लोक प्रसिद्ध है—

अन्यानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किम्।
नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किम्।

विक्रम संवत् ४१४ में विद्यमान मल्लवादी ने सन्मति तर्क की टीका लिखी, जो आज अनुपलब्ध है। इनका प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ ग्रन्थ नयचक्र है। आज तक के ग्रन्थों में यह अद्भुत है। तत्कालीन सभी वादों को सामने रखते हुये उन्होंने एक वाद चक्र बनाया। उस चक्र का उत्तर उत्तर-वाद पूर्व पूववाद का खण्डन करके अपने-अपने पक्ष को प्रबल प्रमाणित करता है। प्रत्येक पूर्ववाद अपने को सर्वश्रेष्ठ एवं निर्दोष समझता है। इतने में तुरन्त उत्तरवाद आता है और पूर्ववाद को पछाड़ देता है। अन्तिमवाद पुनः प्रथमवाद से पराजित होता है। अन्त में कोई वाद अपराजित नहीं रह जाता। अनेकान्त दृष्टि का आश्रय लेने से सभी वाद सुरक्षित रह सकते हैं।

विक्रम संवत् ७२०-७८० में होने वाले भट्ट अकलंक प्राचीन भारत के अद्भुत विद्वान तथा लोकोत्तर विवेचक ग्रन्थकार एवं जैन वाङ्मय रूपी नक्षत्र लोक के सर्वाधिक प्रकाशमान तारे हैं। अकलंक ने न्याय प्रमाण शास्त्रका जैन परम्परा में जो प्राथमिक निर्माण किया, जो परिभाषायें, जो लक्षण व परीक्षण किया, जो प्रमाण, प्रमेय आदि का वर्गीकरण किया तथा परार्थानुमान, वाद, कथा आदि परमत प्रसिद्ध वस्तुओं के सम्बन्ध में जो जैन प्रणाली स्थिर की, वह सब छोटे-छोटे ग्रन्थों में विद्यमान उनके असाधारण व्यक्तित्व का तथा न्याय प्रमाण स्थापना युग का द्योतक है। उनके द्वारा लिखित रचनायें तत्त्वार्थवार्तिक, अष्टशती, लघीयस्त्रय सविवृत्ति, न्यायविनिश्चय, सिद्धिविनिश्चय तथा प्रमाण संग्रह हैं।

७७०-८४० ई० के विद्वान् आचार्य विद्यानन्द भारतीय दर्शनों के गहन अभ्यासी थे। उन्होंने विद्यानन्द महोदय, तत्त्वार्थ श्लोकवार्त्तिक, अष्टसहस्री, युक्त्यनुशासनालङ्कार, आप्तपरीक्षा, प्रमाणपरीक्षा, पत्रपरीक्षा, सत्यशासनपरीक्षा तथा श्रीपुरपार्श्वनाथ स्तोत्र नामक ग्रन्थों की रचना की। अपनी अष्टसहस्री के विषय में उन्होने स्वयं लिखा है—

श्रोतव्याष्टसहस्री श्रुतैः किमन्यैः सहस्रसंख्यानैः।
विज्ञायेत ययैव स्वसमयपरसमय सद्भावः॥

अर्थात् हजार शास्त्रों के सुनने से क्या लाभ है? केवल एक अष्टसहस्री को सुन लीजिए। इतने से ही स्वसिद्धान्त और पर सिद्धान्त का ज्ञान हो जायगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन न्याय साहित्य में दो अनन्तवीर्य का नाम मिलता है। इनमें से एक अनन्तवीर्य ने अकलंक के सिद्धिविनिश्चय की टीका लिखी है। दूसरे अनन्तवीर्य जो लघु अनन्तवीर्य के नाम से प्रसिद्ध हैं, ने माणिक्यनन्दि के परीक्षामुख सूत्रों की संक्षिप्त किन्तु विशद व्याख्या लिखी। इनका समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी माना जाता है।

आचार्य अनन्तकीर्त्ति ने लघु सर्वज्ञसिद्धि और बृहत् सर्वज्ञसिद्धि नाम के दो प्रकरण लिखे। प्रभाचन्द्रने न्याय-कुमुद चन्द्र और प्रमेयकमलमार्तण्ड के सर्वज्ञ साधक प्रकरणों में अनन्तकीर्ति की बृहत्सर्वज्ञसिद्धि का शब्दपरक अनुसरण किया है।

आचार्य माणिक्यनन्दि जैन न्याय के आद्य सूत्रकार हैं। इनका समय ईसा की नौवीं शताब्दी है। इन्होंने अकलङ्कदेव के वचनरूपी समुद्र का मन्थन करके न्यायविद्या रूपी अमृत का उद्धार किया था। इन्होंने अपने पूर्ववर्ती ग्रन्थ न्यायबिन्दु का भी भरपूर उपयोग किया है।

आचार्य प्रभाचन्द्र (९५० ई० से १०२० ई०) बहुश्रुत विद्वान थे। इनके द्वारा लिखित ग्रन्थ चार माने जाते हैं— (१) प्रमेयकमलमार्तण्ड (२) न्याय कुमुदचन्द्र (३) तत्त्वार्थ वृत्ति तथा (४) शाकटायनन्यास। आचार्य प्रभाचन्द्र के समकालीन अकलंकदेव के ग्रन्थों के व्याख्याता वादिराज हैं। इनका काल १०१० से १०६५ ई० माना जाता है। इनके द्वारा पार्श्वनाथचरित, यशोधरचरित, एकीभाव स्तोत्र, न्यायविनिश्चय विवरण तथा प्रमाण निर्णय ग्रन्थ लिखे गए। इनमें अन्तिम दो दार्शनिक कृतियां हैं। न्यायविनिश्चय-विवरण अकलंक देव के न्यायविनिश्चय ग्रन्थ का बीस हजार श्लोक प्रमाण भाष्य है। प्रमाणलिपि एक लघुकाय ग्रन्थ है।

विक्रम की दसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हुए आचार्य अभयदेव ने सिद्धसेन के सन्मति-तर्क पर टीका लिखी। अभयदेव की सन्मतितर्क टीका में सैकड़ों दार्शनिक ग्रन्थों का दोहन किया गया है। सामान्य रूप से कुमारिल का मीमांसा श्लोक वार्त्तिक, शान्त रक्षित कृत तत्त्वसंग्रह पर कमलशील की पंजिका और दिगम्बरा-चार्य प्रभाचन्द्र के प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचन्द्र का प्रतिबिम्ब मुख्यरूप से इस टीका में है।

वादिदेव—(ई० १०८६—११३०) ने अकलङ्क वचनाम्भोधि से उद्धृत परीक्षामुखसूत्र के आधार से प्रमाण नयनत्त्वालोकालङ्कार की रचना की तथा उसकी स्याद्वाद रत्नाकार टीका भी स्वय लिखी।

साहित्यिक रचनायें—संस्कृत के काव्यग्रन्थ लेखन की परम्परा में दिगम्बर जैन आचार्यों ने अपूर्व योगदान दिया। इस परम्परा में सर्वप्रथम रविषेण का नाम आता है। आचार्य रविषेण अठारह हजार अनुष्टुप् श्लोक प्रमाण पद्मचरित नामक संस्कृत जैन कथा साहित्य के आद्य ग्रन्थ के प्रणेता हैं। विक्रम संवत् ७३४ में इन्होंने पद्मचरित की रचना पूर्ण की। पद्मचरित रामकथा सम्बन्धी संस्कृत का प्रथम जैन ग्रन्थ है। चरित ग्रन्थों की परम्परा में दूसरा नाम वराङ्गचरित का आता है। इसके कर्त्ता जटासिंहनन्दि थे। इनके समय की उत्तरवर्ती सीमा सातवीं शताब्दी निश्चित होती है। आदि पुराणकार ने इनका उल्लेख किया है। इनके काव्य की भाषा विमल है और बीच-बीच में उपदेशों को ग्रथित किया गया हैं।

वीरनन्दिकृत चन्द्रप्रभाचरित महाकाव्य की शैली में रचा गया एक सुगठित काव्य है। वीरनन्दि अभयनन्दि के शिष्य थे। ये नन्दिसंघ के देशीयगण के आचार्य थे। इनका समय उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर ई० सन् ९५०—९९९ निर्धारित होता है। यह पहला जैन चरितकाव्य है, जिसमें महाकाव्य के समस्त लक्षण पाए जाते हैं। जीवन उत्तरोत्तर विकास सरणियों द्वारा तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का अनाविल चरित इस काव्य में उपस्थित किया गया है।

ई० सन् ९७४ के आस पास महासेन ने प्रद्युम्न चरित की रचना की। यह एक महाकाव्य है। इसमें १४ सर्ग हैं। श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के चरित को इसमें काव्य शैली में निबद्ध किया गया है। जैन परम्परा के २४ कामदेवों में प्रद्युम्न को एक माना गया है। सरलता, स्वाभाविकता और प्रसादमयता ये तीनों गुण प्रद्युम्न चरित में समाहित हैं। पद लालित्य इसका विशेष गुण है। महासेन लाट-वर्गट संघ के आचार्य थे। लाट-वर्गट संघ में सिद्धान्तों के पारगामी जयसेन मुनि हुए और उनके शिष्य गुणाकर सेन। इन गुणाकरसेन के शिष्य महासेन सूरि हुए, जो मंजु द्वारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजित थे और सिन्धुराज या सिन्धुल के महामात्य पर्पट ने उनके चरण कमलों की पूजा की थी।

चरित काव्यों की परम्परा में पार्श्वनाथ चरित १२ सर्गों का महाकाव्य है। इसमें तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का चरित काव्य शैली में निबद्ध है। वादिराज तार्किक होने के साथ भाव प्रवण महाकाव्य प्रणेता हैं। इनकी तुलना संस्कृत के प्रसिद्ध कवि नैषधकार श्री हर्ष से की जा सकती है। पार्श्वनाथ चरित के अतिरिक्त इन्होंने यशोधरचरित, एकीभाव स्तोत्र, न्याय विनिश्चय विवरण तथा प्रमाण-निर्णय ग्रन्थों की रचना की।

जैन पुराणों की शृंखला में रविषेण के पद्मचरित को पद्मपुराण कहलाने का गौरव प्राप्त है। इसी की पद्धति पर जिनसेन प्रथम ने हरिवंश पुराण की रचना की। ये जिनसेन आदि पुराणकार जिनसेन द्वितीय से भिन्न थे। जिनसेन द्वितीय मूलसंघ के उस पंच स्तूप नामक अन्वय में हुए हैं, जो आगे चलकर सेनान्वय या सेनसंघ नाम से प्रसिद्ध हुआ। पार्श्वाभ्युदय के अन्त में आए हुए पद्य से इतना स्पष्ट है कि वीर सेनाचार्य के ये शिष्य थे। विनय-सेन इनके गुरुभाई थे। उन्हीं के कहने पर इस काव्य की रचना की गई है। जिनसेन के पार्श्वाभ्युदय का उल्लेख हरिवंश पुराण (शक सं० ७०५ सन् ७८३ ई०) में आया है। अतः पार्श्वाभ्युदय की रचना ई० सन् आठवीं शती में हो चुकी थी। जिनसेन द्वितीय ने वीरसेन द्वारा आरम्भ की गई जयधवला की परिसमाप्ति शक संवत् ७५९ (ई. ८६७) फाल्गुन शुक्ल दशवीं के पूर्वाह्ण में की थी। अतः जिनसेन की रचनाओं का क्रम घटित करने पर पार्श्वा-भ्युदय के अनन्तर जयधवला टीका और उनके पश्चात् आदि पुराण का क्रम आता है। डॉ ज्योतिप्रसाद जैन ने लिखा है—वीरसेन स्वामी के यह शिष्य सेनसंघी आचार्य जिनसेन के राजगुरु और धर्मगुरु थे। ये विभिन्न भाषाविज्ञ एव विविध विषय पटु दिग्गज विद्वान थे। लड़कपन से ही उनके साथ अमोघ वर्ष का सम्पर्क रहा था और वह उनकी बड़ी विनय करता था। अतएव जिनसेनाचार्य का स्थिति काल शक संवत ६८० ७६५ (सन् ७५८-८३७ ई०) होना चाहिए। आदिपुराण कवि की प्रौढावस्था की कृति है। यह महापुराण का एक भाग है। इसमें ४७ पर्व हैं, जिनमें प्रारम्भ के ४२ और ४३ पर्व के ३ श्लोक जिनसेना-चार्य द्वारा रचित हैं। शेष पर्वों के १६२० श्लोक उनके शिष्य भदन्त गुणभद्राचार्य द्वारा रचित हैं। गुणभद्राचार्य अपने समय के बहुत बड़े विद्वान हुए। ये उत्कृष्ट ज्ञान से युक्त, पक्षोपवासी, तपस्वी और भावलिङ्गी मुनिराज थे। इन्होंने आदि पुराण के अन्त में १६२० श्लोक रचकर उसे पूरा किया और उसके बाद उत्तरपुराण की रचना की, जिसका परिमाण आठ हजार श्लोक प्रमाण है। ये अत्यन्त गुरु भक्त शिष्य थे। उत्तर पुराण महापुराण का उत्तर भाग है। इसमें अजितनाथ को आदि लेकर २३ तीर्थंकर ११ चक्रवर्ती, ६ नारायण, ६ बलभद्र और ६ प्रतिनारायण तथा जीवन्धरस्वामी आदि कुछ विशिष्ट पुरुषो के कथानक दिए हुए हैं। इनकी रचना कवि परमेश्वर के गद्यात्मक पुराण के आधार पर हुई होगी। आत्मानुशासन आचार्य गुणभद्र द्वारा रचित २७२ श्लोकों का सुन्दर ग्रन्थ है। यह सरस और सरल रचना हृदय पर तत्काल असर करती है। जिनदत्तचरित गुणभद्ररचित नवसर्गात्मक छोटा-सा काव्य है। अनुष्टुप श्लोक में इसकी रचना हुई। इसकी कथा बड़ी कौतुकावह है। शब्दविन्यास अल्प होने पर भी कहीं कहीं भाव बहुत गम्भीर है।

पुराण साहित्य से भिन्न काव्य का सृजन भी दिगम्बर जैन आचार्यों द्वारा प्रभूत मात्रा में हुआ। उदाहरणार्थ वादीभसिंह बहुत ही प्रतिभाशाली आचार्य हुए। उनके वाग्मित्व, कवित्व और गमकत्व की प्रशंसा जिनसेनाचार्य जैसे महाकवि ने की है। वादीभसिंह नाम जो एक उपाधि जान पड़ता है, से उनकी तार्किकता सूचित होती है। क्षत्र-चूड़ामणि, गद्यचिन्तामणि और स्याद्वाद सिद्धि ये तीन रचनायें सम्प्रति वादीभसिंह की उपलब्ध हैं। इनमें से प्रथम दो काव्यग्रन्थ तथा अन्तिम स्याद्वादसिद्धि न्याय ग्रन्थ है। प्रमाणनौका और नवपदार्थविनिश्चय ये दो न्याय ग्रन्थ भी वादीभसिंह द्वारा रचित माने जाते हैं। सम्प्रति ये अनुपलब्ध हैं। स्याद्वादसिद्धि में जीवसिद्धि, फलभोक्तृत्वसिद्धि, युगपद-नेकान्तसिद्धि, भोक्तृत्वाभावसिद्धि, सर्वज्ञाभावसिद्धि,-जगत्कर्तृत्वाभावसिद्धि, अर्हत्सर्वज्ञसिद्धि, अर्थापत्तिप्रामाण्य-सिद्धि, वेद पौरुषेयत्वसिद्धि, परतः प्रामाण्यसिद्धि, अभाव प्रमाणदूषणसिद्धि, तर्क प्रामाण्यसिद्धि, और गुणगुणीअभेद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धि इन १४ अधिकारों द्वारा प्रतिपाद्य विषयों का निरूपण किया गया है।

छत्रचूड़ामणि में भगवान महावीर के समकालीन राजा सत्यन्धर की विजयारानी के पुत्र जीवन्धरकुमार का वृत्त वर्णन है। इनका जीवनवृत्त अनेक घटनाओं से भरा हुआ है और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पुरुषार्थों का फल प्रदर्शित करने में अद्वितीय है। ग्रन्थ की रचना ग्यारह लम्बों में अनुष्टुप् छन्द में की गई है। गद्यचिन्तामणि का कथानक क्षत्रचूड़ामणि के समान है। इसकी रचना संस्कृत गद्य में की गई है। वादीभसिंह के काव्यपथ में पदों की सुन्दरता, श्रवणीय शब्दों की रचना, अप्रतिहतवाणी, सरल कथासार, चित्त को आश्चर्य में डालने वाली कल्पनायें, हृदय में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला धर्मोपदेश, धर्म से अविरुद्ध नीतियाँ और दुष्कर्म के फल की प्राप्ति आदि विशिष्ट गुण सुशोभित हैं। वादीभ सिंह का समय विद्वानों ने आठवीं शती का अन्त और नौवीं शताब्दी ईसवी का पूर्वार्द्ध सिद्ध किया है।

जैनों में संस्कृत के चम्पू काव्य की रचना का शुभारम्भ सोमदेव ने किया। आचार्य सोमदेव ने देवसंघ के आचार्य यशोदेव के प्रशिष्य और नेमिदेव के शिष्य थे। नीतिवाक्यामृत की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि सोमदेव महेन्द्रदेव के लघुभ्राता थे और स्याद्वादाचलसिंह, तार्किक, चक्रवर्ती, वादीभपंचानन, वाक्कल्लोलपयोनिधि तथा कविकुलराज उनकी उपाधियाँ थीं। सोमदेव यशोधरमहाराजचरित, षण्णवतिप्रकरण, महेन्द्रमातलिसंजल्प और युक्तिचिन्तामणि के रचयिता थे। यशोधरमहाराजचरित का ही दूसरा नाम यशस्तिलकचम्पू है। शक संवत् ८८१ (९५९ ई०) में सिद्धार्थ संवत्सर में चैत्रमास की मदनत्रयोदशी के दिन जब कृष्णराजदेव पाण्ड्य, सिंहल, चोल और चेरम आदि राजाओं को जीतकर मेलपाटी में शासन करते थे, यशस्तिलक समाप्त हुआ, ऐसा सोमदेव ने स्वयं लिखा है। सम्प्रति सोमदेव के तीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं—यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत और अध्यात्मतरंगिणी। पहले में आठ आश्वासों में गद्य और पद्य में राजा यशोधर की कथा वर्जित है। दूसरे ग्रन्थ में सूत्रशैली में राजनीति का कथन है। तीसरी अध्यात्म प्रधान है।

जैनाचार्यों द्वारा स्वधर्म के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी रचनाओं का प्रणयन हुआ। उनकी दर्शन व्याकरण, कोष, गणित, ज्योतिष विज्ञान, नक्षत्रविद्या तथा राजनीति विज्ञान सम्बन्धी अमूल्य रचनायें हैं। महावीराचार्य (ई० ८५०) कृत गणितसार संग्रह व ज्योतिष पटल, भद्रबाहु के वचनों के आधार पर निर्मित भद्रबाहुसंहिता, शाकटायन व्याकरण तथा नीतिवाक्यामृत आदि इसी श्रेणी की रचनायें हैं। दक्षिण भारत में दिगम्बर जैन आचार्यों ने द्रविण भाषा-तमिल, तेलगू और कन्नड़ के उत्थान में सेवायें समर्पित कीं। तोलकाधियम तमिल भाषा के सभी व्याकरण ग्रन्थों का मूल माना जाता है। इसे विद्वानों ने जैन ग्रन्थ माना है। इसका कर्त्ता संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य में भी निर्विवाद रूप से प्रवीण था। तिरुक्कुरल एक तमिल नीति ग्रन्थ है। इसे तमिल वेद भी कहा जाता है। इसके कर्त्ता एलाचार्य कुन्दकुन्द थे। नालडियार एक संग्रह ग्रन्थ है। यह भी कुरल के समान समादृत है। शिलपादिकारम् चेल के युवराज, जो कि जैन मुनि हो गए थे, की महत्त्वपूर्ण कृति है। यह तमिल के पाँच महाकाव्यों में परिगणित है। पंचमहाकाव्यों में तीन जैन ग्रन्थ तथा दो बौद्ध ग्रन्थों की गणना होती है। अवशिष्ट दो जैन महाकाव्य वलैयापति और जीवक चिन्तामणि हैं। तमिल में पांच लघुकाव्य भी अतिप्रसिद्ध हैं। ये हैं—यशोधर काव्य, चूलामणि, उदयनन कथै, नागकुमार काव्य और नीलकेशि। ये पाँचों ही जैन रचनायें हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेरिच्चारम्, पलनोलिं आदि नीतिग्रन्थ, मेरुमन्दरपुराणम् आदि पुराण ग्रन्थ यशरंगुलक्करिकै, यघरंगुलवृत्त, नेमिनाथम् और नानूल आदि व्याकरण ग्रन्थ, अच्चनंदिभालै आदि छन्द शास्त्र और जिनेन्द्रभालै आदि ज्योतिष ग्रन्थ भी जैन साहित्यकारों की तमिल में महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य के क्षेत्र में दिगम्बर जैन आचार्यों का महान् योगदान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

चारित्रिक अवमूल्यन की गहराती समस्या

(स०सि० धन्यकुमार जैन कटनी)

अहिंसा जैन धर्म का प्राण है। यह देन मूलतः भारत वर्ष की है' पूर्वाचार्यो व महापुरुषों ने इसे आदर्श म नकर अहिंसा को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। इस लोक और परलोक के अभ्युदय का कारण बताया है। मानव जीवन के चरम-लक्ष्य "मोक्ष" की प्राप्ति का साधन बताया है।

आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के अनन्य शिष्य श्री सुधर्माचार्य ने जैन तीर्थंकरों के विषय में कहा है कि "वे राग द्वेष मोह की उस दुर्गम घाटी को पार कर लेते हैं जिसमें पड़कर अच्छे-अच्छे ज्ञानी पुरुष भी रागद्वेष मोह की वीथियों में भ्रमित होकर लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। प्राणी मात्र के प्रति न्याय नहीं कर पाते। वे स्वयं निर्मित महामानव होते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर अहिंसा और सत्य का दर्शन कर प्राणिमात्र के हित की कामना से उनकी ही भाषा में उनको उद्बोधन—उद्योत से दिशा दर्शन कराते हैं। पशु-पक्षी तक उनके उपदेश से लाभ उठाते हैं। उनकी सभा में उनके लिये स्थान सुरक्षित रहता है वे कल्याण—कामना से प्रेरित होकर प्राणी मात्र के लिये एक ही उपदेश देते हैं—"किसी की हिंसा मत करो" यही उनका सत्यदर्शन का, सत्य तक पहूँचने का एक सही मार्ग है। इसी में सबका कुशल क्षेम है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र मानव, पशु-पक्षी सबके लिये बिना किसी भेद-भाव के यही उनका उपदेश है। सम्प्रदाय वर्ण विशेष जातिवाद के मानने वालों का इसमें विकल्प नहीं है। आग्रह नहीं है।

जैन दर्शन अपने आप में सर्वोदयी तीर्थ की स्थापना करता है। अंध विश्वासों को जड़ से उखाड़ कर फेंकता है। पथ-भ्रष्ट संसारी प्राणियों को शाश्वत सुख का मार्ग प्रशस्त करता है। विचारों में अनेकान्त, आचार में अहिंसा, वाणी में स्याद्वाद के सिद्धान्त को जीवन में अंगीकार कर उसे व्यवहारिक आचार-विचार में उतारना यह जैन धर्म की अपनी विशेषता है। विश्व की वर्तमान समाजवादी विचार-धारा से यह प्रकिया बहुत ऊपर है।

आज जो संसार की स्थिति है उस संदर्भ में विचार करना अति आवश्यक है। देश काल युग का प्रभाव समाज पर पड़ता है उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। तेजी से हर क्षेत्र में प्रत्येक वस्तु के मूल्य एव परिभाषाओं में आमूल परिवर्तन किया जा रहा है। यह चिन्ता का विषय है। इस संक्रमण काल में गिरते हुए मुल्यों के प्रति हम सजग-सावधान न रहे तो जैन संस्कृति की रक्षा करना अत्यन्त दूभर एवं कठिन हो जावेगा।

वर्तमान युग में गांधी ही ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अहिंसा की शक्ति को न केवल पहचाना किन्तु ऐसे क्षेत्र में प्रयोग किया, जिसमें इससे पहले उसका कोई उपयोग इस रूप में नहीं किया गया था। क्रियात्मक प्रयोग करके विश्व-युद्धों से त्रस्त जर्जरित राष्ट्रों के सामने अहिंसा को एक आशा और विश्वास की झलक दिखा दी। मात्र यही एक ऐसा अमोघ अस्त्र है—जिसमें विश्व शान्ति के बीज निहित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस प्रकार आज राजनीति हमारे दैनन्दिन जीवन पर छा रही है—उस पृष्ठ भूमि में हम आज चर्चा करना चाहते हैं। भारत और मूल्यों का बढ़ता संकट—हमारी पीढ़ी पर क्या कहर ढायेगा—कहना कठिन है।

आज की स्थिति हमे अपने भीतर झांक कर इस बात का उत्तर लेना होगा कि आपकी हमारी शिक्षा हमें किस दिशा की ओर ले जा रही है और हमारे मूल्यों की क्या दशा बन गई है? हमारी युवा पीढ़ी साम्प्रदायवाद, जातिवाद, और भौतिकवाद का शिकार हो रही है। क्या कारण है कि राष्ट्रीय नेताओं की उत्तराधिकारी पीढ़ी साम्प्रदायिकता के रंग में रंगी जा रही है।

शताब्दियों की गुलामी के कारण हमारे चरित्र में जो कमियां आई थी, महात्मा गांधी उसमें सुधार करने में सफल हो गये थे, परन्तु जितना उनके प्रयासों से लाभ हुआ था, उतना ही कुछ वर्ष व्यतीत हो जाने पर हमने खो दिया है। हम अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिये कितने भ्रष्ट साधन अपनाते हैं, उसकी हमे कोई चिंता नहीं रही। मंत्र हम "सत्यमेव जयते" का ही पढ़ते हैं, परन्तु सत्य कहीं भी सार्थक रूप में दिखाई नहीं देता। ईमानदारी ही सबसे अच्छी नीति है, इस तथ्य को विस्मृत कर दिया गया है। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति ने मुझे एक बार राष्ट्रपति भवन में बताया था—"भ्रष्टाचार आम हो गया है, जो भ्रष्टाचारी कृत्य नहीं अपनाता, उसे मूर्ख समझा जाता है।" जिसकी लाठी उसकी भैंस का सिद्धांत व्यावहारिक सत्य का रूप धारण कर चुका है। झूठ और धोखाधड़ी को सर्वत्र प्रोत्साहन मिल रहा है। लोकतंत्र के शीर्ष मन्दिरों में लोग झूठ बोलने से भी भयभीत नहीं होते। प्रत्येक संसद सदस्य और विधानसभा सदस्य, गलत शपथ पत्र देकर अपना काम आरम्भ करता है। चुनावों में जितना धन उसने व्यय किया होता है, उसको बहुत कम दिखाया जाता है। लोग बिना विदेशी मुद्रा लिये ही विदेश यात्रा पर चले जाते हैं। कोई उनसे पूछता ही नहीं कि उनका खर्चा किसने दिया है। आज धन की शक्ति सब शक्तियों से ऊपर हो गई है।

नई पीढ़ी की इस समय वही स्थिति है जो २००० वर्ष प्लेटो के युग में थी प्लेटो ने लिखा था—"हमारी नई पीढ़ी के साथ क्या हो रहा है? वे बड़ों का आदर नहीं करते और कानून की अवहेलना करते हैं। गलियों में लड़ते झगड़ते और गंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। इनकी नैतिकता का निरन्तर ह्रास हो रहा है। उनका क्या होगा? श्री जवाहरलाल नेहरु बार-बार यह बात कहते थे कि मानव के सुधार के लिये प्रयास करना होगा। भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, निष्ठावान गांधीवादी थे। वह कहा करते थे—"यथा राजा, तथा प्रजा।" स्वतंत्रता के बाद गत ३५ वर्षों में देश ने राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में आशातीत प्रगति की। आज हमारे देश का विदेशों में आदर है, वह इससे पूर्व कभी नहीं था। डा० राधाकृष्णन बार-बार कहा करते थे कि सभ्यतायें, ईंटों, गारों, लोहे और मशीनरी से नहीं बनती। इनका निर्माण नर-नारी अपने चरित्रों और गुणों से करते हैं। काफी वर्षो से यह प्रयास हो रहा है कि निरन्तर गहरा होता जा रहा नैतिक संकट किसी प्रकार दूर किया जाये। इस बारे में २४ वर्ष पूर्व श्री प्रकाश समिति ने जो अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, वह गत २४ वर्षों से धूले चांट रही है। यद्यपि कोठारी आयोग ने उसकी सिफारिशों को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी थी। केन्द्रीय सरकार ने भी उसे स्वीकार कर लिया था। १९५९ में स्थापित समिति को इस बारे में अपनी रिपोर्ट देने को कहा गया था कि क्या शिक्षा संस्थाओं में नैतिक अथवा धार्मिक शिक्षा देने की आवश्यता है। श्री प्रकाश इसके अध्यक्ष थे, जो कि उस समय महाराष्ट्र के राज्यपाल थे। उसमें दो अन्य प्रमुख भारतीय श्री जी. सी. चटर्जी जो फौजी थे और श्रीप्रेमकृपाल जो बाद में यूनेस्को के अध्यक्ष बने, इस समिति ने यह जोरदार सिफारिश की कि पुरातन नैतिक और अध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा देना जरूरी है, अत: इसके लिये विशेष व्यवस्था करके कुछ सीमाओं में इस कार्य को किया जाना चाहिये।

समिति ने यह सिफारिश की थी कि इस दिशा में भारतीय महान धार्मिक नेताओं के जीवन की तुलनात्मक शिक्षा बच्चों को दी जानी चाहिये बाद में उनका तत्वज्ञान और तत्संबन्धी नैतिक सिद्धांतों से उन्हें परिचित कराया जाना चाहिये। ऐसा करते हुये, अच्छी आदतें समाज सेवा की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावना और देश भक्ति की उत्कट भावना उनमें निर्माण करने का निरन्तर प्रयास किया जाना चाहिये। बच्चों में में अच्छी आदतें और शालीनता की भावना पैदा करने कोई कसर नहीं छोड़ी जानी चाहिये। विभिन्न स्तर पर नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को सिखाने के बारे में संक्षेप में कुछ विवरण समिति ने प्रस्तुत किया था—"यदि हमने अपने नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का परित्याग कर दिया तो हमारे राष्ट्र के शरीर से आत्मा निकल जायेगी। दूसरे देशों की नकल करने से हमारा मन कुछ अस्त-व्यस्त हो जायेगा और हम भीषण अराजकता का शिकार बन जायेंगे। इसके कुछ संकेत तो हमारे राष्ट्रीय क्षितिज पर हमें दृष्टिगोचर भी होने लग गये हैं।

इस बारे में नई दिशा निर्माण करने में ही काफी समय नष्ट कर दिया गया है, परन्तु कोई व्यावहारिक कदम उठाने के लिए ठोस कार्य नहीं हो सका। विशेषज्ञ मूल्यों की बात करने लगे हैं, परन्तु इस बात को स्पष्ट करके नही बता सकते कि मूल्यों से उनका मतलब क्या है इस बारे में स्थिति को काफी जटिल बना दिया गया है, नये विचारों और नई दिशाओं में कोई ठोस राह नहीं दिखाई। आध्यात्मिकता और नैतिकता को परंपरावादी कह कर उसका उपहास किया जाता है। इस विचार के लोग वास्तविक ज्ञान के लिए वैज्ञानिक शिक्षा की अपेक्षा ही मानते हैं, नैतिकता और आध्यात्मिकता को केवल सुन्दर भावनायें समझते हैं एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार कुछ लोग तो यह तर्क भी देते हैं कि हमें अपनी शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत केवल वैज्ञानिक साधनों और वैज्ञानिक शिक्षा को ही प्रोत्साहन देना चाहिये। इस तरह की शिक्षा के बाद प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिए स्वतंत्र छोड़ देना चाहिये कि उसके नैतिक और आध्यात्मिक रूझान क्या है। परन्तु यह धारणा एक मूल तथ्य की उपेक्षा करती है। यह मूल तथ्य यह है कि नैतिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता के अभाव में किसी तरह की शिक्षा भी पूर्ण नहीं कही जा सकती। व्यावहारिक रूप में इस तरह की शिक्षा का कोई लाभ नहीं हो सकता। यह मानव जाति के अस्तित्व के लिये बड़ा अनिवार्य तत्व है।

लगभग तीन वर्ष हुये शिमला में इसी विषय पर एक गोष्ठी हुई थी, जहां इस बात पर विचार हुआ कि शिक्षा का कुछ उद्देश्य रहना चाहिये। इसमें बच्चों को ही नहीं, उनके माता-पिता को भी उसमें सम्मिलित करना चाहिए। वास्तव मे सारे समाज को ही उसम शामिल होना चाहिये, ताकि शिक्षा का ऐसा कार्यक्रम निर्माण हो, जिसमें शिक्षा का कुछ उद्देश्य अथवा मूल्य सामने आये। (उसकी अन्य सिफारिशें भी उल्लेखनीय है। एक यह कि "एक राष्ट्रीय अनुशासन परिषद हो, जिसमें ऐसे लोग हों, जो नैतिक दृष्टि से सर्वमान्य हों और जो ऐसी शिक्षा का मार्ग दर्शन कर सकें, जिसका उद्देश्य कुछ मूल्य प्राप्त करना हो। इस राष्ट्रीय परिषद के सदस्यों का, राज्य शिक्षा प्राधिकारों द्वारा शिक्षा के सामने के मामले में परामर्श और मार्गदर्शन के लिए निमंत्रित करें। दूसरी यह कि "कानून को लागू करने की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए एक आचरण संहिता निर्माण होनी चाहिये और सारे समाज के लिए इस प्रकार का शिक्षा कार्यक्रम बनाया जाना चाहिये जो उद्देश्यमय हो। प्रत्येक व्यक्ति को यह बताया जाना चाहिये कि उन्हें सामाजिक व्यवस्था का आदर करना है।

१५ वर्ष हुये, श्री यहुदी सेनमुईन ने भारत को सावधान किया था कि उसे भौतिकवाद की प्रगति के पीछे भाग कर अपनी आत्मा से वंचित नहीं होना चाहिये। उसे पश्चिम की दौड़ के आत्मघाती कार्यक्रम की नकल नहीं करनी चाहिये। उन्होंने कहा—"आज विश्व नये नैतिक प्रकाश के योग्य बन रहा है जो वास्तव में विश्व का प्राचीनतम है। मैं तो आज भी भारत की ओर देखता हूँ, क्योंकि उसके मूल्यों में आज भी वही ज्योति है जो परस्पर जीवों में विश्वास निर्माण करती है। उसमें संघर्ष और बलिदान दोनों भावनायें हैं जिससे हमारे बालक प्रेरणा ले सकते हैं। भारत की महान परपम्रा के लिए कितने स्फूर्तिदायक शब्द प्रश्न यह है कि हमें अपनी ओर देखना होगा और पतन की ओर जाने से अपनी ओर अपने को रोकना होगा। दंभ पाखंड के माध्यम से हमने अपना बहुत कुछ खो दिया है। हमारी कथनी और करनी में भारी विषमता निर्माण हो गई है। क्या हमारे कुछ आधारभूत मूल्य है कि नहीं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन परम्परा एवं विश्व शान्ति

डा० कोमल चन्द्र जैन,
प्राध्यापक-पालि
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

आज विश्व एक अशान्त एवं अनिश्चय की स्थिति से गुजर रहा है। समस्त विश्व को भस्म कर देने की क्षमता वाले अस्त्रों के नियन्त्रण की बात सोची जा रही है। इन विनाशकारी अस्त्रों का क्षेत्र अब केवल पृथ्वी ही नहीं रही अपितु अन्तरिक्ष भी इनके अन्तर्गत आ गया है, ऐसी परिस्थिति में धर्म का सहारा लिए बिना मानव कल्याण सम्भव नहीं है। धर्मों में भी वही धर्म सहायक हो सकता है जिसमें अहिंसा को सर्वाधिक महत्व दिया गया हो तथा जिसमें दूसरों के विचारों को समझने एवं उचित सम्मान देने की शिक्षा दी गई हो।

अहिंसा एवं सहनशीलता को दृष्टि में रखकर जब हम भारतीय धर्मों की ओर अपनी नजर दौड़ाते हैं तो वह जैन धर्म पर जाकर रुक जाती है। जैन धर्म की मूलभित्ति अहिंसा है। यही अहिंसा जैन परम्परा के आचार का मूलाधार है। अहिंसा का जितना सूक्ष्म प्रतिपादन इस परम्परा में किया गया है, उतना अन्य किसी परम्परा में उपलब्ध नहीं है। जैन परम्परा के अनुसार प्रत्येक आत्मा चाहे वह पृथ्वी सम्बन्धी हो या जलगत, चाहे वह कीडे मकोड़े की हो या पशु-पक्षी की, चाहे वह मनुष्य की हो या स्त्री की— सभी समान हैं। जैन परम्परा का आत्मा से सम्बन्धित यह साम्यवाद निःसन्देह भारतीय संस्कृति के लिए गौरव की बात है। चूंकि सभी प्राणी जीना चाहते हैं अतः किसी की हिंसा न करना ही सच्चा धर्माचार है। यह हिंसा न केवल शरीर से हत्या करने पर ही होती है अपितु मन में किसी को मारने का विचार भी हिंसा है। इस प्रकार अहिंसा विषयक जैन धर्म का सिद्धान्त अनुपम है।

अहिंसा के अतिरिक्त सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह भी जैनाचार के लिए आवश्यक हैं। किन्तु चारों आचार परक गुण अहिंसा को केन्द्र बनाकर ही उपदिष्ट हैं। अहिंसा का पालन करने के लिए यह आवश्यक है कि झूठ न बोला जाय, दूसरे की बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण करने की इच्छा न की जाय, संयम से रहा जाय तथा संचय की भावना से दूर रहा जाय। इन चार गुणों में अपरिग्रहवाद का उपदेश आज के अशान्त वातावरण में अत्यधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। आज न केवल भारत में विश्व में वैषम्य का बोलबाला है। मनुष्य के चक्कर में पड़कर सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। वह यह नहीं सोचता कि किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक संचय दूसरे की आवश्यकता की कमी का कारण बनता है। अतः सभी प्राणियों में अहिंसा भाव रखने वाले व्यक्ति को यह नितान्त आवश्यक है कि वह परिग्रह की भावना का त्याग करे। यह लोभ वृत्ति के दमन से ही सम्भव है। परिग्रह को ही ग्रन्थि या गांठ भी कहा गया है। इस गांठ के कारण आत्म-विकास अवरुद्ध हो जाता है। इसीलिए भगवान् महावीर ने गांठ या ग्रन्थि का परित्याग किया था और वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

जैन धर्म के इस आचार से ही कर्मवाद का सिद्धान्त विकसित हुआ। जो जैसा करेगा। उसी के अनुसार उसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भविष्य में फल मिलेगा। जैन धर्म के अनुसार आत्म प्रदेशों के साथ-साथ पौद्‌गलिक परमाणु भी रहते हैं। जब मन वचन एवं काम में कम्पन होता है तो यही पौद्‌गलिक परमाणु कर्मरेणु में परिवर्तित हो जाते हैं और कषाय के कारण आत्म प्रदेशों से बंध जाते हैं। इस बंध से मुक्त शुद्ध आत्मा ही उसका निर्वाण है। इस शुद्ध रूप की प्राप्ति का क्रमिक रूप चौदह गुण-स्थानों में वर्णित है।

जिस प्रकार जैन परम्परा का मूल अहिंसा है उसी प्रकार विचार का मूल अनेकान्त दृष्टि है। वस्तु का स्वभाव ही ऐसा है कि उसे अनेक प्रकार से जाना जा सकता है। कोई दृष्टि यदि वस्तु के एक धर्म पर जोर देती है तो दूसरी दृष्टि उसी वस्तु के दूसरे धर्म पर। इस प्रकार एक ही वस्तु का वर्णन नाना दृष्टियों से नाना प्रकार का हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि वस्तु के विभिन्न कथनों की विभिन्न दृष्टियों पर ध्यान दिया जाये।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जैन धर्म का आचार एवं विचार के रूप में प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकान्त दृष्टि का यदि मानव महत्व समझे और उसके अनुसार अपनी जीवनचर्या को ढालें तो इसमें सन्देह नहीं कि आज के वैज्ञानिक युग में भी विश्व में शान्ति एवं सौहार्द्र का वातावरण पुनः प्राप्त किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में जैन परम्परा विश्व शान्ति का प्रमुख आधार बन सकती है।

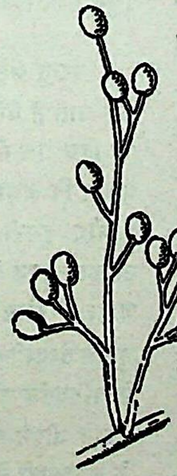

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिक्षा और समाज का समन्वय

—पं० दयाचन्द्र साहित्यचार्य

प्राचार्य—श्री ग० दि० जैन सं० महा वि०, सागर (म० प्र०)

मणियों का जन्म आकर (खानि) में अवश्य होता है अथवा समुद्र में भी रत्नों का जन्म होता है। परन्तु वे मणि आकार प्रकार कान्ति सौन्दर्य से हीन रहते हैं उनका मूल्यांकन नहीं हो सकता, कारण कि वे संस्कारों से रहित होते हैं। जिस समय उन मणियों का सुयोग्य संस्कार कर लिया लिया जाता है उस समय उनमें आकार-प्रकार, चमक-दमक एवं सौन्दर्य गुण का विकास होकर उचित मूल्यांकन होने लगता है जिससे आभूषण के रूप में मानव शरीर की शोभा की भवन आदि की सुन्दरता मनोहारिणी हो जाती है।

इसी प्रकार इस विश्व की चौरासी लाख योनि रूप आकरों से मानवों का जन्म होता है अवश्य, परन्तु वे मानव शिक्षा संस्कारों से हीन होने पर उनमें गुणरूपी कान्ति—सौन्दर्य न होने से कोई योग्यता प्राप्त नही होती और न उनके मानव जीवन का कोई मूल्यांकन हो पाता है। उनका जीवन संस्कार—हीन पशु-पक्षियों के समान रहता है। धार्मिक ग्रन्थों में उल्लेख मिलता हैं—"जन्मना जायते शूद्रः सस्कारैः द्विज उच्यते"। इसका तात्पर्य यह होता है कि मनुष्य अपने जन्म से ही शूद्र अर्थात् गुणहीन, ज्ञान हीन, सदाचारहीन, अशुद्ध और अव्यवस्थित जीवन वाला। परन्तु वह मानव अच्छे सस्कारों से द्विज हो जाता है अर्थात्—गुण सम्पन्न, ज्ञानी, सदाचारी, शुद्ध और व्यवस्थित जीवन की चर्या वाला। द्विज शब्द का व्याकरण की दृष्टि से अर्थ यह सिद्ध होता है—'द्वाभ्यां जन्मभ्यां जायते इति द्विजः' अर्थात् दो बार जिसका जन्म होता है उसे द्विज कहते हैं। इस नियम के अनुसार सन्तों को द्विज इसलिये कहते हैं कि वे दन्त शिशु अवस्था में उत्पन्न होकर गिर जाते हैं और कुछ समय पश्चात् वे पुनः उत्पन्न हो जाते हैं। लोक की कहावत भी प्रसिद्ध है कि दूध के दांत गिरते हैं और अन्न के दांत निकलते हैं। इसी प्रकार पक्षी भी द्विज कहे जाते हैं। कारण कि वे एक बार माता के उदर से अण्डे के रूप में जन्म लेते हैं और दूसरी बार वे अण्डे से निकलते हैं इसीलिये पक्षी द्विज कहे जाते हैं।

परन्तु जैसे जन्म की प्रक्रिया से पक्षी तथा सन्त द्विज कहे जाते हैं वैसे मनुष्य द्विज नहीं कहे जा सकते हैं। मनुष्य को द्विज एक नैतिक या धार्मिक दृष्टि से कहते हैं, वह इस प्रकार कि प्रथम बार मनुष्य माता के उदर से उत्पन्न होता है और दूसरी बार विद्यारम्भ आदि सोलह संस्कारों से उसका जीवन एक नया, संस्कार युक्त और व्यवस्थित बन जाता है जिससे जीवन भर वह सच्चरित्र, धार्मिक और शुद्ध कर्तव्यशील बन जाता है। इसी पवित्र सुसंस्कृत जीवन के परिवर्तन को ही मानव का दूसरा जन्म कहते हैं, यह मानव जीवन की बड़ी विशेषता है। यद्यपि संस्कृत—भाषा के कोषकारों ने ब्राह्मण वर्ण को द्विज कहा है यह कोष की दृष्टि से कहा है, परन्तु व्यापक मानवता की दृष्टि से विचार किया जाय तो जो मानव धार्मिक संस्कारों से सहित, शिक्षित, सच्चरित्र, नैतिक और कर्तव्य परायण होता है वही द्विज कहा जाता है, वही श्रेष्ठ मानव वास्तव में मानव है, चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, हरिजन आदि कोई भी जाति, वर्ग या समाज और किसी भी देश का हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वही मानव यथार्थ में सामाजिक, राष्ट्रीय, एवं नागरिक कहा जाता है।

श्री पण्डितप्रवर आशाधर जी ने सागारधर्मामृत ग्रन्थ में स्वयं लिखा है

शूद्रोऽप्युपस्कराचारवःशुपुद्ध्यास्तु तादृशः ।
जात्याहीनोऽपि कालादिलब्धौ ह्यात्मास्ति धर्मभाक् ।।

सारांश—उपकरण (वेष,भूषा, गृह के साधन आदि) आचार और शरीर की पवित्रता से सहित शूद्र (हरिजन—आदिवासी आदि) पुरुष भी जैन धर्म को सुनने, पालन करने के अधिकारी हैं। कारण कि जाति के द्वारा हीन होने पर भी पुरुष की आत्मा, काल विशुद्धि आदि लब्धियों की प्राप्ति होने पर धर्म का आराधना करने वाला होता है धर्म का पालन ज्ञान से ही होती है।

(सागारधर्मामृत अ० २, श्लोक २२)

श्री १००८ भ० महावीर की आचार्य परम्परा में प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् आचार्य समन्तभद्र ने भी जाति से हीन मनुष्य को सम्यग्दर्शन ज्ञान तथा सदाचार की प्राप्ति होने से पूज्य दर्शाया है, उनकी वाणी पर ध्यान देवें—

सम्यग्दर्शनसम्पन्न—मणि मातंगदेहजम् ।
देवादेवंविदुर्भस्मगूढांगान्तरौजसम् ।।

(रत्नकरण्डश्रावकाचार पद्य नं. २८).

तात्पर्य—जिस प्रकार पचता हुआ अंगार ऊपर से राख सहित दिखता है परन्तु उसके अन्दर चमकता हुआ तेज छिपा रहता है, उसी प्रकार सम्यग्दर्शन से सहित चाण्डाल भी ऊपर से भले नीच जातिवाला शूद्र हो, परन्तु उसके अन्तरंग में सम्यग्दर्शन तथा ज्ञान रूपी तेज प्रकाशमान रहता है, इसीलिये वह धार्मिक क्षेत्र में देव (श्रेष्ठ-पुरुष) कहा जाता है।

इन प्रमाणों से तथा अनुभव से यह सिद्ध हो जाता है कि मानव जन्म लेने मात्र से महान गुणी नहीं हो जाता है अपितु कर्मणा (संस्कार शिक्षा आदि से) महान् हो जाता है 'मानव जन्मना नहीं कर्मणा महान हो जाता है।" वह शिक्षित सुसंस्कृत मानव देश तथा समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता है।

संस्कार दो प्रकार के होते हैं १ सामान्यसंस्कार, २ विशेष संस्कार। जो मानव स्वभाव से ही अच्छे विचार करता है, अच्छे वचन बोलता है, अच्छे कार्य करता है उसको अच्छी संगति प्रिय होती है और जुआरी शराबी चोर आदि व्यसनी पुरुषों की संगति अच्छी नहीं लगती है। ये मनुष्य के सामान्य संस्कार कहे जाते हैं, विशेष संस्कार सोलह प्रकार के होते हैं—जो कि मनुष्य की गर्भ दशा से लेकर मरण पर्यन्त होते हैं। उन संस्कारों में पंचम 'विद्यारंभ' संस्कार होता है जो जीवन के पांचवें वर्ष में होता है, क्रियाकाण्ड के ग्रन्थों में कहा गया है—"प्राप्ते तु पंचमें वर्षे विद्यारंभं समाचरेत्" अर्थात् पांचवें वर्ष के प्राप्त होने पर मानव विद्यारंभ (शिक्षा का प्रारम्भ) अवश्य ही करे। पंचम वर्ष की अवस्था से विद्यारंभ संस्कार की नींव दृढ़ हो जाने से छात्रजीवन में विद्याभ्यास अच्छा एवं सम्पूर्ण होता है इसी कारण से भारत में तथा अन्य देशो मे शिशु शिक्षण केन्द्र या बाल शिक्षासदन स्थापित किये गये है कि उनमें बालकों के संस्कार प्रारम्भ से ही अच्छे हितकर हों।

शूद्र-मानव या किसी भी वर्ण एवं वर्ग के मानव को शिक्षित, सदाचारी, दृढ़-विश्वासी और विनय शील बनाने वाला योग्य शिक्षक ही होता है उसी को गुरू कहते हैं मनुष्य के गुरू तीन प्रकार के होते हैं—१ गुरु माता है जो गर्भ की दशा से लेकर अपने विचारों से, अच्छे वचनों से, अच्छे कार्यों से, अच्छे भोजन, अच्छे वेश भूषा से अपने पुत्र को शिक्षा देती हैं। अच्छे संस्कारों का प्रभाव गर्भ दशा में भी बालक पर माता का अवश्य प्रतिबिम्बित होता है। मनुष्य का दूसरा गुरु पिता है जो कि जन्म से लेकर यथायोग्य जीवन पर्यन्त अपने प्रिय पुत्रों को, अपने आचार विचार और संस्कारों से शिक्षा देते है। बालक का प्रारंभिक निर्माण माता एवं पिता पर निर्भर है। संस्कृत के नीतिकारों ने घोषित किया है—

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः ।
नशोभते सभा मध्ये, हंसमध्ये वको यथा ।।

सारांश—जिस माता पिता ने अपने पुत्र को शिक्षित योग्य नहीं बनाया, उस पुत्र की माता शत्रु है और पिता वैरी हैं। वह अशिक्षित पुत्र, शिक्षित जनों की सभा सोसा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यटी में गौरव-पूर्व स्थान प्राप्त नहीं करता, जिस प्रकार कि हंसों की सोसायटी में बगुला आदर को प्राप्त नहीं होता है। दूसरी नीति भी है "मातृ पितृकृताभ्यास:गुणितामेतिबालक:" अर्थात्—माता पिता द्वारा शिक्षित एवं सुसंस्कृत कराया गया बालक अनेक गुणों को प्राप्त कर लेता है।

बालक के तीसरे गुरु जी हैं विद्यालयों या पाठशालाओं के शिक्षक महोदय, जो विद्यालयों में छात्रों को कक्षा के क्रम से शिक्षा देते हैं। स्कूल या विद्यालयों के शिक्षकों में प्रथम स्थान प्राथमिक शिक्षक का है जो बालकों के चित्त में विद्यारूपी भवन की नीव जमाता है जिस पर विद्या भवन का निर्माण किया जाता है, इस शिक्षक को प्रारम्भ की कक्षाओं में बालकों को पढ़ाने में बहुत परिश्रम करना पड़ता है। दूसरे माध्यमिक शिक्षक कहे जाते हैं जो छठवीं कक्षा से आठवीं तक पढ़ाते हैं। तीसरे शिक्षक कहे जाते हैं जो नवमी कक्षा से ग्यारहवीं (मैट्रिक) तक पढ़ाते हैं। ये पूर्व कथित शिक्षक जब प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) प्राप्त करते हैं तब ये तीनों शिक्षक प्रशिक्षक (ट्रेण्ड मास्टर) हो जाते हैं। इससे ऊपर जो शिक्षक बी० ए०, शास्त्री आदि कक्षाओं का शिक्षण देते हैं वे उच्चतर शिक्षक कहे जाते हैं और जो एम० ए०, आचार्य आदि कक्षाओं की शिक्षा देते हैं वे उच्चतम शिक्षक या प्राध्यापक कहे जाते हैं। जो बी० ए०, ट्रेण्ड कहे जाते हैं और आचार्य या एम० ए० आदि कक्षाओं का जो प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) प्राप्त करते हैं वे विशिष्ट शास्त्री अथवा एम० ए० ट्रेण्ड कहे जाते हैं। जो शिक्षकों में प्रधान होता है वह प्रधानाध्यापक तथा प्राचार्य (प्रिन्सिपाल) कहा जाता है। जो अपने मुख्य विषय पर भाषण (स्पीच) देने का अधिकारी होता है वह प्रवक्ता कहा जाता है। विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के अन्य भी विशिष्ट पद होते हैं संस्कृत विभागाध्यक्ष आदि। जो शिक्षक किसी एक विषय पर शोधकार्य (रिसर्च) करता है वह विद्यावारिधि अथवा पी० एच० डी० पद से विभूषित होता है जिसको अंग्रेजी में 'डाक्टर आफ लिटरेचर' भी कहते हैं, इससे ऊपर भी अन्य डिग्री (उपाधि होती है जिसको शिक्षक प्राप्त करता है।

मानव का कथित विशाल शिक्षण या विद्या-भवन संस्कारों के बलपर ही खड़ा होता है, शिक्षा के साथ विनय सदाचरण अनुशासन, आत्मविश्वास, और स्वपर उपकार की भावना ये संस्कार मानव को बढ़ाते हैं और बनाते हैं। संस्कारों के बिना विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण तो हो जायेगा पर अविनयी दुराचारी और असभ्य हो जायेगा। इस कारण वह अपनी, देश तथा समाज की उन्नति नहीं कर सकता। नीतिकारों का उपदेश है—

विद्याददातिविनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥

तात्पर्य—विद्या (ज्ञान) विनय को देती है, विनय से मानव सुयोग्य एवं सभ्य हो जाता है, सुयोग्य हो जाने से धन आदि साधनों से सम्पन्न हो जाता है, साधन सम्पन्न व्यक्ति धार्मिक एवं नैतिक जीवन से सम्पन्न हो जाता है, और धार्मिक जीवन बन जाने से इस लोक और परलोक में सुख सम्पन्न,समर्थ एवं आदर्श जीवन को प्राप्त करता है।

इस पद्य के विवेचन से यह वृत्त सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान काल में, पूर्वकाल की गुरुकुल प्रणाली की तरह नैतिक एवं धार्मिक विषय (सदाचारादि) का शिक्षण होना आवश्यक है। वर्तमान में स्कूलों और विद्यालयों में प्रायः कर धार्मिक-नैतिक शिक्षण न होने से काम प्रायः अनुशासनहीन और असभ्य होता है वर्तमान में प्रायः शिक्षा तो उन्नति के शिखर पर जा रही है और सदाचार रसातल में जा रहा है यह महान् आश्चर्य है।

शासनाधिकारी महोदय तथा जनता, मान्य शिक्षक को गुरु की दृष्टि से देखें अर्थात् व्यवहार करें, किन्तु शिक्षक को नौकर चाकर की दृष्टि से न देखें। जब तक शिक्षक के प्रति समाज का आदर भाव न होगा, तब तक शिक्षा की गतिविधि लोक हितकारी नहीं हो सकती। शिक्षक महोदय को भी अपने चित्त में सर्विस (नौकरी) का भाव नहीं रखना चाहिये, अपितु लोक सेवा, देश सेवा और स्वपर कल्याण की भावना को सुरक्षित ही करना चाहिये।

अब विद्यार्थी के विषय में विशेष विचार करें कि विद्यार्थी तो विद्या का अर्थी है अर्थात् विद्या प्राप्ति का ही लक्ष्य वाला है, उसको ज्ञान प्राप्त करने के लिये ही विद्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्यास करना चाहिये, अपितु सर्विस, धन प्राप्ति, पूज्यता, डिग्री (पद), लोभ, और उत्तीर्णता मात्र के लिये नही पढ़ना चाहिये। विद्यार्थी को सदाचारी, अनुशासनबद्ध, परोपकारी और नैतिक होना चाहिये और शिक्षक को सेवाभावी, सदाचारी, पुरुषार्थी और छात्रों को सुशिक्षित करने में दृढ़ विश्वासी होना चाहिये, मात्र परीक्षा में उत्तीर्ण कराना ध्येय न हो। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनो के स्वस्थ रहने पर ही देश तथा समाज, योग्य शिक्षित और उन्नत हो सकता है। शिक्षा और समाज का घनिष्ठ योग है, उन दोनों का समान सम्बन्ध होना आवश्यक है। श्री १०८ आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने अपने उपदेश में अनेक बार यह घोषणा की है कि "साक्षर बनो किन्तु राक्षस न बनो।"

श्री स्व० महात्मा गांधी ने भी अपने लेखों और भाषणों में कहा था—"देश के बच्चे को साक्षर बनना चाहिये।"

शिक्षक और शिक्षार्थियों की सामूहिक ध्यान—
सब से प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में।
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है॥

—o—

दयाचन्द्र साहित्याचार्य
प्राचार्य
श्री गणेश दि० जैन संस्कृत महाविद्यालय
सागर म० प्र०/दि० ३।१।८५

—o—

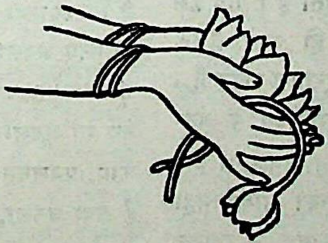

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"व्याख्यान-पद्धति"

डा० सुपार्श्व कुमार जैन

वर्तमान में दिगम्बर जैन समाज दो वर्गों में विभक्त है एक है, सर्वथा व्यवहारनय का अवलम्बन करने वाला वर्ग, जिसे व्यवहारवादी भी कहा जाता है और दूसरा है, सर्वथा निश्चयनय का अवलम्बन करने वाला जिसे निश्चय वादी भी कहा जाता है। निश्चयवादी वर्ग को प्रायः लोग सोनगढ़ आम्नायी के रूप में भी जानते हैं, यह वर्ग वर्तमान में विद्यमान मुनियों की उपेक्षा करता है। दूसरा व्यवहारवादी वर्ग स्वयं मुनिभक्त मानता है। दोनों ही एक दूसरे से विद्वेष भाव रखते हैं, उपेक्षात्मक दृष्टि से देखते हैं फलस्वरूप समाज का वातावरण विषाक्त बना हुआ है। दोनों वर्गों के बीच यदा-कदा पारस्परिक-विवाद, झगड़े और अदालती कार्यवाहियाँ भी होती रहती हैं। यदि हम निष्पक्ष रूप से विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों ही वर्ग अपने पक्ष के प्रति एकान्त दुराग्रह रखते हैं। इसका कारण यह है कि हमने भगवान सर्वज्ञदेव के अनेकान्त दृष्टिकोण को न समझा है और न समझाया है। अपने व्यावहारिक जीवन में भी हमने इसका आश्रय नहीं लिया। यदि वक्ता एकान्त के प्रति दुराग्रह न रखकर अनेकान्त का आश्रय लेकर कथन करे और श्रोता भी वक्ता के कथन को अनेकान्तदृष्टि से समझे तो विवादों का निराकरण स्वतः हो जाता है।

व्याख्यान पद्धति की द्विविधता

व्याख्यान की पद्धति दो प्रकार की है एक आगम पर आश्रित होने के कारण आगम-पद्धति और दूसरी अध्यात्म पर आश्रित होने के कारण अध्यात्म-पद्धति हमें दोनों का अर्थ और अन्तर स्पष्ट समझ लेना चाहिए और इस प्रकार सम्यक्त्व, जो सहजसाध्य है, की प्राप्ति कर स्वहित को सिद्ध करना चाहिये।

आचार्य जिनसेन के अनुसार जिसमें अभेद रत्नत्रय के प्रतिपादक अर्थ और पदार्थों का व्याख्यान किया जाता है उसको अध्यात्मशास्त्र कहते है। वीतराग सर्व प्रणीत छः द्रव्यों आदि का सम्यक् श्रद्धान सम्यक्ज्ञान तथा व्रतादि के अनुष्ठान रूप रत्नत्रय के स्वरूप का जिसमें प्रतिपादन किया जाता है उसको अध्यात्मशास्त्र कहते हैं।[1] स्पष्ट है कि द्रव्य या रत्नत्रय आदि का अभेद रूप से व्याख्यान किया जाता है वह व्याख्यान की आगम-पद्धति कहलाती है। अध्यात्मशास्त्र में चूकि शुद्धद्रव्य का कथन होता है इसलिए अवलम्बन लिया जाता है और आगमशास्त्र में चूंकि अशुद्धद्रव्य का कथन होता है इसलिये वहाँ व्यवहार-नय का अवलम्बन लिया जाता है। समयसार, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार एवं परमात्मप्रकाश आदि अध्यात्मशास्त्र हैं तथा धवला, जयधवल, महाधवल एवं गोमटूटसार आदि आगमशास्त्र हैं। जब व्याख्यान की अध्यात्म-पद्धति अपनाई जाती है, तब आत्मा को पूर्ण शुद्ध कहा जाता है। शुद्धनय आत्मा में परद्रव्यजनित वैभाविक भावों को स्वीकृत नहीं करता, वह अपने ही गुण व पर्यायों के साथ भेद भी स्वीकार नहीं करता। अध्यात्म पद्धति में यह जीव नो कर्म, द्रव्यकर्म और तज्जनित भावकर्म से पृथक सिद्ध होता

१. आचार्य कुन्दकुन्द पंचास्तिकाय ता० वृ० १७३ २५५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। आत्मा सम्यक्दर्शन है, सम्यक् ज्ञान है, सम्यक्चरित्र है यह भेदात्मक कथन आगम-पद्धति से तो उचित है, किन्तु अध्यात्मकशास्त्र पद्धति से नहीं, क्योंकि आत्मा रत्नत्रय स्वरूप ही है ऐसा अभेदात्मककथन ही इस पद्धति को मान्य है। अध्यात्म पद्धति मे जैसे दर्पण अपने में प्रतिबिम्बित मयूर से पृथक् है, वैसे ही आत्मा भी अपने में प्रतिबिम्बित ज्ञेय पदार्थों से पृथक् है और जैसे दर्पण अग्निज्वाला को प्रतिबिम्बत करता हुआ भी तज्जन्यताप से पृथक् है, वैसे ही आत्मा कर्मोदय के फलस्वरूप सुख-दुःख आदि अनुभव से पृथक ही है। इसलिए आत्मा ज्ञानानन्द स्वभावी एक अखण्ड, अरूपी, अस्पर्शी, अवर्णी, अगंधी, अबद्ध, अस्पृष्ट आदि है।

इसके विपरीत आगम पद्धतियों में आत्मा को गुण, पर्यायों व ज्ञेय कार के आधार पर खण्ड खण्ड करके अनेक विध बतलाया जाता है [तथा कर्मोदय से हुए सुख-दुःख आदि का अनुभव भी करता है। इस आधार पर आत्मा अनेक बद्ध स्पृष्ट अन्य रूपी स्पर्शी आदि भी कहा जाता है।

दोनों ही कथन पद्धति अलग-अलग नय पर आधारित है इनमें से जो मात्र एक ही नय का या पद्धति का आश्रय लेकर व्याख्यान करता या जानता है और दूसरे की पूर्ण उपेक्षा करता है, वह एकान्तवादी मिथ्यादृष्टि कहलाता है अब आप समझ गये होंगे कि जो व्यवहारवादी या निश्चयवादी हैं वे एकान्त वाद का ही पोषण करते हैं, अतः एकान्तवादी मिथ्यादृष्टि हैं जब दोनों कथन-पद्धति या नय का आश्रय लिया जाता है। तब एकान्त का उदय होता है और तभी सम्यग्दृष्टि माना जाता है। इस प्रकार अनेकान्त की दृष्टि में यह आत्मा एक अनेक, अन्य-अनन्य, वद्ध अबद्ध, अस्पृष्ट, शुद्ध-अशुद्ध, सम्पृक्त-असम्पृक्त आदि कहा है प० जयचन्दजी कहते हैं तहां सामान्य विशेषकरि सर्व पदार्थनिका निरूपण करिये है, सो आगमरूप पद्धति है बहुरि जहाँ एक आत्मा के ही आश्रय निरूपण करिये सो अध्यात्म है।1 स्पष्ट है कि द्रव्यों का सामान्य विशेषात्मक कथन तो आगम पद्धति के अनुसार होता है और जब सिद्ध समान शुद्धात्मा का कथन किया जाता है वह अध्यात्म पद्धति है पं० बनारसीदास जी परमार्थ-वचनिका में कहते हैं द्रव्य तो पुद्गल कर्मो : के परिणाम हैं और भावरूप पुद्गलाकार आत्मा की अशुद्ध परिणति रूप परिणाम है यह दोनों परिणाम आगम रूप स्थापे। द्रव्यरूप तो जीवत्व : सामान्य परिणाम है और भावरूप, ज्ञान, दर्शन, सुख वीर्य आदि अनन्तगुण विशेषः परिणाम है यह दोनों परिणाम अध्यात्म रूप जाने।

वक्ता और श्रोता का यह कर्कव्य है कि इन दोनों पद्धति को समझ कर ही व्याख्यान करें, जिससे किसी तरह की आशंका उत्पन्न ही न हो सके। जहाँ प्रबुद्ध श्रोता न हों, वहाँ दोनों आगम व अध्यात्म, ही पद्धति का आश्रय लिया जाना चाहिए क्योंकि व्यवहार परमार्थ का प्रतिपादक होता है और बिना व्यवहार व्यवहारीजनों के लिए परमार्थ को समझाया नहीं जा सकता।

सम्यग्दर्शन की अपेक्षा अन्तर

सम्यग्दर्शन की विभिन्न परिभाषायें है जैसे प्रथम संवेग आस्तिक्य व अनुकम्पा की प्रकटता ही जिसका लक्षण है उसको सम्यक्त्व कहते है, निज शुद्धात्मतत्त्व ही उपादेय है ऐसी रुचि को सम्यक्त्व कहते है तत्वार्थ श्रद्धान को सम्यक्त्व कहते हैं और तत्व-रुचि को सम्यग्दर्शन कहते है। ये सभी कथन सही है हमें सिर्फ नय और व्याख्यानपद्धति के अनुसार समझना चाहिए। पहिले दो कथन शुद्ध या निश्चय नय तथा अध्यात्म पद्धति की अपेक्षा कहे गये हैं और अन्तिम दोनों कथन अशुद्ध और अशुद्धतर नय या व्यहारनय तथा आगमपद्धति के अनुसार कहें गये हैं द्रव्यसंग्रह के टीकाकार कहते हैं परमागम भाषा से पच्चीस दोषों से रहित सम्यग्दर्शन और अध्यात्म भाषा से निज शुद्धात्मा ही उपादेय है इस प्रकार जो रुचि है रुचि है रूप सम्यत्क्व की भावना ही मुख्य है ऐसा जानना चाहिए।2 इतना विशेष है कि व्यवहारसम्यक्त्व सच्चा सम्यक्त्व नही हैं निश्चयसम्यक्त्व ही सच्चा सम्य-

१. सूत्रपाहुण। टी०।६।५४
२. वही, ३८।१३६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्त्व है। इस बन्धन में एकान्त भी नहीं है क्योंकि अनेकान्त गर्भित एकान्त भी अनेकान्त ही माना जाता है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं समझना कि व्यवहारसम्यक्त्व मिथ्या है। अपितु यह समझना कि जब तक यथार्थ ज्ञान श्रद्धान रूप सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं हुई तब तक व्यवहा-मार्ग में प्रवृत्त होना प्रयोजनवान हैं। आ० कुन्दकुन्द के शब्दों में जो परमभावदर्शी अर्थात् जो शुद्धनय में पहुंच कर श्रद्धावान और पूर्ण ज्ञान-चारित्रवान हो गये है, उन्हें तो शुद्धनय का उपदेशक शुद्धनय जानने योग्य है और जो जीव अपरमभावदर्शी हैं उन्हें व्यवहार द्वारा उपदेश करना योग्य है१ यहां पं० जयचन्द जी का यह कथन सामायिक है-व्यवहारनय को कथंचित असत्यार्थ कहा गया है, यदि कोई उसे सर्वथा असत्यार्थ जान कर छोड़ दे तो शुभोपयोगरूप व्यवहार छोड़ दे और चूंकि शुद्धोपयोग की साक्षात प्राप्ति नहीं हुई इसलिये उल्टा अशुभोपयोग में ही आकर भ्रष्ट हुआ, यथार्थचित स्ववेच्छा रूप प्रवृत्ति करेगा तब नरकादि तथा परम्परा से निगोद को प्राप्त होकर संसार में ही भ्रमण करेगा। इस कारण साक्षात शुद्धनय का विषय जो शुद्धात्माह, उसकी प्राप्ति जब तब न हो तब व्यवहार भी प्रयोजनवान है। ऐसा स्याद्वादमन में श्रीगुरुओं का उपदेश है।२

इस प्रकार आगम व अध्यात्म पद्धति में अन्तर समझना चाहिए। परमागम करणानुयोग की दृष्टि से तो जब मिथ्यात्व और अनन्तानुबंधी कषाय का अथवा मिथ्यात्व, सम्यक्त्व—मिथ्यात्व एवं सम्यक्त्व—प्रकृति व चार अनंतानुबंधी कषाय का क्षय या उपशम अथवा क्षयोपशम होता, है तब सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है, इससे पूर्व नहीं। किन्तु देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति—पूजादि में संलग्न रहने के कारण उपचार से सम्यग्दर्शन कहा जाता है, इसमें कोई दोष नहीं आता। हां, वह केवल पुण्यबंध का कारण होता है, मुक्ति का नहीं। कहा भी है—"अध्यात्मभाषा में शुद्धात्मा की भावना के बिना और आगमभाषा से वीतराग सम्यक्त्व के बिना व्रत दानादिक पुण्यबन्ध के ही कारण हैं, मुक्ति के कारण नहीं हैं।३

चारित्र की अपेक्षा अन्तर—"

व्रत, समिति, गुप्ति आदि का पालन व्यवहार-चारित्र है और निज शुद्धात्मा में ही चरण करना सो निश्चय-चारित्र है पहिला कथन परमागम की अपेक्षा है और दूसरा कथन अध्यात्मशास्त्र की अपेक्षा है। इन दोनों में कारण-कार्य या साधक-साध्य का सम्बन्ध है। आ० कहते हैं—":अध्यात्मभाषा से: निज शुद्धात्मा की संवित्ति रूप अनुचरण स्वरूप, परमागम भाषा से वीतराग परम सामायिक नाम के स्वचारित्र को चरता है, अनुभव करता है४।" आचार्य अमृतचन्द्रजी कहते हैं—"चरण :चारित्र: द्रव्यानुसार और द्रव्य चरणानुसार होता है, इस प्रकार वे दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। इसलिए या तो द्रव्य का अर्थात् अंतरंग प्रवृत्ति का आश्रम लेकर अथवा चरण का अर्थात् बाह्यनिवृत्ति का आश्रय लेकर मुमुक्षु मोहमार्ग का आरोहण करो५।' यहां विशेष जानना कि द्रव्यचारित्र से ही भावचारित्र की प्राप्ति होती है। द्रव्यचारित्र के बिना मोक्ष की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। यह अवश्य है कि द्रव्यचारित्र धारण करने पर मोक्ष की प्राप्ति हो या न हो, जैसे कारण के होने पर कार्य की सिद्धि हो या न हो, किन्तु कार्य की सिद्धि कारण के होने पर ही होगी। "प्रश्न-व्रत से क्या प्रयोजन, भावनामात्र से ही मोक्ष हो जायेगी. क्या भरतेश्वर ने व्रत धारण किये थे? उसे दो घड़ी में बिना व्रतों के ही मोक्ष हो गयी? उत्तर--भरतेश्वर ने भी व्रत अवश्य धारण किये थे, पर स्तोक काल होने से उसका पता न चला। प्रश्न—तब तो हम भी मरण समय थोड़े काल के लिए व्रत धारण कर लेंगे? उत्तर—यदि किसी अन्धे को किसी प्रकार निधि का लाभ हो जाए, तो क्या सबको हो जाएगा६।" इस प्रकार द्रव्य या व्यवहारचारित्र के बिना भावचारित्र के बिना मोक्ष की सिद्धि नहीं हो सकती। फिर भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि "चारित्र से श्रुत की प्रधानता है क्योंकि श्रुतज्ञान के बिना चारित्र की उप-

---

१. समयसार १२
२. समयसार। भावार्थ। १२/२६
३. समयसार/ता०वृ/१४५/२०८
४. पंचास्तिकाय/ता०वृ/१५८/२२७
५. प्रवचनसार/आ०/२००/कलश१२
६. परमात्मप्रकाश/टी/२/५२/१७४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लब्धि नहीं होती[1]।" आ०कुन्दकुन्दजी कहते हैं—"जो ज्ञानी अमूढदृष्टि होकर सम्यक्त्वाचरण चारित्र से शुद्ध होते हैं, वे यदि संयमाचरण चारित्र से भी शुद्ध हो जायें तो शीघ्र ही निर्वाण को प्राप्त होते हैं[2]।" इस प्रकार स्पष्ट है कि आगमचारित्र और अध्यात्मचारित्र दोनों ही पारस्परिक पूरक हैं, विरोधी नहीं। जो इन्हें पारस्परिक विरोधी मानकर एक को हेय और दूसरे को सर्वथा उपादेय कहते हैं, वे मिथ्यादृष्टि हैं।

भावों की अपेक्षा अन्तर—

आ० जयसेन का कथन—"आगमभाषा से औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिक तीन भाव कहे गये हैं और अध्यात्मभाषा में शुद्धात्मा के अभिमुख परिणाम, शुद्धोपयोग आदि पर्याप्त नाम को प्राप्त होते हैं[3]।" 'द्रव्यसंग्रह के टीकाकार ब्रह्मदेव कहते हैं—"आगमभाषा से···भव्यत्व नामक पारिणामिक भाव से सम्बन्ध रखने वाली व्यक्ति या प्रकटता कही जाती है और अध्यात्मभाषा में उसी कोद्रव्य-शक्ति रूप पारिणामिक भाव के विषय में भावना कहते हैं अन्य पर्याय नामों से इसी द्रव्यशक्ति रूप पारिणामिक भाव की भावना को निर्विकल्पध्यान तथा शुद्धोपयोग आदि कहते हैं[4]।" इस प्रकार स्पष्ट है कि सम्यग्दृष्टि आत्मा को शुद्धोपयोगी, निर्विकल्पध्यानी आदि कहा जाता है तो वहां अध्यात्मपद्धति की दृष्टि से कथन किया जाता है। और जब पांच भावों की अपेक्षा कथन होता है तो वहां आगम पद्धति की दृष्टि होती। हमें इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ही समझना/समझाना चाहिए।

विधियों की अपेक्षा अन्तर—

लब्धियाँ पांच होती है—क्षयोपशमलब्धि, विशुद्धिलब्धि, दर्शनलब्धि, प्रायोगलब्धि और करणलब्धि। करण तीन प्रकार के होते हैं—अधःप्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण। प्रथम चार लब्धि तो भव्य और अभव्य के समानरूप से होती हैं, किन्तु करणलब्धि भव्य के ही होती है। जब जीव अनिवृत्तिकरणलब्धि के अन्तिम समय में पहुंचता है तो उसके मिथ्यात्व के तीन टुकड़े हो जाते हैं और उसे सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है—यह आगम पद्धति है। और जब जीव शुद्धात्मतत्व को जान कर निज शुद्धात्मतत्व का स्वसंवित्ति प्रतीति करता है, तब उसे सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है—यह अध्यात्मपद्धति है। जब सम्यक्त्व की उपलब्धि होती है, तब दोनों ही पद्धति सापेक्ष होती हैं। काललब्धि में पांचों ही लब्धियां गर्भित होती है। इसलिए जब यह कहा जाता है कि काललब्धि आने पर सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई, तब वहां पंचलब्धि और निजशुद्धात्मतत्व की प्रतीति यह सब कार्य भी यथोक्त समय में ही होते हैं। इनसे निरपेक्ष काललब्धि कोई नहीं है। इन्द्रभूति ब्राह्मण जब समवशरण में गया, तब मान स्तम्भ को देखते ही उसका मान गलित हो गया और उसी समय उसकी काललब्धि आ गई थी, आगमभाषा में उसके दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय का क्षयोपशम हुआ तथा अध्यात्मभाषा में उसके निजशुद्धात्मतत्व के प्रति परिणाम हुए। यह सब कथन सापेक्ष है, निरपेक्ष नहीं। आगमभाषा में उसके परिणाम निरन्तर विशुद्ध होते रहने के कारण वह गुणस्थान की परिपाटी क्रम से ऊपर-ऊपर चढ़ता हुआ क्रमशः निर्वाण को प्राप्त होता है और अध्यात्म भाषा में आत्मतत्व रूप परिणामों के बल से वह एक दिन सब वैभाविक भावों को जोड़कर निज स्वभाव भाव को प्राप्त कर लेता है। आ० जयसेन कहते हैं—" जब यह जीव आगम भाषा से कालादि लब्धि रूप और अध्यात्मभाषा में अध्यात्मभाषा से शुद्धात्माभिमुख परिणामरूप स्व संवेदन ज्ञान को प्राप्त करता है तब····सराग सम्यग्दृष्टि होकर पराश्रित धर्मध्यान की बहिरंग सहकारि कारण रूप जो अनन्त ज्ञानादि स्वरूप' मैं हूं इत्यादि भावना स्वरूप आत्माश्रित धर्मध्यान को प्राप्त करके आगम कथित क्रम से शुक्ल ध्यान को अनुभव करते हुए··भाव मोक्ष को प्राप्त करता है[5]।"

---

१. धवला, १३/५, ५, ५०/२८८
२. चारित्रपाहुण, गा० ९
३. समयसार/ता२वृ/३२०/४०८
४. द्रवयसंग्रह/टी०/ अधि० २ की चूलिका/७२
५. पंचास्तिकाय/ता०वृ०/ १५१/ २१७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान की अपेक्षा अन्तर—

मन का निजात्मतत्व के प्रति एकाग्र होना अथवा किसी भी द्रव्य या उसके गुण, शब्द या अर्थ आदि पर एकाग्रचित्त होना ध्यान कहलाता है। इसे ही अध्यात्म और आगम पद्धति के रूप में भी ध्यान कहा जाता है। आगम भाषा में ध्यान चतुर्विधि है—आर्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल ध्यान, जबकि अध्यात्मभाषा में कोई भेद नहीं हैं। इसके अनुसार नो आत्मा का आत्मा में रमण करना ही ध्यान है। ब्रह्मदेव के अनुसार—"आगमभाषा के अनुसार उसी ध्यान के अनेक भेदों को कहते हैं···अध्यात्मभाषा से सहज—शुद्ध—परम—चैतन्यशाली तथा परिपूर्ण आन्नद का धारी भगवान निज आत्मा में उपादेयबुद्धि करके फिर मै अन्नतज्ञानमयी हूं, मैं अनन्त सुखरूप हूं इत्यादि भावनारूप अन्तरंग धर्मध्यान है···उसी प्रकार चिजशुद्धात्मा में विकल्प रहित समाधि शुक्लध्यनान है[१]।"

ध्यानों में से प्रथम दो आर्तध्यान और रौद्र ध्यअशुभ यान हैं इनसे सदैव बचना चाहिए। तथा बाद के में दो धर्मध्यान और शुक्लध्यान शुभ हैं इन ध्यानों को ही सदैव अनुभवना चाहिए। चिन्तन के विषयों की अपेक्षा इन दोनों मे कोई कोई भेद नहीं है। अन्तर केवल इतना है कि धर्मध्यान एक वस्तु में स्तोक काल तक रहता है और शुक्लध्यान अधिक काल तक। परमागम की दृष्टि से धर्मध्यान कषाय सहित जीवों के होता है और शुक्लध्यान कषाय रहति जीवो के। इस अपेक्षा से धर्मध्यान का अवस्थान चौथे से दसमें गुणस्थान तक होता है[२]। किन्तु जहां तक अध्यात्म की दृष्टि का प्रश्न है, धर्मध्यान का अवस्थान चौथे से सातवें पुणस्थान तक होता है क्योंकि यहां तक बुदिधिपूर्वक राग पाया जाता है और सातवे गुणस्थान से ऊपर शुक्लध्यान का प्रथम पाया प्रारम्भ होता है क्योंकि वहां बुद्धिपूर्वक राग नहीं पाया जाता।

इस प्रकार हमें व्यख्यान करते समय आगम और अध्यात्म पद्धति का ध्यान रखना चाहिए, इससे न तो श्रोता को कोई गलतफहमी होगी और न वक्ता के कथन पर कोई आशंका खड़ी होगी। फलस्वरूप निरर्थक वादविवाद से बचा जा सकेगा। ध्यान रहे कि एकान्त से कुछ घटित नहीं होता और अनेकान्त मत में कोई विरोध नहीं आता। इति।

जैन कालेज टीचर्स कालोनी
नेहरू रोड, बड़ोत—२५० ६११

---

१. द्रव्यसंग्रह/टी०/४८/१७४, १७७
२. देखिए धवला १३/५,४, २६/७४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

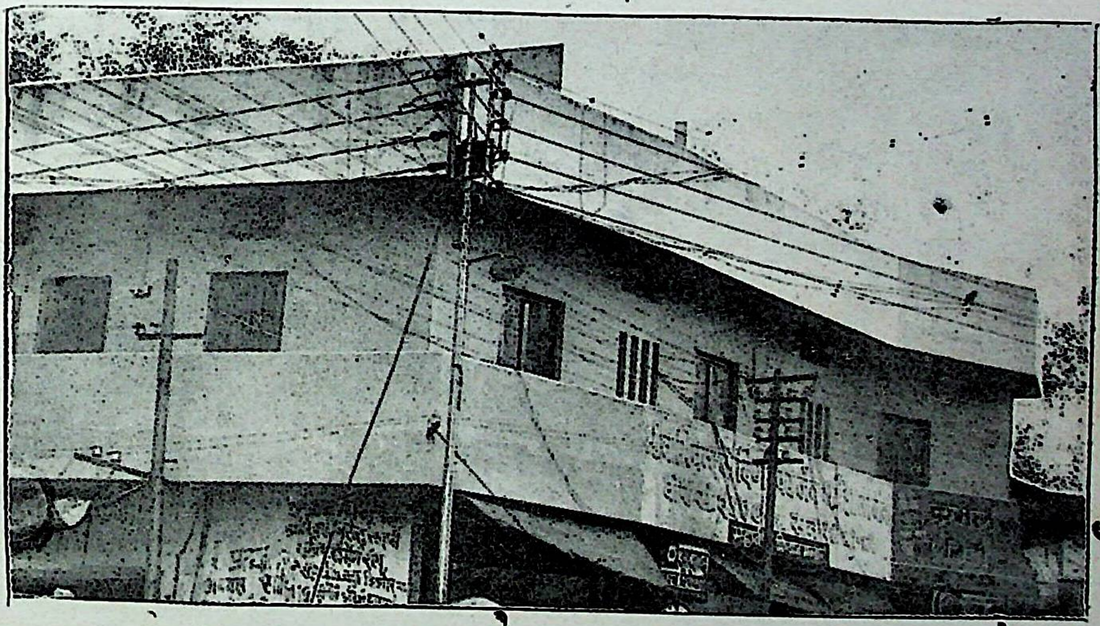

नवनिर्मित श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन धर्मशाला भवन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्था का लेखा-जोखा

—बिमलकुमार सराफ साहित्यरत्न
मंत्री-श्री ना० नं० दिग० जैन हितो० सभा
बीना (म० प्र०)

भारत के हृदय स्वरूप मध्यप्रदेश का बुन्देलखण्ड प्राकृतिक दृष्टि से एक सुरम्य रमणीक एवं इतिहास प्रसिद्ध भाग है। सागर जिले का बीना नगर इसी बुन्देलखंड की शस्य श्यामला पावन भूमि में स्थित है। बीना शनैः शनैः समृद्ध और वृद्धिगत हुआ है। इसका प्राचीन नाम 'इटाय' है। जो धीरे-धीरे 'इटावा' हुआ। अंग्रेजों के आगमन के बाद रेलों के विस्तार के समय बीना नदी की निकटता के फलस्वरूप स्टेशन का नामकरण 'बीना' किया गया। उसके बाद स्टेशन का नाम बीना और बस्ती का नाम इटावा प्रचलित रहा। धीरे-धीरे यह बीना इटावा सम्मिलित रूप से जाना जाने लगा। कालान्तर में मूल ग्राम इटावा बीना शहर का एक भाग बन गया। समूचे शहर को अब बीना नाम से ही जाना जाता है।

इटावा (बीना) कस्बे की प्राचीनता के परिचायक अनेक प्रमाण हैं जिनमें प्रशस्तियां लेख, शिला-लेख व पुरातत्वीय महत्व की प्राचीन मूर्तियां भी हैं। यहां के श्री दिग० जैन मंदिर में वि०सं० ११३७ तक की प्राचीन मूर्तियां हैं। जो इटावा बस्ती के उस काल में अस्तित्व को परिचायक हैं। इससे इसकी लगभग १०००-९०० वर्ष की प्राचीनता प्रमाणित होती।

संस्था के पचास वर्षीय जीवन का लेखा जोखा—

सोलहवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'ग्रन्थमाला' में 'इटाये' नामक गांव का उल्लेख हुआ है जो संभवतः इटावा का ही नाम है। श्री दिग. जैन मंदिर में चौदहवीं-पन्द्रहवीं सदी की प्रतिमाओं का अस्तित्व एवं बहुलता से प्रमाणित है कि इस समय तक इटावा में जैनियों की अच्छी संख्या थी। अतः निश्चित रूप से मंदिरजी व्यवस्था करने के लिए कोई न कोई व्यवस्था बनाई गई होगी ?

विक्रम सं० १९१५-१६ में वर्तमान जैन मंदिर का निर्माण एवं विस्तार हुआ तब यहां 'जैन हितोपदेशिनी सभा' के नाम से मंदिर जी की संपत्ति की व्यवस्था होती थी मुंहत्तिमकारों की नियुक्ति की जाती थी जो समस्त कार्य करते थे। सं० १९६३ में इस सभा के अंतर्गत संस्कृत पाठशाला की स्थापना की गई। श्री साव नाथूराम जी ने इटावा का डाकखाने वाला मकान, बीना बजरिया की ६० डिसमिल भूमि व बंगला तथा ग्राम दुरदुरू की पट्टी दान में दी इससे आर्थिक संबल प्राप्त हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस समय निम्न व्यक्तियों को मुहत्तिमकार नियुक्त किया गया था।

(१) श्री साव नाथूराम जी, संस्थापक
(२) श्री दौलत बल्द ललनजू कठरया
(३) श्री सि. परमानंद बल्द रामचंद जी
(४) श्री मूलचंद बल्द फुन्दीलाल कठरया
(५) श्री खुमान बल्द सरू कठरया

इसके बाद सं० १९९८ में मंदिर तथा पाठशाला की उचित व्यवस्था एवं देखभाल हेतु निम्न समिति गठित की गई—

(१)	श्री साव नाथूराम जी	सस्थापक
(२)	श्रीमन्त सेठ मोहन लाल जी खुरई	संरक्षक
(३)	श्री बुखारिया मूलचंद जी	सभापति
(४)	श्री सिंघई परमानंद जी	उप सभापति
(५)	श्री कठरया दौलत राम जी	मंत्री
(६)	श्री माणिक्यचन्द्र जी	सहा० मंत्री
(७)	श्री मूलचद जी	कोषाध्यक्ष
(८)	श्री मोदी मनराखनजी	अधिष्ठाता
(९)	श्री कठरया नन्हें लाल जी	हिसाब निरीक्षक
(१०)	श्री सि. दमरूलाल जी	,, ,,
(११)	श्री नायक सुखलाल जी	,, ,,
(१२)	श्री सराफ हजारीलाल जी	,,
(१३)	श्री रोकड़या पूरनचंद जी	,, ,,
(१४)	श्री सराफ मोतीलाल जी	परीक्षक
(१५)	श्री बुखारिया दामोदरदास जी	सुपररिन्टेन्डेन्ट

इसी तरह काम चलता रहा। इसी बीच कई कानूनी अड़चनें सामने आने लगीं। मुहत्तिमकारों के बीच कार्य एवं अधिकारों का भी बँटवारा नहीं था। अतः समस्त जैन समाज बीना की एक आम बैठक बुलाई गई एवं कई बैठकों के बाद यह निश्चित किया गया कि भारत सरकार के कानून क्रमांक २१ सन् १८६० के अन्तर्गत एक 'कानूनी निकाय' बनाया जाये जिसे जैन मंदिर और पाठशाला की संपत्ति सुपुर्द कर दी जावे तथा समिति के दिशा निर्देश हेतु एक नियमावली भी बनाकर उसकी रजिस्ट्री करा ली जावे।

उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु श्री पन्नालाल जी चौधरी ने श्री नन्हेलाल जी बुखारिया की मदद से एक नियमावली बनाई जिसे मामूली परिवर्तन के साथ जैन समाज ने माननीय स्व० सि. श्री नंदलाल जी की अध्यक्षता में अपनी बैठक दि. ९-२ १९३५ में स्वीकृत किया एवं इसी विधान के अंतर्गत श्री नाभि. दि. जैन हितो० सभा का वर्तमान स्वरूप दि. १०-२-१९३५ से अस्तित्व में आया। उक्त सभा को भारत सरकार से सोसाइटी एक्ट में रजिस्टर्ड कराया गया जिसका क्रमांक सन् १९३५ है। उक्त संस्था के मुख्य निम्न उद्देश्य निश्चित किये गये—

(१) पाठशाला के द्वारा दिगम्बर जैन धर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान और लौकिक शिक्षा देना।
(२) स्थानीय जनता में वाचनालय के जरिये धार्मिक व लोकोपयोगी ज्ञान बढ़ाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) औषधालय के द्वारा रोगी मनुष्यों की चिकित्सा कराना।

(४) श्री मंदिर जी के द्वारा समाज में धा्मिक प्रचार-प्रसार करना व जाग्रति लाना।

विधान के नियमों के अनुसार समस्त सपत्ति का प्रबंध एवं व्यवस्था ३१ सदस्यीय सभा करेगी जिसका चुनाव व्रत भंडार देने वाली जैन जनता द्वारा ६ वर्ष को हुआ करेगा तथा यह साधारण सभा ११ सदस्यीय प्रबंधकारिणी कमेटी (शासी निकाय) का चुनाव ३ वर्ष को करेगी। प्रबधकारिणी व सभा के ५ पदाधिकारी होंगे।

सभापति	उपसभापति	मंत्री	उपमंत्री
१	२	१	१

विधान के नियम न० १० के अंतर्गत मंत्री को विस्तृत अधिकार दिये गये। उसे संस्था की तरफ से भारत के किसी भी भाग में वाद प्रस्तुत करने का भी अधिकार दिया गया है। संस्था की नियमावली के अनुसार फरवरी १९३५ में चुनाव हुये जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी व सदस्य चुने गये।

(१)	श्रीयुत सिंघई श्री नंदलाल जी	सभापतपि
(२)	,, ,, आनंद कुमार जी	उपसभापति
(३)	,, कठरया मानक चंद जी	,,
(४)	,, सराफ फूलचंद जी	मंत्री
(५)	,, चौधरी पन्नालाल जी	सहायक मंत्री
(६)	,, कठरया मोती लाल जी	सदस्य प्रबंधकारिणी
(७)	,, कठरया दमरू लाल जी	,, ,,
(८)	,, पं० धर्मदास जी	,, ,,
(९)	,, बुखारिया नन्हें लाल जी	,, ,,
(१०)	,, मोदी मनराखन जी	,, ,,
(११)	,, नायक मुन्ना लाल जी	सदस्य सभा
(१२)	,, भायजी गटोले लाल जी	,, ,,
(१३)	,, कठरया बिहारी लाल जी	,, ,,
(१४)	,, नायक धन्ना लाल जी	,, ,,
(१५)	,, चौधरी बट्टूलाल जी	,, ,,
(१६)	,, पुजारी नन्हें लाल जी	,, ,,
(१७)	,, सिंघई भैयालाल जी	,, ,,
(१८)	,, भायजी गुलझारी लाल जी (मोतीलाल)	,, ,,
(१९)	,, सराफ भैयालाल जी	,, ,,
(२०)	,, घिया खेमचंद जी	,, ,,
(२१)	,, बिहारी लाल जी लायरे वाले	,, ,,
(२२)	,, बड़कुल मन्नूलाल जी	,, ,,
(२३)	,, भायजी गुलझारी लाल जी (अड़कूलाल)	,, ,,
(२४)	,, चौधरी सवाई लाल जी	,, ,,
(२५)	,, बाबू मुन्ना लाल जी	,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२६)	श्री०	कठरया पन्नालाल जी	सदस्य सभा
(२७)	,,	कठरया लालचंद जी	,, ,,
(२८)	,,	भैयालाल जी भौंरदा वाले	,, ,,
(२९)	,,	कठरया बालचंद जी	,, ,,
(३०)	,,	पन्नालाल जी मृगावली वाले	,, ,,
(३१)	,,	मनोहर लाल जी मुनीम	,, ,,

इसी बीच सन् १९५९ में म० प्र० सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम लागू हो गया एवं पूर्व में पंजीकृत संस्थायें इस अधिनियम में रजिस्टर्ड मानी गई।

इसके उपरान्त सन १९४१, १९४७, १९५३, १९५९, १९६५, १९७१, १९७७ एवं १९-६-१९८३ (चार्ज १४-८-१९८३) को साधारण सभा के चुनाव सम्पन्न हुये एवं साधारण सभा द्वारा प्रबंधकारिणी कमेटी के चुनाव कराये गये। सन १९५१ में म०प्र० सार्वजनिक न्यास अधिनियम लागू किया गया। उस समय यह कानून इतना स्पष्ट नहीं था। अतः इस संस्था को इस अधिनियम में भी पंजीकृत करा लिया गया एवं इसका क्रमांक ५३-ख है। सन् १९३५ से सभा के अध्यक्ष एवं मंत्री का कार्यकाल निम्न प्रकार से रहा।

सभापति

१—श्री सिं० श्री नंदनलाल जी—१९३५ से १९४३
२—श्री कठरया पन्नालाल जी—१९४३ से १९४४
३—श्री बुखारिया नन्हेलालजी—१९४४ से १९४६
—,, सिं. आनंदकुमारजी—१९४७ से १९५२
५—,, वाबू मूलचंदजी—१९५३ से १९५९
६—,, सिं. श्री नंदनलालजी—१९६० १९६२
७—,, सिं. आनंद कुमार जी—१९६२ से १९७१
८—,, सिं. राजकुमार जी १९७१ से १९७४
९—,, लक्ष्मी चंद जी—१९७४ से १९७५
१०—,, सिं. श्री नंदनलाल जी—१९७५ से १९७७
११—,, राजेन्द्र कुमार जी—१९-८-७७ से वर्तमान में भी

मंत्री

१—श्री सराफ फूलचंद जी—१९३५ से १९३८
२—,, नन्हेलाल जी बुखारिया—१९३८ से १९४२
३—,, पं० वंशीधरजो व्याकरणाचार्य—१९४३ से १९४४
४—,, सिं. भैयालालजी—१९४४ से १९४५
५—,, गुलझारी लाल जी भायजी—१९४५ से १९४८
६—,, शाह अमृतलाल जी—१९४७ से १९५३
७—,, पं० वंशीधर व्याकरणाचार्य—१९५३ से १९६७
८—,, सराफ बट्टूलाल जी—१९६८ से १९६९
९—,, सिं. भैयालाल जी—१९७० से १९७१
१०—,, नन्हेंलाल बुखारिया—+१९७१ से १९७३
११—,, सराफ गुलाबचंद जी—१९७३ से १९७६
१२—,, शाह खूबचंद जी—१९७६ से १९७८
१३—,, देशदिवाकर जी—१९७९ से १९८०
१४—,, सराफ विमलकुमार जी—२७-५-८० से वर्तमान में भी

पूर्व में संस्था के सभी कार्य काफी सदभावना एवं मिलजुल कर होते थे। समय-समय पर चुनावों में द्विदलीय प्रणाली प्रारम्भ हो गई। महिलायें भी व्रतभंडार देकर मतदाता बनने लगीं। सन १९७१ के चुनावों में काफी कटुता उत्पन्न हुई, सिं. राजकुमार एवं नन्हेंलाल जी बुखारिया ने सिं. आनंद कुमार एवं पं० वंशीधर, अमृतलाल की पार्टी को चुनाव में हराया। पराजित पार्टी की तरफ से चुनाव याचिका दायर की गई जो खारिज हुई पर चुनाव के परिणाम को सभी पक्षों ने सहर्ष स्वीकार किया।

नवीन चुनाव अगस्त १९८३ में होने से पूर्व ही मई ८३ में सिं. अभयकुमार, कोमलचद, बुखारिया एवं शाह खूबचंद ने धारा २६ लोकन्यास अधिनियम के अंतर्गत आवेदन देकर चुनाव की मांग करते हुये आवेदन दिया कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चुनाव होने तक सभा भंग की जावे एवं तदर्थ समिति का गठन किया जावे एवं दि. ४-६-८३ को पंजीयक सार्वजनिक न्यास खुरई ने सभा भंग कर दी एवं तत्काल चुनाव का आदेश पारित करते हुये तहसीलदार बीना को रिसीवर नियुक्त किया। तहसीलदार बीना ने कागजी चार्ज लेकर वास्तविक चार्ज लेने हेतु निम्न पच कमेटी बनाई—

१—श्री बद्रीप्रसाद बलगैंयां, २—श्री रवीन्द्र जैन. ३—श्रीमती गुलाब बाई, ४—कोमलचंद बुखारिया, ५—श्री हबीब उद्दीन काजी।

चूंकि उक्त आदेश अधिकार क्षेत्र के बाहर जाकर पारित किया गया था। अतः संस्था को विवश होकर म० प्र० उच्च न्यायालय में रिट याचिका प्रस्तुत करना पड़ी जहां से एस० डी० ओ० खुरई का उक्त आदेश निरस्त हुआ। तो पुनः नरेन्द्रकुमार बुखारिया दुलीचंद मढ़िया वाले एवं शाह विनोद कुमार की तरफ से धारा २६ के अंतर्गत आवेदन देते हुये मांग की गई की अतिरिक्त जिला न्यायाधीश खुरई को निम्न निर्देशों के लिये मामला भेजा जावे।

(१) संस्था के अध्यक्ष एवं मंत्री को आगामी चुनाव हेतु अयोग्य घोषित किया जावे।

(२) वर्तमान सभी न्यासियों को अलग कर नये न्यासी नियुक्त हों एवं न्यायालय ट्रस्ट संपत्ति की व्यवस्था के लिये योजना देवें।

पुनः इन्हीं महानुभावों ने माननीय जिला न्यायाधीश के अतिरिक्त न्यायाधीश खुरई के यहां आवेदन पत्र फरवरी १९८४ में दिया और मांग की कि न्यास की समस्त संपत्ति पर कब्जा लिया जाकर रिसीवर नियुक्त किया जावे जो वाद दौरान प्रबंध एवं व्यवस्था करे। इन्हीं व्यक्तियों ने माननीय जिला न्यायाधीश सागर के यहां मई ८४ में आवेदन पत्र देकर प्रार्थना की कि सभा को किसी भी चल-अचल संपत्ति की बिक्री करने, जमीन, भवन, ठेके या किराये पर देने, नव-निर्माण कराने वा उनकी मरम्मत कराने के मामले के निराकरण तक रोका जावे। उक्त आवेदन पत्र स्पष्ट रूप से सिद्ध करते हैं कि उक्त महानुभाव संस्था के कितने हितैषी हैं?

इतना ही नहीं बल्कि संस्था के भूतपूर्व मंत्री देशदिवाकर एवं उपरोक्त महानुभाव माननीय डॉ० राजेन्द्र कुमार जी जैन एवं रजिस्ट्रार फर्मस एण्ड सोसाइटीज भोपाल से मिलकर दि २२-८-८३ को एक आदेश पारित कराकर लाये एवं बीना नगर में उसकी प्रतियां वितरित की जिसके अनुसार रजिस्ट्रार ने बिना कारण बताये एवं सूचना पत्र दिये बिना ही संस्था की प्रबंधकारिणी कमेटी को भंग कर दिया एवं कलेक्टर सागर को आदेशित किया कि वे उप-जिलाध्यक्ष की मार्फत सभा की मीटिंग बुलाकर नवीन प्रबंधकारिणी का चुनाव करें। पर कलेक्टर द्वारा नियुक्त एस० डी० ओ० खुरई ने कोमलचंदजी बुखारिया द्वारा बनाई गई मातादाता सूची (जिसमें एक ही रात में १५४ ऐसे नये अवैध मतदाता सम्मिलित कर लिए गए थे जिसमें कुछ बीना नगर के बाहर के थे तथा विवाहित व अविवाहित महिलाएँ भी थीं) के आधार पर दि. १७-८-८४ को नवीन चुनाव आयोजित किया एवं नायब तहसीलदार के निर्देशन में बीना कचहरी में वर्षा में भींगते हुये जैन समाज के बाल, वृद्ध, माता-बहनों को मतदान करने को विवश होना पड़ा। उक्त महानुभावों में से कुछ अपने १५४ पाकिट वोटों की मदद से भले ही गिनती में अधिक मत प्राप्त कर गये पर जैन समाज इटावा के विशाल जनमत ने इस सर्वेक्षण में शासन को बता दिया कि जैन समाज इटावा किसी भी हालत में संस्था आपको या आपके कृपापात्रों को सुपुर्द करने को तैयार नहीं है। अस्तु—

उक्त महानुभावों की ऐसी हरकतों को देखकर समाजसेवी ६ सदस्यों ने उच्च न्यायालय जबलपुर में रिट याचिका पेश की एवं शासन द्वारा नवीन प्रबंधकारिणी कमेटी के चुनाव को रोक दिया पर सर्वश्री सिं. अभय कुमार, कोमलचंद बुखारिया एवं देशदिवाकर को इतने पर भी संतोष नहीं हुआ। उन्होंने बीना के तीनों बैंकों को लिखकर भेजा कि संस्था के खातों का आपरेशन रोक दिया जावे क्योंकि नायब तहसीलदार बीना ने उन्हें न्यासी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चुन दिया है। इन लोगों के इन्हीं सब कृत्यों से मध्यप्रान्त में संस्था की जो छवि थी एवं नगर में जिस निगाह से देखा जाता था उसमें निश्चित रूप से गिरावट आई। घर की बात को चौराहों पर परचा, अनशन, प्रदर्शन की मार्फत कहना क्या घर की इज्जत बढ़ावेगा ?

चूंकि सभा सकल दिग० जैन समाज बीना की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रहस्थों के धर्म अर्थ, काम (सुख) और मोक्ष इन चतुर्विध पुरुषार्थों में उनकी मदद करके उनकी जीवन्त उन्नति में योगदान देना है। इस हेतु सभा निम्न संस्थाओं का संचालन वर्तमान में कर रही है—

(१) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन सस्कृत विद्यालय
(२) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन उच्चतर माध्यमिक कन्या शाला।
(३) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन माध्यमिक कन्या शाला
(४) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन प्राथमिक विद्यालय
(५) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन शिशु मंदिर
(६) श्री नाभिनंदन जैन रात्रि शाला
(७) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मंदिर बीना इटावा का प्रबंध
(८) श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन नवीन एवं पुरानी धर्मशाला

इसके अतिरिक्त विद्यालयों के अंतर्गत वाचनालयों, पुस्तकालयों द्वारा ज्ञानार्जन की पूर्ण सुविधा है। संस्था के तृतीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु संस्था द्वारा श्री महावीर दिगम्बर जैन धर्मार्थ औषधालय बीना को प्रतिवर्ष १८००/- अनुदान औषधि हेतु दिया जाता हैं।

आय-व्यय विषयक

संस्था के पास रजिस्ट्रेशन के पूर्व से ही काफी अचल संपत्ति थी जो अधिकांशतः सिं. नाथूरामजी सिं. परमानंद एवं उनके पूर्वजों द्वारा दी गई थी सन १९२८ में सिं. परमानंद अपने वसीयतनामा द्वारा मंदिर एवं पाठशाला को जो संपत्ति संस्था को सुपुर्द करने का आदेश अपने उत्तराधिकारी आनंद कुमार जी को दे गये थे, उसकी पूर्ति अभी तक नहीं हुई है। पर भविष्य में आशा है कि सिं: आनंद कुमार उसको पूर्ण कर देंगे क्योंकि सभा बैठक दि. ११-७-८२ को समस्त समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों की उपस्थित में उन्होंने वसीयतनामे संबंधी विषय के निर्णय में लिखवाया था कि वसीयतनामा में उल्लिखित सभी संपत्ति सभा के कब्जे में है। (यद्यपि वह अभी तक कब्जे में नहीं हैं)

इस संस्था का सन १९५३ से प्रतिवर्ष आडीटर द्वारा हिसाब आडिट किया जाता है। आडिट रिपोर्ट के अनुसार गत ३० वर्ष का आय-व्यय एवं बचत का ब्यौरा निम्न है—

वर्ष	आय	व्यय	बचत
५३-५४	१५६४८.८८	१५०१५.१५	६३३.७८
५४-५५	१५६६१-२५	१५२९५.६५	३९५.३३
५५-५६	१७५२९.२२	१९३५६.९१	१८२७.६८ घाटा
५६-५७	१६७८५.६५	१९८८४.४४	३०९८:७८ घाटा
५७-५८	१८२१२.४७	१४५७८:५०	३६३३.९४
५८-५९	२५५५६.६२	१७९११.४०	७६४५.१९
५९-६०	२२४९६.३५	२०७७०.७८	१७२५.५७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६०-६१	२२२३७/-२३	१४६८१/-९०	७५५५/-३३
६१-६२	२५६४ ः/-०५	१५६६०/-७९	९९८२/-३०
६२-६३	२४२१७/-८०	१८९४१/-१०	५२७६/·७०
६३-६४	२७७३४/-३२	१६४४७/-३८	११२८६/-८४
६४-६५	२९२४५.४९	१८०३४.५४	११२१०.९५
६५-६६	३८७४३.०३	२३२८०.११	१५४६२ ९२
६६-६७	४४११६.७७	२११०३.०९	२३०१३ ६८
६७-६८	६९०२६.८५	२५६७०.४५	४३३५६.४०
६८-६९	४५६७८.६१	२८२९५.१६	१७३८३.८५
६९-७०	३८८७७.८६	२५८८४.२४	१२९९१.६२
७०-७१	४७६७६.६९	२८४२३.०४	१६२५३.६५
७१-७२	४७६४३.७४	२८४१७-६१	१९२२६.१३
७२-७३	३६४७६.६४	३४४७३.९७	२००२.७७
७३-७४	४६०१०.८४	४७५३८.२१	१५२७.३७ घाटा
७४-७५	५२३२३.८४	५०५२३.३६	१८००.४८
७५-७६	६७९५२.२४	५६६५९.८२	११२९.४२
७६-७७	५३७५३.८९	५२५५५.५५	११९८.३४
७७-७८	६७७१२.७२	६००३६.९४	७६७५.७८
७८-७९	१०३२५२ ३९	९११८९.८३	१२०६०.५६
७९-८०	११९७९२.६३	८८०९२.२६	३१७००.३७
८०-८१	१२८६९०.४१	११७५६५.०९	१११२५.२२ ×
८१-८२	१३९३८०.८०	७३०६०.९३	६६३१९.८७
८२-८३	१७१७९०.६२	६४६९१.७२	१०७०९८.९०
८३-८४	१५९२३१.७९	४८८६३.७८	९३१२६.०४

× वर्ष ८०–८१ खर्चा में मा० कन्या शाला को ट्रांसफर हुए ५४०००/– सम्मिलित हैं।

सभा द्वारा किये गए उल्लेखनीय निर्माण कार्य

१—खिरिया वार्ड बीना में मोदी वाली बाखर का निर्माण

२—बाहूबली हाल का निर्माण

३—मंदिरजी के पूर्वी दरवाजे के ऊपर स्वाध्याय शाला का निर्माण

४—कंजिया वाले मोदी की जगह में धर्मशाला (पुरानी) का निर्माण सन १९५१-५२

५—मढ़िया वार्ड में हनुमान जी की मंढ़िया के पास भवन का निर्माण सन १९६६ ६७

६—श्री नाभि० जैन संस्कृत विद्यालय, छात्रावास भवन का निर्माण स्वेदेश वाले प्लाट पर स १९८२-८३.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शैक्षणिक उन्नति का कतिपय कार्य :—

१—सन १९७२ में पूर्व मा. कन्या शाला की शुरुआत (कक्षा ६ वीं)

२—सन १९७८ में उच्च. माध्य कन्या शाला शुरू (कक्षा ९ वीं)

३—सन १९८० में नाभि. शिशु मंदिर शुरू

४—सन १९८२ में प्राथमिक शाला शुरू

५—सन १९८४ में संस्कृत विद्यालय के अन्तर्गत कक्षा ६ वीं की शुरुआत

उक्त सभी शालाओं को मध्य प्रदेश शासन ने मान्यता प्राप्त कर दी है। पूर्व मा० एवं उच्च० माध्य० कन्या शाला को सन् १९८३ से म० प्र० शासन द्वारा शत-प्रतिशत अनुदान प्राप्त होता है।

वर्तमान सभा :—

वर्तमान साधारण सभा का छह वर्षीय चुनाव दि. १९. ६. ८३ का आदरणीय पूरनचंद जी एडवोकेट, निर्वाचन अधिकारी एवं फूलचद जी एडवोकेट बीना सहायक निर्वाचन अधिकारी के कुशल निर्देशन मे हुआ। चुनाव में ५७४ मतदाता थे। चुनाव पूर्व संस्था-विरोधियों ने काफ़ी अड़चने डालने का प्रयत्न किया। यहाँ तक कि दि. १९. ६. ८३ को शाम ३.१५ के करीब पूर्व प्लान के अनुसार छुरा के बल पर मतपेटी लूट ली। मतपत्र फाड़ दिये जिसकी चुनाव अधिकारी ने पुलिस थाने में रिपोर्ट की एवं अपराधियों के विरुद्ध मामला दर्ज हुआ माननीय चुनाव अधिकारी ने अपनी सूझ-बूझ से ४ बजे शाम से पुनः मतदान कराने का आदेश पूरे नगर में प्रसारित किया। मतगणना के उपरान्त क्रमशः निम्न ३१ सदस्य निर्वाचित घोषित हुये जिन्होंने पुरानी सभा से दि. १५. ८. ८३ को कार्यभार ग्रहण किया एवं दि. १५. ८. ८३ को वर्तमान में कार्यरत प्रबंधकारिणी का चुनाव किया।

क्रम	नाम	प्राप्त मत
१-	विमलकुमार छबीलचंद सराफ	२४१
२—	सिं. राजकुमार	२३६
३—	सिं. कमलकुमारजी	२२९
४—	श्री विमलकुमार जी कठरया	२२८
५—	"राजेन्द्रकुमार जी कंजिया वाले	२२७
६—	"नाथूराम जी सेमरा वाले	२२६
७—	"श्रीकुमार जी	२२५
८—	"प्रेमचंद जी सेमरा वाले	२१७
९—	"खेमचंद जी घिया	२१५
१०—	"प्रेमचंद जी घिया	२१४
११—	"लखमीचंद जी मृगावली वाले	२११
१२—	"अभयकुमार जी शास्त्री	२०३
१३—	"कृष्णकुमार जी जैन जरदा वाले	१९९
१४—	"प्रकाशचंद जी	१८७
१५—	"पं० भैयालाल जी	१८७
१६—	"सनमतकुमार जी कठरया	१८४
१७—	"प्यारेलाल जी मिठ्या	१८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रमांक	नाम	प्राप्त मत
१८—	"संतोषकुमार जी बाबूलाल जी	१८३
१९—	"चौ० मूलचंद जी	१८१
२०—	"मोहनलाल जी श्रीपति	१६३
२१—	"कठरया नवीनचंद जी	१५६
२२—	"चौ० संतोषकुमार जी	१५१
२३—	"संजीवकुमार जी	१४७
२४—	"अशोककुमार जी पुजारी	१४६
२५—	"चौ० सुरेशचंद जी	१३८
२६—	"महेशचंद जी टड़ैया	१३७
२७—	"रमेशकुमार जी मढ़िया वाले	१३२
२८—	"चौ० सुरेशचंद जी जबलपुर वाले	१३१
२९—	"राजकुमार जी व्या	१३१
३०—	"फूलचंद जी सैंदपुर वाले	१२७
३१—	"कठरया राजेन्द्रकुमार जी	१२५

नोट :—श्री महेश चंद जी टड़ैया का स्थानान्तरण हो जाने से त्याग पत्र मन्जूर हुआ एवं उनके स्थान पर श्री राजेन्द्रकुमार जी टड़ैया वर्तमान में सदस्य हैं।

भावी योजनाएं—

यद्यपि उक्त संस्था दो-दो एक्टों में रजिस्टर्ड होने से अपने क्षेत्र के बाहर जाकर कोई भी कार्य करने में पूर्णतः असमर्थ है फिर भी कानून के तहत रहते हुए सभा द्वारा प्रस्ताव पारित होने पर समय-समय पर निम्न उन्नतिकारक कार्य करने का विचार है—

(१) निर्माण सम्बन्धी कार्य—१—चौ० किशनचंद वाले भवन का पुनः निर्माण,
२—शिखरों की मरम्मत,
३—कुंआ वाले भवन जैन मन्दिर के । हिस्से का निर्माण,
४—डाकखाने वाले भवन का निर्माण,
५—पुरानी धर्मशाला के बाजू वाली मोदी वाली दुकान का निर्माण ।

(१) शिक्षा संबंधी—

१—हाईस्कूल तक संस्कृत बालक विद्यालय का विकास,
२—आयुर्वेद की शैक्षणिक व्यवस्था,
३—धार्मिक, शैक्षणिक शिविरों को प्रतिवर्ष आयोजित करना,
४—योग एवं ध्यान साधना शिविरों को आयोजित करना,
५—पुस्तकालय एवं वाचनालय को बृहद रूप में कायम करना ।

(३) औषधि संबंधी—उद्देश्य पूर्ति हेतु प्रसूति का गृह या हॉस्पिटल की स्थापना ।

इसके अतिरिक्त नव युवकों को व्यायामशाला की शीघ्र स्थापना करने का लक्ष्य है। साथ ही समाज के गरीब कमजोर, गृहहीन व्यक्तियों के लिये सुंदरबाई वाले बगीचा में एक "जैन कालोनी" तथा मुमुक्षु आश्रम की स्थापना हेतु भी विचार है पर उक्त सभी कार्य समाज की एकता, कर्त्तव्य—निष्ठा, लगन एवं परिश्रम से ही संभव हैं। जिस हेतु सभी का अपेक्षित सहयोग वांछनीय है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि कालीन एवं

श्री १००८ नाभिनंदन तीर्थंकर की समवशरण सभा

१—यह धर्म सभा इस अवसर्पिणि काल के चतुर्थ युग में भगवान आदिनाथ के चैतन्य तत्वाधान में संचालित रही ।

२—भरत क्षेत्र की शाश्वत अयोध्या नगरी को इस समवशरण सभा का सर्वोपरि श्रेय है ।

३—निवृ ति मूलक प्रवृत्ति धर्म की दिव्य-देशना इस समवशरण सभा में प्राणिमात्र को प्राप्त होती रही ।

४—वीतराग-सर्वज्ञ, हितोपदेशी तीर्थंकर आदिनाथ ने स्वयं मुक्ति प्राप्त की तथा आज भी उनके मुक्ति मार्ग का सन्देश विश्व भर में गूंज रहा है ।

५—निःश्रेयस् धर्म और अभ्युदयी पुण्य के दोनों मार्ग अभी तक खुले हुए हैं ।

६—असंख्य केवालियों-गणधरों-श्रुतधरों द्वारा यह समवशरण सभा सदा वन्दनीय रही ।

७—तत्कालीन देवेन्द्र ने जो इस समवशरण सभा का निर्माण किया, उनके प्रति लोक अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एतत्कालीन समीकरण

श्री नाभिनंदन दि० जैन समाज की हितोपदेशनी सभा

१—यह हितोपदेशनी सभा इस अवर्पिणी काल के पंचम युग में भगवान आदिनाथ की पुनीत अराधना में संचालित रही।

२—भारत वर्ष की प्रख्यात बीना-इटावा नगरी को इस हितोपदेशनी सभा के संगठन का एक मात्र श्रेय है।

३—कर्तव्य पूर्वक अनुशासनीय अधिकारों की घोषणा इस हितोपदेशनी सभा के द्वारा समाज के आबाल वृद्ध जीर्णों को प्राप्त होती रही।

४– वीतराग-सर्वज्ञ-हितोपदेशी तीर्थंकर आदिनाथ की श्रद्धा-ज्ञान चारित्य रूपी त्रिवेणी में यह सभा स्वयं स्नान करती है तथा अनुशासन बद्धता का सन्देश पूरी जैन समाज में गूंज रहा है।

५—आत्म कल्याण का निःश्रेयस् तथा धर्म-समाज साहित्य-संस्कृति के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

६—असंख्य-व्रतियों-विद्वानों-श्रीमानों कर्णधारों द्वारा यह हितोपदेशनी सभा सदा अभिनन्दनीय रही।

७—सम्प्रति कालीन अध्यक्ष एवं मन्त्री ने इस हितोपदेशनी सभा का जो सफल संचालन किया उनके प्रति समाज अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है।

फूलचन्द पुष्पेन्दु खुरई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"जातें मिले समाज सब"

आचार्य कल्प पं० टोडरमल जी कृत मंगलाचरण की इस चौथी अर्द्धाली पंक्ति को शीर्षक बनाकर इसके द्वारा मैं अपनी प्रशस्त मनोभावना बीना-इटावा की दिगम्बर जैन सामाजिक-संस्था "हितोपदेशिनी सभा", के प्रति प्रकट करना चाहता हूँ।

पुरातन हितोपदेशिनी सभा ने संस्थापन काल से ही अपने शुभ नाम को सार्थक किया है। ऐसी संस्था "गुणों के समुदाय" का एकीभूत पुंज होता है जो विघटन से संगठन की ओर प्रेरित करती है। "संघे शक्तिः कलौ युगे" का नारा संगठन के सदुपयोग का अमृत घोलता है न कि संगठन के दुरुपयोग का विष। हितोपदेशिनी सभा ने सदैव अमृतवत् ही कार्य किया है।

कमल कुमार जैन शास्त्री 'कुमुद'
व्यवस्थापक कुन्थुसागर स्वाध्याय सदन
खुरई (सागर) म० प्र०

दिनांक ३१ जनवरी ८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

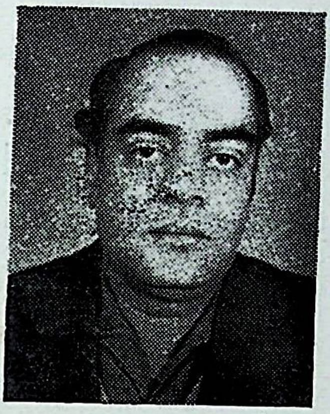

श्री सिंघई राजकुमार, स्वर्ण जयन्ती के संरक्षक

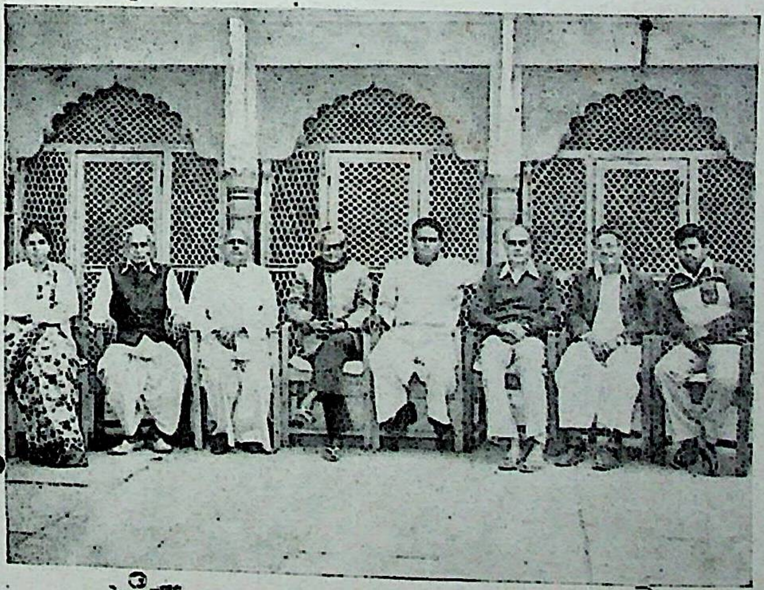

बायें से —श्रीमती हरवंश डांगे, श्री लखमीचंद्र मृगा०, श्री प्रेम चन्द्र सेमरा, श्री जी० एन० चौबे, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री सिं० राजकुमार, श्री बिमल कुमार, श्री सनमत कठरया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सनमत कुमार कठरया
उपमन्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

शालेय-खण्ड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4513

शिक्षा जगत

—: ० :—

शिक्षा निरंतर गतिशील एक ऐसी प्रक्रिया है जो सांस्कृतिक परम्पराओं की रक्षा करती है, आत्मानुभूति और चरित्र निर्माण में सहायक होती है, जीवन को सुखी और सफल बनाती है और जीवन संघर्ष में विजय दिलाती है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षालय रूपी बगीचे को अंकुरित पुष्पित और पल्लवित किया जाता है। किन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक दोष आ गये हैं। आज ही शिक्षा जीवन को सत्यं, शिवं, सुन्दरं बनाने में असफल ही रही है। इन सभी महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी शिक्षा जगत के अंतर्गत देने का प्रयास किया जा रहा है।

—सम्पादक

विद्या–माहात्म्य

संकलन—कु० शकुन ब्राह्मण कक्षा ६ वी (ब)

विद्या पढ़िए चित्त दे, विद्या दे धन–धान्य।
गौरवता जड़ में रहे, सुख कीरति अरु नाम ॥१॥
चोर न चोरी कर सके, नहीं नृपति के साथ।
वन्धु भ्रात नहीं ले सके, विद्या धन निरबाय ॥२॥
लघू जनहू संसार में, गाये जात सुज्ञान।
विद्या से जहँ-तहँ सदा, पावत है सन्मान ॥३॥
अनायास जो धन चहे, सब तजि विद्या सीख।
नहीं दीन से जगत में, मांगत फिरि हौ भीख ॥४॥
उत्तम विद्या लीजिए, यदपि नीच पै होय।
पड़ो अपावन ठोर में; कंचन तजे न कोय ॥५॥

'ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।
इहि परमामृत जन्मजरामृत-रोग निवारण ॥'

—पं० दौलतराम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

"आत्म-संबोध"

कु० इन्दु श्रीवास्तव एम. ए. एम. एड.

कुछ वर्षों से मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक नवीन प्रत्यय "आत्म-संबोध" का विकसित हुआ है। मनोविज्ञान में इस विचार का जन्म सर्वप्रथम अमेरिका में हुआ। "आत्म-संबोध" पर अभी तक अनेक मनोवैज्ञानिकों एवं विद्वानों द्वारा वैज्ञानिक अध्ययन एवं सर्वेक्षण हो चुके हैं। हाल के वर्षों में भी इस विषय पर जोरों से अध्ययन एवं सर्वेक्षण हो रहे हैं। एवं "आत्म-संबोध" के मापन के लिये परीक्षण एवं मापनियां निर्मित की गई हैं।

मैं अपने अध्ययन काल में एवं बी० एड० के प्रशिक्षण काल में यह अनुभव करती आ रही थी कि कुछ विद्यार्थी स्वयं को बहुत ऊँचा महसूस करते हैं तो कुछ विद्यार्थी अपने को बहुत कमजोर महसूस करते हैं और कुछ अपने को सामान्य रूप से अर्थात् न बहुत ऊँचा और न बहुत कमजोर महसूस करते हैं। मेरे मन में यह स्वाभाविक जिज्ञासा उत्पन्न होती थी कि विद्यार्थियों में यह व्यक्तिगत विभिन्नता क्यों पायी जाती है ?

मेरे इस विचार की सत्य पुष्टि उस समय हुई जबकि मैंने अपने एम० एड० के अध्ययनकाल में डा० एस० पी० अहलुवालिया आचार्य एवं अधिष्ठाता शिक्षा महाविद्यालय सागर के निर्देशन में शोध-प्रबन्ध लिखा। शोध-प्रबन्ध का विषय निश्चित करते समय डा० अहलुवालिया जी ने मुझसे चर्चा के दौरान मेरे उपर्युक्त विचार से संबंधित यह नवीन विषय अध्ययन और सर्वेक्षण के लिये दिया जो कि मुझे बहुत ही रुचिकर लगा।

"आत्म-संबोध" एक विशिष्ट प्रत्यय है जो प्रत्ये व्यक्ति में पाया जाता है। शैषवावस्था से लेकर मृत्यु पर्यंत तक चलता है। यह व्यक्तित्व का गत्यात्मक पहलू है ए व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

आत्म-संबोध का साधारण अर्थ यही है कि एक बाल या व्यक्ति अपने बारे में कैसा अनुभव करता है, वह अपं को कैसा समझता है ?

आत्म-संबोध में व्यक्ति को स्वयं को प्रत्यक्षीकर दूसरों की तुलना में उसका स्वयं का प्रत्यक्षीकरण ज्ञा संवेग और धारणाएँ निहित हैं। आत्म-संबोध बताता है व्यक्ति अपने बारे में कैसा प्रत्यय अपने मस्तिष्क में निर्मि किये हुये हैं। यह कुछ विद्यार्थियों में ऊँचा, कुछ में कमजो तथा कुछ में साधारण रूप में होता है। यही विद्यार्थी व्यक्तित्व के विकास की दिशा निर्धारित करता है।

आत्म-संबोध के कुछ घटक हैं जिनका पालन कर यह ज्ञात किया जाता है कि एक बालक या व्यक्ति आत्म-संबोध अधिक मात्रा में है या कम अथवा सामा मात्रा में है ? ये घटक निम्न हैं :—

[१] शरीर और स्वास्थ्य

[२] आदतें और व्यवहार

[३] शैक्षिक उपलब्धियां

[४] संवेगात्मक प्रवृत्तियां

[५] सामाजिक-आर्थिक स्थिति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म-संबोध अनेक बातों से प्रभावित होता है जैसे-उत्तम बुद्धि के बालकों में आत्म-संबोध निम्न बुद्धि के बालकों की अपेक्षा अधिक होता है।

आत्म-संबोध पारिवारिक एवं स्कूल के वातावरण से भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर उच्च कोटि के आत्म-संबोध का विकास होता है। निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति वाले परिवार के बालकों में निम्न आत्म संबोध का विकास होता है।

सफलता और असफलता भी आत्म-संबोध पर प्रभाव डालती हैं। सफलता आत्म-संबोध को बढ़ाती है तथा असफलता से आत्म-संबोध स्वाभाविक रूप से कम हो जाता है।

इसी प्रकार प्रशंसा आत्म-संबोध को बढ़ाने में सहायक है और निंदा आत्म-संबोध को कम करती है।

शारीरिक स्वास्थ्य का भी बालक के आत्म-संबोध पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ बालकों में आत्म-संबोध शारीरिक दृष्टि से कमजोर बालकों की अपेक्षा अधिक होता है।

चूंकि आत्म-संबोध व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं। अतः यह आवश्यक है कि व्यक्तित्व के उपर्युक्त विकास के लिये बालकों में स्वस्थ आत्म-संबोध का विकास किया जाये और तभी वे नवीन खोजों, आविष्कारों में रुचि लेंगे और देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के लिये सक्रिय रूप से योगदान दे सकेंगे। तथा समाज और देश के लिये उपयोगी नागरिक बन सकेंगे।

इस संदर्भ में माता पिता अभिभावकों एवं शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि परिवार एवं स्कूल में ऐसा वातावरण एवं परिस्थितियाँ निर्मित करें जिससे कि बालकों में प्रारम्भ से ही उच्चकोटि के आत्म-संबोध का विकास हो। वे पुरस्कार एवं प्रशंसा के द्वारा बालकों में अच्छे आत्म-संबोध का विकास करके उनका सही ढंग से बौद्धिक और मानसिक विकास करें। इस प्रकार विद्यार्थियों में स्वस्थ आत्म-संबोध का विकास करके देश की प्रगति एवं उन्नति के मार्ग पर ले जाया जा सकता है।

:— अनमोल वचन :—

—: ० :—

मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। महान कर्म करने के लिये महापुरुषों एवं महान आत्माओं के वचन सदैव प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। ये अमर मशालें हैं जो प्रत्येक युग में प्रकाश फैलाती है। एक ओर जहाँ ये व्यक्ति को अच्छे-बुरे की पहचान करा देते हैं। वहीं दूसरी तरफ मुसीबतों, कठिनाइयों एवं घोर निराशा के दुर्दिनों में सच्चे पथ प्रदर्शक की नाईं हमें सत्मार्ग दिखाने में सहयोगी होते हैं।

—सम्पादक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

श्रीमती कमला जैन, एम. ए. बी. ए.
शिक्षिका–माध्य कन्याशाला

प्राचीन काल में भारत में नालन्दा, तक्षशिला, प्रयाग और काशी, शिक्षा और संस्कृति के प्रसिद्ध केन्द्र थे। यहाँ शिक्षण की आदर्श पद्धति थी और सैद्धान्तिक, नैतिक एवं व्यावहारिक, शिक्षण के साथ साथ जीविकोपार्जन में समर्थ तथा आध्यात्मिक विकास में छात्रों को सक्षम बनाती थी। विषयों की विविधता भी थी। इसीसे विदेशी लोग भी भारी संख्या में यहाँ अध्ययनार्थ आते थे।

शताब्दियों की दासता के फलस्वरूप उक्त भारतीय आदर्श शिक्षण पद्धति का ह्रास हुआ और अंग्रेजों द्वारा प्रचलित शिक्षण-पद्धति अस्तित्व में आई। इससे बेकारी बढ़ने के साथ-साथ अनैतिकता में भी वृद्धि हुई। फलतः यह आधुनिक शिक्षण-पद्धति महत्वहीन सिद्ध हुई।

यद्यपि इस प्रचलित शिक्षा-प्रणाली से रूढ़िवादिता से मुक्ति मिली, सभी छात्र-छात्राओं को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हुए तथा स्वतन्त्र चिन्तन का भी इन्हें मौका मिला। तथापि इस प्रणाली में अनेक दोष हैं जिनका प्रभाव अच्छा नहीं हुआ है। कतिपय दोष निम्नलिखित हैं :—

(१) यह शिक्षा प्रणाली निष्क्रिय एवं यान्त्रिक हैं। इससे मानसिक विकास नहीं हो पाता। यह मात्र "किताबी कीड़ा" बनाती है, आदर्श एवं विचारशील नागरिक नहीं।

(२) यह प्रणाली केवल सैद्धान्तिक है। अतः व्यावहारिक योग्यता प्रदान नहीं करती। यह छात्र को 'ज्ञान का भण्डार' तो बना सकती हैं, पर देश के लिए उपयोगी नागरिक नहीं।

(३) यह प्रणाली छात्रों में गुणों के प्रति आकर्षण, सत्य के प्रति निष्ठा, आत्म सम्मान की भावना, ईमानदारी तथा आत्म-गौरव के भाव विकसित नहीं करती। यह सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना से दूर है।

(४) यह व्यय-साध्य भी है। फलतः गरीब पर योग्य छात्र पैसों के अभाव में अपना विकास नहीं कर पाते।

(५) यह 'फैशन का गुलाम' बनाती है। छात्र केवल मनोरंजन के लिए ही शिक्षण-संस्थाओं में जाते हैं। येन केन प्रकारेण परीक्षा पास कर सरकारी नौकरी तलाशना ही उनका ध्येय होता है, अध्ययन करना नहीं।

(६) आज की परीक्षा-प्रणाली में भी योग्यता की जांच नहीं हो पाती। छात्र प्रायः नकल करके या रट-रटाकर डिग्रियां प्राप्त करते हैं।

(७) उच्च शिक्षा का माध्यम विदेशी होने से हमारे नव-युवकों का हृदय व मस्तिष्क विदेशी होता जा रहा है। विदेशी शासन से मुक्त होते हुए भी हम आज भाषा के मामले में 'अंग्रेजों के गुलाम' हैं।

(८) आज का पाठ्यक्रम छात्रों के मानसिक विकास के प्रतिकल है तथा इतना अधिक है कि वह छात्रों के लिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक बड़ा बोझ है। प्राथमिक माध्यमिक शालाओं के छात्र तो पुस्तकों के भार से लदे होते हैं।

शिक्षा प्रणाली के सुधार हेतु १९३७ में गांधीजी ने बेसिक शिक्षा का समर्थन किया। पर यह योजना भावात्मक अधिक और व्यावहारिक कम सिद्ध हुई। भारत सरकार सन् १९५२ में मुदालियर माध्यमिक आयोग की स्थापना की। सन् १९६४ में कोठारी कमीशन की नियुक्ति हुई जिसमें प्राथमिक, विश्वविद्यालय, टेक्नीकल शिक्षा के समस्त स्तरों की उन्नति हेतु सुझाव दिए गये।

शिक्षा का महत्व व्यक्ति की केवल स्मरण-शक्ति का विकास करने मे ही नहीं है, अपितु उसकी सम्पूर्ण शक्तियों और योग्यताओं के विकास में निहित है। शिक्षण से मात्र बौद्धिक विकास ही नहीं, अपितु नैतिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। अतः पाठ्य-क्रम भी ऐसा होना चाहिए जो छात्रों को स्वावलम्बी बनाए तथा उसमें नैतिक सामाजिक मूल्यों की भी प्रतिष्ठापना हो ताकि वह देश के लिए एक आदर्श एवं उपयोगी नागरिक बन सके।

एतदर्थ हमारी सरकार को एक नवीन राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति का विकास करना चाहिए जो देश एवं काल को परि-स्थितियों के अनुरूप हो तथा छात्र को आगे चलकर स्वाव-लम्बी, आदर्श व उपयोगी नागरिक बनाये।

अनमोल वचन

—कु० प्रीति नेमा, कक्षा—७ अ

—शिक्षक वह ज्योति है, जो जीवन को आलोकित करती है। —गुरुदेव

—अच्छे लोग स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सुख देते हैं। —यु० लि०

— उत्साही के लिए कोई भी कार्य दुर्लभ नहीं है। —गीता

—अन्धा वह नहीं, जिसकी आँख न हो; अपितु अन्धा वह है, जो अपने दुर्गुण छिपाता है।

—महात्मा गाँधी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्यार्थी और उसके कर्त्तव्य

कु० मधु जैन, कक्षा ६ बी

विद्यार्थी जीवन, जीवन-निर्माण का महत्वपूर्ण भाग है। इस जीवन की सार्थकता बहुमूल्य समय और शक्ति के सदुपयोग करने तथा बुद्धि के विकास करने में है। अत: विद्यार्थी गुरू के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखते हुए, सदाचार और शिष्टाचार का पालन करते हुए गम्भीरता से अध्ययन करे। महापुरुषों का जीवन-चरित्र पढ़े और उनसे प्रेरणा ग्रहण करे। दूषित साहित्य, कुसङ्गति, दुर्व्यसन और सिनेमा से दूर रहे। विनयी, परिश्रमी, लगनशील और निष्ठावान बने और सदा अनुशासन का पालन करे। निम्नलिखित नीतिवचनों को हृदयंगम करे—

१—कुटिल प्रमादी मत्सरी जो होता है छात्र।
उत्तम विद्या का नहीं, वह होता है पात्र॥

२—गुरुवर का गुणवान का, सदा करो सम्मान।
इन दोनों का विश्व में, अति ऊँचा स्थान॥

३—सेवा में, अध्ययन में, रखना नित उत्साह।
ये दो मानव के लिए, है उन्नति की राह॥

४—मत बोलो पूंछे बिना, कभी किसी के साथ।
और पूंछने पर कहो, कभी न मिथ्या बात॥

५—स्वल्प पठन चिन्तन अधिक, जो करता है छात्र।
वह बनता विद्वान है, श्रेष्ठ ज्ञान का पात्र॥

६—श्रद्धा विद्या के प्रति, और नम्र व्यवहार।
शिक्षा में अनिवार्य है, दो का ग्रहण सुतात॥

७—मन पावन, वाणी मधुर, निर्मल दृष्टि उदार।
और कुशल व्यवहार ये, उन्नतिकारक चार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरक्षण कहां तक उचित है ?

कु० माधुरी भागवत, शिक्षिका

आज के प्रत्येक समाचार पत्र का केन्द्र बिन्दु मुख्यतः आरक्षण की अनुचित व्यवस्था ही रहता है। आरक्षण बुरा नहीं है, बल्कि यह निर्बल को सबल बनाने का एक कानूनी माध्यम है। पर आज समाज का प्रत्येक बुद्धिजीवी वर्ग इसकी आलोचना करता है। इसका भी कारण है। भारत की संविधान निर्मातृ सभा ने आरक्षक की व्यवस्था मात्र १० वर्ष के लिए की थी, किन्तु देश को आजाद हुए लगभग ३६ वर्ष हो गये हैं और आरक्षण है कि सुरक्षा के मुंह के समान फैलता जा रहा है। यह भी तीन बार मिलता है–(१) अध्ययन के समय (२) नौकरी के समय और (३) पदोन्नति के समय।

देश का हर बुद्धिजीवी यही कहता है कि आरक्षण बुरा नहीं, बल्कि इसकी परिभाषा एवं क्रियान्वयन का तरीका अनुचित है। इसका सही आधार जातिगत नहीं बल्कि आर्थिक होना चाहिए, ताकि सभी जातियां, खासकर आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोग समाज में अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकें।

वर्तमान में देखने में आ रहा है कि अब आरक्षितों में भी दो वर्ग हो गये हैं—एक साधन-सम्पन्न और दूसरा साधन-विपन्न। अब आरक्षण का लाभ मात्र साधन-सम्पन्न लोग ही ले रहे हैं और जिन्हें लाभ मिलना चाहिए, वे मीलों दूर हैं।

भारत एक प्रजातान्त्रिक देश है जहां सभी धर्मों एवं जातियों के नागरिक निवास करते हैं। इन सभी की उन्नति पर ही देश की उन्नति एवं विकास निर्भर है। अतः व्यवस्था ऐसी होना चाहिए जिससे समाज का हर कमजोर व्यक्ति इसका लाभ लेकर देश के विकास में उचित योगदान दे सके।

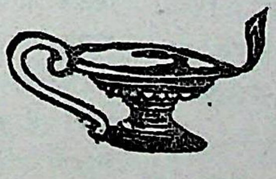

—कु० पुष्पा, कक्षा—७ वी

—धूल स्वयं अपमान सह लेती है, परन्तु बदले में फूलों का उपहार देती है। —रवीन्द्रनाथ

—ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र का निर्माण है। —गांधी

—विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला। —प्रेमचन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यापन प्रभावी कैसे बनाया जाये ?

कु० गीता ठाकुर,
एम. ए., बी. एड., एल-एल. बी., शिक्षिका

शिक्षा, धर्म, साहित्य, संगीत और सस्कृत सभी क्षेत्रों में प्राचीनकाल से भारत का अपना आदर्श रहा है जिसके कारण वह विश्व में गौरवशाली माना जाता रहा हैं। एक समय था जब तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों में दूसरे देशों से भी विद्यार्थी विद्यार्जन करने आते थे। प्राचीनकाल में जहाँ विद्यार्थी गुरुओं का परम आदर करते थे, उनके आदेश पर श्रद्धावनत हो जाते थे, गुरू-शिष्य के संबंध बड़े ही आत्मीय, परिष्कृत और परिमार्जित थे। वनों के आश्रमों में ऋषि-मुनियों से शिष्य विद्या ग्रहण करने जाते थे। एकलव्य, आरूणि, अर्जुन, अश्विनी तथा कपिल आदि की गुरुभक्ति की कहानियों से इतिहास भरा पड़ा है।

आधुनिक समय में शिक्षा के क्षेत्र में स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है। आज शिष्य गुरू से नहीं वरन् गुरू शिष्य से भयभीत है। कारण है—आज विद्यार्थियों में विनयशीलता एवं श्रद्धा का अभाव, विद्यार्थियों में व्याप्त अनुशासनहीनता और शिक्षक में अध्ययन-अध्यापन की अपूर्णता ?

अब हमें देखना यह है कि शिक्षक इन बुराइयों को अपने अनुशासन, गंभीरता, धैर्य, त्याग और अध्यापन द्वारा किस प्रकार दूर कर सकता है ? अध्यापकों के सम्मुख भी यह समस्या है कि वह अपनी शक्ति का उपयोग अध्यापन में करें या अनुशासन स्थापित करने में ?

आज का शिक्षक केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वह कर्तव्यों की ओर से विमुख होता जा रहा है। यद्यपि दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है, किन्तु स्वस्थ स्थिति तभी बनी रह सकती है, जबकि दोनों का संतुलन बना रहे। अतः अध्यापन को प्रभावी बनाने के लिये :—

१—सर्वप्रथम शिक्षक अपने उत्तरदायित्व को समझते हुये अपने कर्तव्यों का पालन करें।

२—शिक्षक को अपने विषय का पूरा-पूरा ज्ञान हो तथा विषय पर पूर्ण अधिकार हो। इसके लिये आवश्यकता है गहन व गंभीर अध्ययन की। उसे विभिन्न विद्वानों की पुस्तकों का अध्ययन समय-समय पर करते रहना चाहिये।

३—शिक्षा का प्रथम उद्देश्य है विद्यार्थी की संतुष्टि। शिक्षक जो पढ़ा रहा है, उसे विद्यार्थी सरल, सुबोध एवं रुचिकर ढंग से कैसे हृदयंगम कर सके ? शिक्षक में यह गुण होना अनिवार्य है। इसके लिये आवश्यकता है मनोयोग एवं तन्मयता की। अतः शिक्षक को सही अर्थ में आचार्य बनने की कोशिश करना चाहिये।

४—विद्यार्थी किसी भी अध्यापक पर हावी होने का प्रयास तभी करते हैं, जब वे शिक्षक की किसी कमजोर नस को पकड़ लेते हैं। आज प्रायः देखने में आता है कि साल पूरा होने के बाद भी शिक्षक अपना कोर्स पूर्ण नहीं करवाते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं, विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करने से हिचकिचाते हैं। देखा तो यहाँ तक गया है कि अधिकांश शिक्षक विषय पर पूर्ण अधिकार न होने के कारण विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का भी समुचित उत्तर नहीं दे पाते। सोचिये, भला विद्यार्थियों से उचित आदर सम्मान पाने की आशा ऐसे शिक्षक कैसे कर सकते हैं ?

५—एक शिक्षक महोदय की आदत पान, तम्बाकू खाने की थी। स्कूल जाते या स्कूल से आते समय अक्सर ही वे किसी भी विद्यार्थी के कंधे पर हाथ रखकर कहते—"यार पान खिलाओ—विद्यार्थी उन्हें पान खिला देते, किन्तु वे ही शिक्षक जब कक्षा में पढ़ाने जाते तो सभी लड़के उनसे हँसी-मजाक करने लगते। नतीजा यह होता कि विद्यार्थी उन्हें शिक्षक न समझकर बराबरी का दोस्त समझने लगे। यह नहीं कि विद्यार्थियों से कभी हंसकर न बोला जाये, किन्तु यह हँसी-मजाक सीमित एवं संतुलित मात्रा में ही होना चाहिये जिससे शिक्षक की गरिमा बनी रहे।

६—अंतिम किन्तु सर्वाधिक प्रमुख बात है "चरित्र"। जब तक शिक्षक स्वयं आदर्शवादी एवं चरित्रवान नहीं होगा तब तक वह कितना भी विद्वान या पंडित क्यों न हो। विद्यार्थियों के हृदय में अपना स्थान नहीं बना पायेगा और न ही वह विद्यार्थियों से मान-सम्मान ही पाने का अधिकारी हो सकेगा।

शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों एवं शासन को भी इस क्षेत्र में पूर्ण सजग होने की आवश्यकता है। उन्हें चाहिये कि वे शिक्षकों का आर्थिक शोषण न करें, उन्हें उचित सम्मान दें, समय-समय पर जो भी समस्यायें उनके सम्मुख आयें, उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर उन्हें उदारतापूर्वक सुलझाने की कोशिश करें, तभी शिक्षक भी पूर्ण मनोयोग से अपने कर्तव्यों का पालन करने को सदैव सहर्ष तैयार रह सकते हैं।

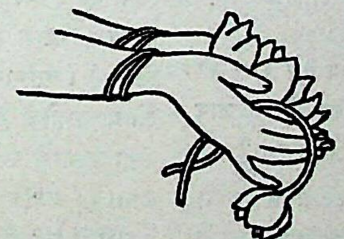

—कु० अनीता चौधरी, कक्षा—१० वी

—शिक्षक वह मोमबत्ती है जो स्वयं को जलाकर दूसरों को प्रकाशित करती है। —पं० नेहरू
—यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसके जीवन की हर भूल उसे शिक्षा दे सकती है। —म० गांधी
—ईश्वरएक है और वह एकता को पसंद करता है। —ह० मुहम्मद
—'मानव सेवा' मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। —आ० विनोबा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

:: साक्षात्कार ::

आयोजिका—

श्रीमती सुनीता स्टेनली,
प्रधान पाठिका।
नाभिनन्दन दिगम्बर जैन माध्यमिक
कन्या, शाला, इटावा, बीना।

×

श्रीमती पी० क्लॉडियस—

उच्च श्रेणी प्रधान पाठिका,
माध्यमिक कन्या विद्यालय,
इटावा, बीना।

आप विगत 21 वर्षों से विद्या, साहित्य एवं कला की अधिष्ठात्री देवी के चरणों में सादर समर्पित हैं। आप एम० ए०, (हिन्दी तथा अर्थशास्त्र) तथा बी० एड० हैं।

राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, मध्य प्रदेश द्वारा आप को सागर संभाग में 1962 में राज्य-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह सौभाग्य पाने वाली बीना नगर की आप प्रथम महिला-शिक्षिका हैं।

उनकी विशिष्ट सेवाओं के अनुभव के बल पर उनसे साक्षात्कार किया गया जिसके कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

—प्रधान पाठिका

शिक्षकों को राज्य स्तरीय पुरस्कार देने की प्रक्रिया उचित है अथवा अनुचित ?

—प्रत्येक क्रिया के साथ दंड अथवा पुरस्कार का प्रावधान होता है। शिक्षा प्रदान करना शिक्षक का एक नैतिक दायित्व है और इसके लिये वह अपना जीवन समर्पित करता है। अतः इस प्रक्रिया फलस्वरूप पुरस्कार का प्रावधान समाज, राज्य एवं राष्ट्र—स्तर पर होना आवश्यक है। पुरस्कार प्राप्ति पर शिक्षक को प्रोत्साहन मिलता है, समाज अथवा राष्ट्र द्वारा एक मान्यता प्राप्त होती है तथा अन्य शिक्षको को प्रेरणा मिलती है। जो समाज और राष्ट्र "शिक्षक" को मान्यता देकर पुरस्कृत करता है उस समाज और राष्ट्र में बुद्धिजीवी वास करते हैं।

२. पुरस्कार की राशि पर्याप्त है अथवा अपर्याप्त ?

किसी कला या योग्यता का मापदंड "राशि" द्वारा निर्धारित करना औचित्यपूर्ण नहीं है, पर शासन ने एक पुरस्कृत शिक्षक को एक निर्धारित राशि देने का निर्णय लिया है। वर्तमान राशि ५०) जो कि एक पुरस्कृत शिक्षक को प्राप्त होती है, वह अपर्याप्त है। क्रीड़ा, अभिनय तथा कला में भारी राशि पुरस्कार के रूप में शासन द्वारा दी जाती है जबकि एक समर्पित शिक्षक, जो आर्थिक समस्याओं में जूझता रहता है, उसे पुरस्कार के रूप में ५० रु० की राशि देना उसके सम्मान को मद्धिम करना है।

३—शिक्षा के स्तरसुधार हेतु शासन से मेरी अपेक्षायें

शासन को सरल एव उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने का साधन मात्र होना चाहिये शासकीय हस्तक्षेप की सीमायें निश्चित होना चाहिये। बहुल—हस्तक्षेप से शिक्षा के सिद्धान्त तथा उपलब्धियाँ टकराव की स्थिति में आ जायेंगे तथा विशुद्ध शिक्षा की प्रगति अवरुद्ध हो जावेगी। शाला प्रधान एवं शिक्षक परिवार नवीन प्रयोगों द्वारा शैक्षणिक उन्नति कर सकें तथा शिक्षाधिकारीगण परामर्शदाती संस्था रहें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शासन द्वारा एक उपयुक्त एवं पूर्ण सुविधा सम्पन्न शालेय भवन प्राप्त कराने मे शिक्षा-अधीक्षकों एवं जन-मानस का सम्मिलित प्रयास होना चाहिये।

जीवन्त, व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा का प्रसार शासन द्वारा हो, इस हेतु पाठ्य पुस्तकों में एवं पाठ्यक्रम में प्रगतिशील विश्व के अनुरूप ही संशोधन एवं परिमार्जन होना अति आवश्यक है।

शिक्षकों की नियुक्ति उनकी मनोवैज्ञानिक रुचि एवं योग्यता क्रम के आधार पर होना चाहिये जिससे शिक्षक अपने विद्यार्थी को "कर्म" का अभ्यास दे सकें, विद्यार्थी "अकर्मण्य" न रह जावे।

पाठ्यक्रम में कम से कम एक गृह उद्योग का समावेश अवश्य हो, जिससे उच्च-स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ विद्यार्थी जीविकोपार्जन हेतु समर्थ रह स ।कें

शासन से अपेक्षा है कि सदाचारी, निष्ठावान, चरित्र-निर्माण के कार्य में संलग्न शिक्षक की ओर ध्यान दें।

४—प्राथमिक स्तर पर किस प्रकार की शिक्षा के पक्ष में ?

आज सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि समर्पित भावना से कार्य करने वाले योग्य, निष्ठावान प्रशिक्षित शिक्षकों के हाथ में प्राथमिक शिक्षण का उत्तर-दायित्व सौंपा जाना चाहिये। ताकि वे शिक्षक उस पावन संकल्प को, लोक-संस्कृति, सामाजिक क्रिया-कलापों और स्थानीय उद्योग-धंधों की स्थिति के अनुसार ढाल कर अपना कर्तव्य पूर्ण कर सकें।

प्राथमिक स्तर पर बालक में "क्रियाशीलता" रहती है। इस गुण को प्रोत्साहन देने हेतु बालक को समुचित अवसर शाला में मिलना चाहिये। प्राथमिक स्तर पर बालक को बंधे वातावरण तथा बंधे पाठ्यक्रम में रखना अनुचित है। उसे अपनी रुचि व अपना ज्ञान बढ़ाने की स्वतंत्रता देना चाहिये। बालक को 'पुस्तकों' के घेरे में नहीं अपितु 'क्रियाओं के घेरे में रखा जाना चाहिये और ये क्रियाएं बालक का खेल बनें और ये खेल भी समय के बंधन में न हों। जैसे—भूगोल का अध्ययन उसे कक्षा के बाहर, धरती पर लाकर, आकाश में नक्षत्र दिखाकर, मौसम का अनुभव करा कर (अर्थात् प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा) देना चाहिये। एक गुरु, कवि और कविता का ज्ञान स्वयं कविता से प्रभावित होकर, रसमग्न होकर ही बालक को रसानुभूति करा सकता है। तर्क एवं गणना के आधार पर गणित का ज्ञान देना चाहिये। प्राथमिक स्तर पर बालक को पुस्तकों के भार से दबा कर एक भारी "बस्ता" उसकी पीठ पर लाद कर हम भारी गलती कर रहे हैं।

५—क्या वर्तमान परीक्षा-प्रणाली विश्वसनीय कही जा सकती हैं ?

शिक्षण का महत्वपूर्ण पक्ष "मूल्यांकन" है। परीक्षा द्वारा छात्र के अर्जित ज्ञान एवं योग्यता को आंका जाता है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। "वस्तुनिष्ठ" प्रश्नों में बौद्धिक दृष्टि से निर्बल बालक भी बुद्धिमान बालक के समान उच्चतम अंक पा जाता है। इससे बालक के बौद्धिक स्तर का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है।

परीक्षा का वातावरण कृत्रिम रहता है। परीक्षा कार्य-क्रम दैनिक शैक्षणिक कार्यक्रमों से भिन्न नहीं होना चाहिये, बालक स्वाभाविक रूप से परीक्षा देंगे तो उनके बौद्धिक स्तर का सही मूल्यांकन हो सकेगा।

वर्तमान परीक्षा-पद्धति द्वारा छात्र की लेखन शक्ति को ही विशिष्टता मिलती है। सत्र में प्रायोगिक, मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षाओं का आयोजन होना चाहिये और उनका परिणाम वार्षिक परीक्षा परिणाम में सम्मिलित होना चाहिये।

प्रश्नपत्र में बौद्धिक स्तर के भी प्रश्नों का समावेश होना चाहिये। कुछ प्रश्न ऐसे हों जिनकी विवेचना छात्र अपनी बुद्धि के सहारे प्रस्तुत कर सके। छात्र के अंक परीक्षक के 'मूड' पर निर्भर न करें। कुछ प्रश्न ऐसे हों जिन के अंकों पर परीक्षक के "मूड" का असर न पड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६—क्या वर्तमान पाठ्य-पुस्तकें छात्रों की रुचि के अनुकूल हैं ?

विषय वस्तु की जहां तक "सिद्धान्त" की बात है यह तो पाठ्य-पुस्तकों में है। जैसे विज्ञान के सिद्धान्त, इतिहास की प्रमाणिकता यहां छात्र की रुचि का प्रश्न नहीं उठता, किन्तु जहां छात्र की "रुचि" का प्रश्न है "व्यावहारिकता" की बात है, वह अधिकांश पाठ्य-पुस्तकों में नहीं है। वर्तमान में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें कोई देश-भक्त, विचारक, गरिमायुक्त गुरु, कुशल कारीगर, कलाकार, विश्वस्त श्रमिक पैदा नहीं कर सकती। केवल किसी दफ्तर का "बाबू" तैयार कर सकती हैं।

प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों की सीढ़ी पर चढ़कर आज का युवक "डिग्री" तो प्राप्त कर लेता है पर डिग्री को लेकर उसके सामने आती है—भविष्य की अनिश्चितता, आत्म-विश्वास की कमी। परिणामस्वरूप दिग्भ्रमित होने पर उसमें उच्छृङ्खलकता, अनुशासनहीनता आ जाती है। यदि पाठ्य-पुस्तकों में 'कर्म' और 'ज्ञान' का समन्वय हो और देश के सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश हो तो छात्र दिग्भ्रमित न हों।

मेरे अपने विचार

प्रत्येक शिक्षक को विशुद्ध भावना से, अपने अन्तर्मन से डरते हुए अपने हर कर्तव्य को पूर्ण करते रहना चाहिये। अपनी आत्मा को ही अपना 'अधिकारी' समझना चाहिये। पुरस्कार देना तो शासन या समाज का अपना निर्णय होता है। प्रत्येक शिक्षक को कृत-संकल्प होना चाहिये कि उसका शिक्षक-कलाकार हृदय एक निर्माणकारी प्रेरणा लेकर शिक्षक जगत में नई पीढ़ी के लिये मंगलमयी प्रभात का सूर्य उदित कर सके।

—कु० सीमा जैन, कक्षा—१० वी

—मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से तथा मिथ्या भाषण को सत्य से जीत सकता है।

—वीर वह नहीं, जो विश्व में हजारों को जीतता है, अपितु वीर वह है, जो अपने को जीतता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—: विविध :—

—: ० :—

दैनिक जीवन के क्रिया-कलाप और आस-पास बिखरी बातों से हम चाहें तो प्रतिदिन कुछ न कुछ नया सीख सकते हैं। जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव ही व्यक्ति को सत्य-असत्य की पहचान करा देते हैं। इस स्तम्भ के माध्यम से हम एक ओर जहां भारत में फैली बुराईयों खासकर नारी शोषण, देहेज, युवा उत्पीड़न, मानव मन की दुर्बलताओं आदि से परिचय करा रहें हैं। वहीं दूसरी ओर वैज्ञानिक ज्ञान-वर्धक और स्वास्थ्य संबंधी जानकारियाँ भी दे रहे हैं।

—सम्पादक

निराशा कें बीच भटकता युवा वर्ग

कु० इन्द्रा श्रीपति, एम. ए. बी. एड.
शिक्षिका—कन्या उ० मा० वि०

निराशा, घुटन, आक्रोश, संत्रास, कांतिहीन चेहरे तथा आँखों में झांकती निरीह वेदना, यही है आज के युवा वर्ग की तस्वीर। इनका न केवल वर्तमान अनिश्चित है, बल्कि भविष्य भी अंधकारमय है। राशन, रोजगार दफ्तर, व्यवसाय के लिये ऋण लेने हेतु बैंकों में, साक्षात्कार देने के लिये विभिन्न इमारतों के बाहर, जहां भी देखिए लम्बी कतारें, उदास, निराश और भटकते नवयुवक जिनके हाथों में मुड़ी हुई डिग्रियां, मुरझाये चेहरे, बोझिल और थके पैर हृदय को अन्दर तक झकझोर देते हैं। ये परेशान से बेरोजगार युवक निराशा के घने अन्धेरों में खोकर प्रतिवर्ष हजारों की संख्या बढ़ाते जाते हैं। क्या यही है भारत की तरुणाई? क्या इसी शक्ति पर भारत को गर्व है? इस विषय पर जितना भी सोचो विचारों का क्रम उतना ही बढ़ता जाता है। विचारों की श्रृंखला जुड़ती है, फिर टूटती है, फिर जुड़ती है, और मैं इन विचारों को शब्दों में बांधने को बाध्य हो जाती हूँ।

निराशा आज के जीवन की कटु वास्तविकता है, जिससे आँखें नहीं मूंदी जा सकती। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निराश-नौकरी की विफलता हो या राजनैतिक शोषण, साक्षात्कार के समय पक्षपात हो या भ्रष्टाचार अथवा पारिवारिक कलह हो या टूटती सामाजिक मान्यतायें, ये सभी आजादी के बाद की शनैः शनैः इकट्ठी की गई कटु वास्तविक अनुभूतियों का निचोड़ है। इस गरल को आखिर कब तक और पीने के लिये बाध्य होना पड़ेगा?

झूठे वादों या क्षणिक खुशी से ऊपरी तौर पर तो मन को बहलाया जा सकता है, लेकिन पेट की आग मनुष्य को फिर से बेचैन कर देती है। ऐसी स्थिति से जूझने के केवल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो ही रास्ते आसान हैं—गलत राह अपना लेना या फिर घोर निराशा के उत्पीडन से अपना जीवन समाप्त कर लेना।

निराश व्यक्ति जीवन जीता नहीं केवल ढोता है, एक लाश की तरह। ऐसे नवयुवक नवयुवतियों को हमारा सुसभ्य, सुशिक्षित समाज कहता है-"विक्षिप्त", क्योंकि ऐसा व्यक्ति निराशा को जीवन का अभिन्न अंग मान लेता है। वह निराशा का इतना अभ्यस्त हो जाता है, कि हो सकता है, वह ईश्वर से यही कहे-'हे प्रभु मुझसे मेरी उदासी मत छीन।"

उपरोक्त बातों को सोच सोच कर कोई भी रचनाकार चुप नहीं बैठ सकता, युवावर्ग की प्रतिभा तो बिल्कुल ही नहीं, क्योंकि रचनाकार प्रथम तो सामजिक प्राणी है, और युवावर्ग तो अधिक भावुक व सवेदनशील होता है, फिर भला इतनी ज्वलंत समस्या उसकी रचनाओं में क्यों न परिलक्षित हो? कलम अनायास ही बोल उठती है—

मैंने आंहे भरी न उफ की है,
सिर्फ़ बर्बादियाँ बयां की हैं।
तुम इन्हें शेर मत समझ लेना
मैंने आँहों को ज़िंदगी दी है॥

सच है समय की मार होंठो की आँहों को शब्द रूप दे देती है। नियति के हाथों का बना मिटटी का पुतला तब खून के घूंट पी कर रह जाता है, और हमारा तथाकथित समाज उसे सिरफिरे की संज्ञा दे देता है।

हमें आजादी के नाम पर क्या मिला? मानव मूल्यों का पतन, भुखमरी, बेकारी, मशीनी युग में अपने ही प्रिय जनों के सच्चे नेह का अभाव, भूख से बिलबिलाते दुधमुंहे बच्चे, रोटी के बदले अपना तन बेचने को मजबूर होती मासूम कलियाँ। आज के भारत की इस तस्वीर को देखकर कहना ही पड़ता है—

कैसे करूं मैं फख्र बता तुझपे ये वतन।
जिंदा न ढक सके तन, न मिले मुर्दा को कफ़न॥

यह समस्या प्रतिदिन सुरसा-मुख के समान बढ़ती जा रही है। पराजय, जीवन के प्रति विमोह, निरीहता, दुख, पीड़ा, असफलता, आत्महीनता, भटकाव तथा अविश्वास ये सभी निराशा के स्थायी भाव बन गये हैं। यही कारण है कि आज के युवक की रचनाओं में सर्वत्र यही भाव दिखाई देते हैं। किसी शायर ने ठीक ही कहा है—

"इक़ रोज का रोना हो तो रोकर सबर पायें
हर रोज के रोने को कहाँ से जिगर लायें"॥

युवावर्ग के हृदयों में बहुत गहराई तक यह बिखराव फैल चुका है। खत्म कब होगा? पता नहीं, परन्तु जहां तक जिंदगी जीने का प्रश्न है, ऐसे निराश एवं हतोत्साहित युवक युवतियों को मेरा यही शुभ-संदेश है कि वे अपना आत्म-विश्वास न खोयें, जिंदगी को शान से जिये, असफलताओं से घबराये नहीं; बल्कि प्रत्येक कदम दूने जोश से बढ़ाये। जिंदा दिली बनाये रखने के लिये संघर्ष के साथ-साथ जबरदस्त आशावाद की आवश्यकता है। पता नहीं कब गहन अंधकार के बादल छंट जायें और ज्योतिमय रश्मियाँ तुम्हारे कानों में धीरे से नवीन संदेश सुना जायें। तुम्हारा पथ आलोकित करके तुममें नव शक्ति का संचार करें। प्रत्येक युवक-युवती को इस प्रकार के ढाढ़स का आदान-प्रदान कर आगे बढ़ना है, अंत में—

कल की प्रथम रश्मियाँ तुमको नया संदेशा लायेगीं,
उठो, बढ़ो, मत रुको राह में कानों में कट जायेगी।
नई शक्ति संचार करो, मन में भी नव उत्साह भरो,
अपना मार्ग स्वयं खोजो तुम, संघर्षों से नहीं डरो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत संख्याओं में ९ के अंक का जादू

श्रीमती हेमलता श्रीवास्तव, बी. एस. सी.
भूतपूर्व-अध्यापिका

सबसे पहले आर्यावर्त (भारत) ने गणना-अंकों का आविष्कार किया था। पश्चात् विश्व ने उन अंकों की प्रतिलिपि कर अपनी भाषा में चिन्हांकित किया। गिनती की संख्याओं को प्राकृत संख्याएँ कहते हैं, तथा प्राकृत संख्याओं के समुच्चय को इस प्रकार लिखते में :—

एन = (१, २, ३, ४, ५— — अनंत)

प्राकृत संख्याओं में ९ का अंक माया का अंक है।

९ के अंक की महत्ता :—

(१) संख्याओं का जोड़ पहले बताना

मान लीजिये, आप के मित्र ने २३५३ संख्या लिखी। अब आप मित्र से कहिये आप इसके नीचे कितनी संख्यायें लिखेंगे? उन्होंने कहा २ लिखेंगे तो आप २३५३ में से २ घटाकर शेष २३५१ के बाईं ओर २ के आगे २ और रख दीजिये अब संख्या २२३५१ हो गई। यही जोड़ का उत्तर आ गया। जिसे कागज पर एक तरफ लिख दीजिये :—

उदाहरण :—

मित्र ने जो संख्या लिखी	२३५	
मित्र की पहली संख्या	१४६७	उत्तर पहले
मित्र की दूसरी संख्या	७६९१	लिखा गया
अब आप भी दो संख्यायें	८५३२	२२३५१
लिखिये	२३०८	२२३५१
		योगफल
योगफल	२२३५१	

यह पूर्ववत लिखे गये योगफल के बराबर राशि है जो आश्चर्यजनक बात है। उपरोक्त उदाहरण में संख्याएँ लिखने की रीति निम्न है:—

आप अपनी संख्यायें इस प्रकार लिखिये कि मित्र की संख्या तथा आप की संख्या का योग ९ होता जावे। उपरोक्त उदाहरण में—

यदि मित्र की संख्या १४३७ है
तो आप की संख्या ८५३२ होनी चाहिये। दोनों संख्याओं में प्रत्येक अंकों का योग ९ होता है। देखिये:—

```
 १४६८
 ८५३२
 ─────
 ९९९९९
 ─────
```

यह स्मरण रहे कि यदि मित्र की संख्या सैकड़ा में है तो आपकी संख्या भी सैकड़ा में होनी चाहिये। इसी प्रकार यदि हजार, दस हजार, लाख हो तो वही आपकी होगी।

(२) मन-चाहा गुणनफन प्राप्त करना

यदि आप १ का अंक ९ बार चाहते हैं तो

```
 १२३४५६७९ × ९
 ─────────────
 १११११११११
```

यदि आप २२२२२२२२२ संख्या चाहते हैं तो

```
 १२३४५६७९ × १८
 ──────────────
 २२२२२२२२२
```


Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी प्रकार यदि ९ में ९ या ९ के पहाड़े से गुणा किया जाय तो मन चाहा गुणनफल प्राप्त होगा।

इस प्रकार उपरोक्त दोनों उदाहरणों द्वारा ९ के अक की व्यापकता सिद्ध होती है। भजन करने की माला में १०८ मोती हैं। १०८ में १ का अङ्क ब्रह्म और ८ का अंक माया का रहता है इन दोनों का योग ९ होता है जो पूर्ण ब्रह्म कहलाता है।

जिस प्रकार परमात्मा अलौकिक है उसी प्रकार गणित की दुनिया में ९ का अंक चमत्कारी व अलौकिक है।

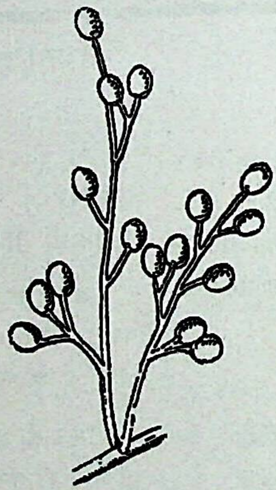

कु० नीलम राय, कक्षा—१० बी

१—अध्यापक—बताओ, अकबर ने शासन कहाँ तक किया ?
छात्र—इतिहास की पुस्तकें पृष्ठ ९४ से ११० तक।

२—अध्यापक—बच्चो ! गवर्नमेन्ट का क्या अर्थ है ?
बच्चे—जो मिनिट-मिनिट में गौर करे, वह गवर्नमेन्ट।

कु० रीता सिंह, कक्षा ७ अ

विवाह :—

१—विवाह की रस्म अदा की जा रही थी। पुरोहित ने बधू से कहा—'तुम अपने पति की आज्ञा का पालन करोगी।' बधू ने उत्तर दिया—'मैं कोई पागल थोड़ी हूँ।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"राष्ट्रीय झण्डे का जन्म"

वीणा कुमारी ताम्रकार, कक्षा—१०वीं

राष्ट्रीय झण्डे की कहानी काफी पुरानी है। स्वाधीनता आन्दोलन के दिनों में इस झण्डे ने हमें कर्त्तव्य, निष्ठा, त्याग और बलिदान की प्रेरणा दी थी "झंडा ऊँचा रहे हमारा" हर एक के मन में यही बात थी। तिरंगे झण्डे की कल्पना सबसे पहले १९०६ मे फ्रांस में रह रहे भारतीयों द्वारा की गई थी। उस समय इस झण्डे का निर्माण श्रीमती कामा और उनके कुछ साथियों द्वारा किया गया था तथा इसे सर्वप्रथम जर्मनी की राजधानी बर्लिन में फहराया गया था। इस झण्डे में भी आज की तरह केशरिया, सफेद और हरा रंग था, परन्तु सफेद भाग में "बन्दे मातरम्" लिखा हुआ था। १९३० में इस झण्डे में थोड़ा परिवर्तन किया गया। अब इसमें पहले सफेद के बाद हरा और फिर लाल रंग रखा गया तथा बीच में पूरे आकार का चरखा रखा गया। १९३१ में फिर इसमें थोड़ा परिवर्तन कर दिया गया। लाल रंग के स्थान पर फिर से केशरिया रंग कर दिया गया और रंगों का क्रम बदल दिया गया। अब झण्डे में पहले केशरिया फिर सफेद और अन्त हरा रंग था। चरखे का आकार भी कुछ कम कर दिया गया था।

१९४६ में जब हमारा देश स्वतन्त्र हुआ तब इस प्रश्न पर फिर से विचार करने के लिए "राष्ट्रध्वज-समिति" बनाई गई। इस समिति ने भी कुछ परिवर्तनों का सुझाव दिया। प्रमुख परिवर्तनों में चरखे को हटा कर चक्र रखने की सिफारिश की गई। इसमें अब पहले केशरिया फिर सफेद और अन्त में हरे रंग की समान अनुपात की चौड़ी पट्टियाँ हैं। लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात तीन और दो का है। मध्य में सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर चक्र हैं। संविधान सभा ने दिनांक २२ जुलाई १९४६ को प्रस्ताव पारित कर इस तिरंगे झण्डे को भारतीय राष्ट्रीय झण्डे" का दर्जा दिया। यह हमारी स्वतन्त्रता राष्ट्रीय, स्वाभिमान तथा गौरव का प्रतीक है। इसकी शान से ही हमारी शान है।

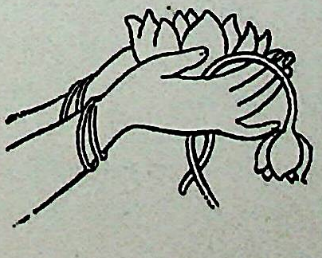

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"दहेज प्रेमियों के प्रति"

कु० प्रज्ञा तिवारी, कक्षा—११ वीं

दहेज की बलि पर कब तक बहुएँ चढ़ती जाएंगी ?
दहेज के भूखे निर्दयों की, कब प्यास बुझाएँगी ?
बहू-बेटी में फर्क लगाते बस दहेज के खातिर,
आत्महत्या करवाते हैं, दे-देकर ताने उसको ।।
-देकर ताने उसको वे. जुल्म उस पर बढ़ाते हैं,
'कम दिया दहेज, कम दिया" वे हरदम यही गाते हैं
लालच भरा दिल कभी ये लाओ कभी वह लाओ
—मायके को फुड़वाते हैं।
जब हो जाती मजबूरी घूंसे लात चलाते हैं
अन्धे बने दहेज के, वे दहेज को गले लगाते हैं
अपनी बेटी को बेटी, और बहू को नौकर बनाते हैं
सारा घर हुकम चलाता है, ताने दे-दे धमकाता है
कब होंगे खतम ये जुल्म के सितम-बस यही मन में
आता है
अरे दहेज प्रेमियो ! कब होश में आओगे ?
बेटी की तरह बहू को कब अपनाओगे ?

—: ० :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"ग्रामीण विकास में युवकों का योगदान"

संजय भाटिया, बी. काम.

"ग्रामीण विकास का नाम सुनते ही आँखों के सामने गांव की तस्वीर कौंध जाती हैं। संपूर्ण देश का पेट भरने वाले किसान की पेट-पीठ मिलकर एक हो रही है। दूध की एक-एक बूंद को तरसतेदुध 'मुहे बच्चे तथा सयय से पूर्व बूढ़ी होती जवानियाँ, ग्रामः का कृत्रिम शहरीकरण, गाँव में शिक्षा संस्कृति, उच्च जीवन स्तर का केवल कागजों पर वर्णन आदि कुछ ऐसे प्रकरण हैं जिनका क्रियान्वयन एक कपोल कल्पना बन गई है। भारतीय व पाश्चात्य संस्कृतियों का मिश्रण गांव की दशा को और भी बदत्तर कर रहा है। प्रेम, भद्भावना, मिलाप तीज त्यौहारों पर झलकने वाला उत्साह सभी कुछ उदासीनता में बदल गया है। राजनैतिक दांव-पेच गांव में दलबन्दी फैला रहे हैं। जिससे गांव की भोली जनता राजनैतिक ब्यूह में फँस रही है।

आज की युवाशक्ति नव उत्साह और नई उम्र के कारण इन सब बुराइयों को दूर कर सकती है। भारत को पूर्ण विकसित व समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए शुरूआत गांव से ही करनी होगी। यद्यापि अनेकों ग्राम विकास योजनाये बन चुकी है और गांव के सुधारने का प्रयास हो रहे है। किन्तु यदि युवा वर्ग इस कार्य को अपने हाथ में ले ले तो अशातीत सफलता मिल सकती है तथा साथ ही युवा वर्ग की वह शक्ति जो विध्वांसात्मक कार्यों में लगती है, उसे उपयोगी कामों में लगाया जा सकेगा। उन्हें प्राकृतिक सुषमा का आनन्द मिलेगा तथा ग्राम विकास का उद्देश्य पूरा होगा।

एक निश्चित कार्यक्रम बनाबर १५-१५, २०-२० की टोलियों में निकट के ग्रामों में जाकर किसानों में कृषि के आधुनिक तरीके, पारस्परिक सहयोग, पशु पालन तथा सहकारिता की भावना को समझाना चाहिए। गरीबी तथा अशिक्षा के कारण देहाती सफाई एवं सौन्दर्य से अनभिज्ञ रहते हैं। अतः उनमें साक्षरता के साथ-साथ सफाई और सुरुचि का ज्ञान भी विकसित करना होगा। इसके लिए युवकों द्वारा बार-बार उन्हें इन कामों के लिए प्रेरित करना होगा।

युवकों की एक-एक टोली एक-एक गांव को अपना "कर्त्तव्य स्थल" बना ले। गांव को गोद न लेकर स्वयं गांव की गोद में सन्तान बनकर उसके विकास के लिए स्वयं को तैयार कर लें। शिक्षा, संस्कृति, स्वच्छता, संतुलित भोजन, खेल-कूद, मनोरंजन आदि की बातें ग्राम वासियों को शनैः-शनैः समझाये, उनमें बचत की भावना का विकास करें। इन सब बातों के लिए धैर्य की आवश्यकता है। क्रम-क्रम से विवेकपूर्वक विभिन्न कार्य करने होंगे। यदि गांव में पहुँचते ही धर्म, शिक्षा, सफाई, संस्कृति या वैज्ञानिक उपकरणों पर भाषण झाड़ना शुरू कर दिया तो गांव के लोग उनका उपहास करने लगेंगे। अतः पहले ग्राम वासियों से घनिष्ठता बढ़ानी होगी। तभी ग्रामीण जन-सहयोग मिल सकेगा।

उपरोक्त कार्यों में सफलता पाने के लिए युवक-युवतियों को अपनी दिनचर्या में परिवर्तन करना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हें ग्रामीण से घुल मिल जाना होगा। इस प्रकार के युवक-युवतियों का समूह एक ऐसी संस्था के समान होगा जो निःस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करेगी। धन और साधन इतने महत्वपूर्ण नहीं जितनी कार्यकर्त्ता की योग्यता, लगन और क्रियाशीलता होती है।

अपने निश्चल व्यवहार, उदार-स्वभाव और दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा आज के युवक गांव की सर्वांगीण उन्नति करके ग्राम वासियों का जीवन सुखमय और समृद्धशाली बना सकते हैं। तभी हम यह कहकर गौरवान्वित हो सकेंगे कि भारत गांव का देश है और गांव में भारत की "आत्मा" बसती है।

कु० रिचा तिवारी, कक्षा ७ बी

१—जज—किस वजह से तुम यहाँ पहुँचे ?

अपराधी—छींक की वजह से।

अपराधी— मेरी छींक ने अपराधी को जगा दिया।

२—वकील—(अपराधी से) यदि तुम चोरी का सारा हाल बतला दो तो मैं तुम्हें सजा से बचा सकता हूँ।

अपराधी—मैं सब कुछ बतला दूंगा, पर यह नहीं बतलाऊंगा कि चोरी का माल कहाँ रखा है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी की विवशता

कु० पदमा जैन, एम. ए. बी लिब
शिक्षिका

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी'' ।

कितना कटु सत्य है यह अबला नारियों का। नारी जिसके जन्म लेते ही चारों तरफ विवशत ओं का पहरा रहता है। 'नारी' हां नारी-शब्द का प्रथम अक्षर ही तो 'ना' अर्थात् 'नाहीं' । अपनी इच्छा से अपने ही उत्थान एवं उत्कर्ष के लिये बेचारी कुछ भी नहीं कर सकती। नारी शब्द जैसे समस्त नारी-जाति का प्रतिनिधित्व करता है, परंतु वह बात सम्पूर्ण जाति के लिए नहीं कही जा रही है। कुछ नारियों की महानता, खुशनसीबियां इच्छा-शक्ति से प्रभावित होकर यह बात कही जाती है कि—

'नारी नहीं है सपना, नारी नहीं कहानी
नारी की ही गोद में पलती है जिंदगानी'

ऐसी ही नारियों पर हमारे राष्ट्र, हमारी सृष्टि, और संस्कृति को नाज होता है। ये ही राष्ट्र के भाग्य को सर्वोच्चता के शिखर पर ले जाती हैं। लेकिन इन नारियों के अतिरिक्त कुछ बदनसीब नारियां भी होती हैं, जो कर्म-प्रधान होकर अपनी बदनसीबी हटाना चाहती हैं, इसके लिये प्रयास करती हैं। लेकिन उनकी इच्छा को समाप्त कर दिया जाता है। एक ओर पुरुष स्वच्छन्द बनकर रहता है वहीं दूसरी ओर नारी को स्वतन्त्र रहने का भी अधिकार नहीं है। अपनी बदनसीबी के सहारे वह उसी तरह रह जाती है जिस तरह कुएं में रहने वाला मेढक वह कुएं को ही अपना संसार समझता है। उसी तरह नारी भी अपने आश्रयमय पराधीन जीवन को अपना समझने को मजबूर रहती है। सोचिए, कितनी विवशता है इस नारी जीवन में ?

'ऐसे जीवन को धिक्कार प्रभु जी, नारी जन्म बेकार'

यदि नारी वास्तविक जीवन के अधिकारों से परिचित होती है तथा उन्हें पाने का प्रयास करती है तो वहां पर भी उसे विवशता और मजबूरी का साया ही मिलता है। वह उसे सहन करना पड़ता है, परन्तु उसका मन चीत्कार कर उठता है। वह अपने विकास, अपने अधिकार, अपने उत्थान के लिए आवाज उठाती है। खुलकर सामने आती हैं, परन्तु ये निर्मम दुनिया वाले घिसी-पिटी रूढ़ियों का सहारा लेकर उसकी आवाज को दबा देते हैं। जिस तरह से खिले हुए फूल को किताबों में दबाकर उसकी खिली हुई सुगंध को शांत कर दिया जाता है। वह फूल तो रहता है, परन्तु उसमें ताजगी का निखार नहीं रहता। उसी तरह इन अबलाओं का जीवन है। इन्हें हमेशा ही किसी की दया का पात्र बना दिया जाता है। अपने इस जीवन को भी ये बहुत संयम व धैर्य के साथ सहन करती हैं सिर्फ इसी आशा से कि कभी तो दिन फिरेंगे। इसी आशा में जब अत्याचार सहने की अति हो जाती है तो उसका मन क्रन्दन कर उठता है और उसके मन में बार-बार एक ही बात आती है कि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बेकद्र तेरा जोवन गम का है जो पिटारा
कब तक जियेगा पाकर बेरहमी का सहारा
जा भाग जा यहाँ से बेदिल है जग सारा
मर कर ही मिले शायद कुछ शांति का सहारा

ऐसी स्थिति में नारी भयानक घटना का शिकार हो जाती है और ऐसी स्थिति का उत्तरदायित्व पुरुषों का होता है। गाड़ी के लिए दोनों पहियों का परस्पर सहयोग जरूरी है उसी प्रकार मानव रूपी गाड़ी के लिए भी दोनों पहियों-स्त्री एवं पुरुष का बराबर महत्व हैं। परन्तु यह बात पुरुष अपने मस्तिष्क से निकाल देता है और वह यह भूल जाता है कि जिस नारी की कोख से पुरुष जन्म लेता है उसी नारी को वह मजबूरियों का शिकार बना देता है। न जाने क्यूं पुरुष के आधीन नारी को कर रखा है जबकि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

वर्तमान युग में प्रत्येक देश उन्नति की ओर कदम बढ़ा रहा है। इस उन्नति का एक हिस्सा नारी भी है। नारी को मात्र भावनाओं में बहकर कार्य नहीं करना चाहिए, बल्कि हर परिस्थिति में तर्क का सहारा लेकर ही उसे स्वीकार करना चाहिए। उसे इतना विवेकशील होना चाहिए जिससे उसकी स्थिति न बिगड़े।

समाज को, देश को और प्रत्येक व्यक्ति को नारी के महत्व को ध्यान में रखते हुए उसे उन्नति का अवसर देना चाहिये। यदि ऐसा किया जाये तो फिर समाज में नारी की वह स्थिति न रहेगी जिसमें उसे मात्र अपमान की आग में जलकर अपने अस्तित्व को खोने के लिये मजबूर होना पड़े। उनका जीवन आदर एवं श्रद्धा से पूर्ण होना चाहिये।

नारी एक अदभुत पहेली है जिसे हल करते समय मनुष्य अपना जीवन पूर्ण कर लेता है, लेकिन वह पहेली का परिणाम नहीं निकाल पाता। नारी का भी कर्तव्य है कि वह ममतामयी 'माँ' प्रेममयी आज्ञाकारी 'पत्नी' और 'सहयोगी मित्र' बनकर रहे। जो स्त्री आज्ञाकारी है वह आस्तीन का साँप होती है। ऐसा कहा जाता है, लेकिन नारी को यह गलत कर दिखाना है। नारी को काँटों के साथ रहने वाले फूल के समान शोभायमान होना चाहिये। क्योंकि नारी का अस्तित्व पुरुष के कारण व पुरुष का अस्तित्व नारी के ही कारण है। हमें बढ़ना है, बढ़ते चलना चलना है। इसी में हमारी, समाज की व देश की उन्नति है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"मेंहदी श्रृंगार भी और औषधि भी ?

डा०/श्रीमती सुधा श्रीवास्तव, बी. ए. आयुर्वेदरत्न आर. एम. पी.
शिक्षिका

मेंहदी नाम है, उसका जिसके बिना सुहागिनी का श्रृङ्गार अधूरा व त्यौहार फीके माने जाते हैं। भारतीय संस्कृति में मेंहदी का स्थान सौंदर्य एवं श्रृङ्गार उपकरणों में सर्वोपरि है। मेंहदी के नाम में जो महक है या सहज, कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति अत्यंत सुकुमार रूप है। 'मेंहदी' लोकगीत मेंहदी की मधुरता से ओतप्रोत है। हिन्दी और उर्दू साहित्य-दोनों मेंहदी के गुणगान से भरी पड़ी है। महिलायें कितनी भी आधुनिक हों, किन्तु घंटों मेंहदी लगाने का चाव पूरा किए बिना नहीं रहती। आज हर शुभकार्य में, आनंदोत्सव में मेंहदी का प्रयोग अनिवार्यतः होता है। विवाह पर तो हथलेना मेंहदी से जुड़ता है। मेंहदी लगाने से रंग सुर्ख हो जाता है और हथेली आकर्षण से भर उठती है। कलात्मक और बारीक अंकन के लिये मेंहदी पावडर को मोटे कपड़े से छानकर उसे भिंडी के चिकने पानी से घोलना चाहिये। तदोपरांत माचिस की तीली से तार उठा-उठाकर नाना प्रकार के कलात्मक झालने अंकित किए जा सकते हैं। कुछ प्रसिद्ध हैं - बून्दड़ी, लहरिया, गलीचाहेवर, कीजनी, चौपड़, जयपुर की सड़क आदि। सूखने पर नीबू चीनी के ताते लगाये जाते हैं और धीरे-धीरे यह अपनी लालिमा छोड़कर हथेलियों में रच उठती है। उस दिन हाथों पर पानी नहीं लगाया जाता बल्कि हल्का सा तेल लगा लिया जाता है।

मेंहदी में लेप हटने के गुण होने से गर्मी में रोहिणी नक्षत्र में मेंहदी लगाने का रिवाज बड़ा स्वास्थ्यप्रद है। इतने हाथ पैरों की जलन में शांति होती हैं। मेंहदी का प्रयोग बाल रंगने के लिये भी किया जाता है। मेंहदी से बाल रंगने में एलर्जी एवं त्वचा रोग का खतरा नहीं है।

रात में सोते समय तलुवों में मेंहदी लगाने से शरीर की अतिरिक्त गर्मी निकल जाती है। दिमाग में तरावट आती है। अनिद्रा रोग दूर होकर गहरी नींद आती है। आंखों की जलन मिटती है। सिरदर्द में आराम होता है और शरीर की जलन मिटती है।

यह तो सामान्य श्रृङ्गार एवं स्वास्थ्य की बात हुई आओ औषधि रूप में प्रयोग करने के कुछ उपाय देखें—

१—गर्मी में जी घबराये उल्टी या सिर में दर्द हो तो मेंहदी को गला कर सिर हथेली व तलुओं पर लेप करें।

२—अलाईयां या घमोरियां प्रायः गर्मी में हो जाती है। यह गलाकर अलाइयों पर लेप करें और पानी में गोल कर स्नान करें।

३ मुंह में छाले हों तो मेंहदी के पत्ते चबायें या पानी में घोलकर कुल्ला करें।

४—पांव की एड़ी या अंगुलियों के फटने से मेंहदी लगाने से आराम हो जाता है।

५—मेंहदी के साथ आंवला चूर्ण, भृंगराज चूर्ण, लोह-चूर्ण पीसकर जरा से तेल-पानी में डालकर रातभर गलने के बाद सुबह पीसकर बालों में लेप करें, बाद में गरम कुनकुन पानी से धो ले। कुछ दिन ऐसा करने से खिचड़ी बाल एक रंग के काले हो जावेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसरोचित परिधान

श्रीमती किरण ठाकुर
शिक्षिका

प्रत्येक व्यक्ति अपने को सुन्दरतम दर्शाने के लिए सुन्दर परिधानों का संयोजन सुन्दर ढ़ंग से करना चाहता है। परिधान के अन्तर्गत मुख्य शरीरावरण तथा हेट, टाई, बेल्ट, दस्ताने, बटन, पर्स, ब्रोच, रूमाल, स्कार्फ, मोजे, जूते, आभूषण, बाल संवारने का ढ़ंग तथा श्रृंगार-शैली आते हैं। सेन्ट और परफ्यूम को भी इसी का अंग माना जाता है।

भारतीय महिलाओं का मुख्य परिधान साड़ी-ब्लाउज ही है, पर इसे पहिनने का तरीका भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग है। भारतीय परिधान मौसम के अनुसार धारण किये जाते हैं, पहिने जाते हैं, लेकिन पश्चिमी परिधानों का चुनाव अवसर के अनुसार किया जाता है। इनमें विविधता भी अधिक पाई जाती है। ये भारतीय लोकाचार के विपरीत भी हैं। अतः रूढ़िवादी लोगों के लिए ये अखरते भी हैं। फिर आज भारत में पश्चिमी परिधानों का प्रचलन दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि ये आज के संघर्ष-मय जीवन के अनुकूल हैं।

परिधान की रचना और इन्हें पहिनने की कुछ विशिष्ट रीतियाँ हैं जिनकी जानकारी सभी को होना आवश्यक है ताकि वे अपनी कार्यकुशलता और व्यक्तित्व को बढ़ाने में सक्षम हो सकें। विभिन्न अवसरों के परिधानों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) स्कूल के परिधान—स्कूलों में बालक-बालिकाओं की एक निश्चित यूनीफार्म होती है। यहाँ छात्र अपनी इच्छानुसार वस्त्र धारण नहीं कर सकते। एक जैसे यूनीफार्म का बच्चों के मनोविकास पर अच्छा असर पड़ता है। धनी लोगों के बालकों के अच्छे कपड़ों का प्रभाव गरीब छात्रों के मन पर अच्छा नहीं पड़ता। उनमें हीन भावना पैदा होती है जो उनके व्यक्तित्व को कुँठित कर देती है। फलतः उनका विकास रुक जाता है। इसलिए स्कूल का यूनीफार्म सभी छात्रों का एक जैसा होना चाहिए।

(२) केम्पस के परिधान—कालेज कैम्पस में परिधान के सम्बन्ध में युवक-युवतियों पर कोई बन्धन नहीं होता, तथापि केम्पस के परिधान सदा शिष्टता की ही सीमा में रहना चाहिए। केम्पस के कपड़े शालीनता के द्योतक हों, अत्यधिक तड़कीले-भड़कीले नहीं होना चाहिए। बनारसी, रूपहेला कपड़ों को कालेज में नहीं पहिनना चाहिए। कपड़े लम्बे समय तक साफ-स्वच्छ बने रहें, शीघ्र गन्दे व खराब न हों। महिलाओं को यहाँ आभूषणों की आवश्यकता नहीं। ब्लाउज में अस्तीन अवश्य हों तथा हाथ में घड़ी व एक-दो चूड़ी ही पर्याप्त हैं।

(३) आफिस, बिजनेस तथा कार्यस्थल के परिधान

यहाँ के परिधान सादे, साफ-सुथरे और सँवरे हुए होना चाहिए। यहाँ सुन्दरता पर कम पर स्मार्टनेस पर अधिक ध्यान रखना चाहिए। अतः यहाँ के कपड़े औपचारिक,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरामदेह, शोफयाने और शालीन होना चाहिए। कार्य स्थल के कपड़े वस्तुतः कार्य के अनुरूप ही होना चाहिए।

(४) डिनर पार्टी आदि के परिधान—इन अवसरों के परिधान मन के उल्लास को दर्शाने वाले, बहुमूल्य, सुन्दर भड़कीले व चमकीले होना चाहिए। जरी गोटे वाले विभिन्न रंगों के कपड़े ऐसे अवसरों पर उपयुक्त होते हैं। दिन की पार्टी में इन सब पर संयम होना चाहिए और रात्रि में साटन, वेलवेट, जो आपके रंग, रूप, आकार, आकृति और जीवन शैली पर फबने वाले हों, धारण करना चाहिए। ऐसे अवसरों पर मेक-अप गहरा व अधिक किया जा सकता है। यदि डिनर औपचारिक हो तो कपड़े हल्के रंग के सौम्य और शिष्ट होना चाहिए तथा मेक-अप भी हल्का होना चाहिए।

(५) विवाह के अवसर के परिधान—ऐसे अवसरों पर परिधान विशेष रूप से सुन्दर मूल्यवान और रंग-विरंगे होना चाहिए। बनारसी, भारी, सलमें-सिनारे तथा जरी के कपड़े भी इस अवसर पर उपयुक्त होते हैं। इस समय गहनों तथा आभूषणों का उन्मुक्त रूप से प्रयोग किया जा सकता है। इस अवसर पर मन पसंद चीजों की धारणा करने की छूट रहती है। जो व्यक्तित्व को सुन्दर दिखाने में मदद करें, वे सब आभूषण व परिधान इस अवसर पर धारण किये जा सकते हैं।

(६) पर्व-त्योहार के परिधान—इस अवसर के परिधान खुशी के प्रतीक व रंग-विरंगे होना चाहिए। इस समय मौजमस्ती वाले, चटक-मटक वाले तरह-तरह के वस्त्र व परिधान तरह-तरह के ढंग से पहिने जाते हैं। यह ध्यान रखें कि जो भी पहिना जाये उसमें हृदय के उल्लास की अभिव्यक्ति होना चाहिए। केशों में फूल व प्राचीन गहने भी परिधान के अनुरूप पहिने जा सकते हैं।

(७) यात्रा के परिधान—इस अवसर के कपड़े साफ सुथरे घूमने-फिरने में आसान, लेटने-सोने में सुविधाजनक, आसानी से धुलने वाले व ताजा दिखने वाले होना चाहिए। यात्रा के समय आभूषणों की कोई जरूरत नहीं रहती।

(८) खेल के परिधान—खेल के कपड़े सुन्दर, सुविधाजनक, पसीने से मुक्त और स्वच्छ रखे जाने वाले होना चाहिए। खेल के कपड़ों में अवशोषकता का गुण होना जरूरी है। दर्शक के रूप में रंग-बिरंगे परिधान, हेड, स्कार्फ पहिनना चाहिए। घुड़सवारी एवं गोल्फ़ आदि के लिए जीन्स और स्पोर्ट शर्ट अच्छी रहती है।

(९) शोक के अवसरों के परिधान—शोक के अवसर पर संवेदना और सहानुभूति प्रकट करने जाते हैं। अतः उस समय सफेद कपड़े ही उचित रहते हैं। ऐसे अवसरों पर गहरे रंग और भड़कीले वस्त्रों को कभी नहीं पहिनना चाहिए। ऐसे अवसर अलंकार एवं अलंकरण दोनों ही वर्जित हैं।

(१०) शिक्षिकाओं के परिधान—अधिक सजना और संवरना शिक्षिकाओं के लिए उचित नहीं है। इन्हें चटकीले-भड़कीले जरी व बनारसी कपड़े भी नहीं पहिनना चाहिए। बालों में फूल-गजरों का प्रयोग भी वर्जित है। आभूषण एक-दो से अधिक नहीं पहिनना चाहिए। इस सबका गहरा प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। अतः शिक्षिका को सादे व शालीन वस्त्र ही धारण करना चाहिए। शाल, स्वेटर, कार्डीगन आदि रंगमय तथा सुन्दर पहिने जा सकते हैं, परन्तु वे भी सम्पूर्ण संयोजन से मैच करने वाले हों ताकि शिक्षिका के व्यक्तित्व का अच्छा प्रभाव छात्रों पर पड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"भू-विज्ञान

श्रीमती सुलेखा जैन, बी. एस. सी. बी. एड.
शिक्षिका

भू-विज्ञान का शाब्दिक अर्थ है-"वह विज्ञान जो पृथ्वी के बारे में जानकारी प्राप्त कराता हो।" जिस प्रकार से विज्ञान मनुष्यों की आवश्यकताओं को सरल व सरस बनाता है, उसी प्रकार से विज्ञान, विज्ञान के छात्रों व अध्यापकों में कोई भी वस्तु देखकर प्रश्न करने की इच्छा जागृत कराता है कि यह वस्तु क्यों और कैसे बनी? भू-विज्ञान के जानने की इच्छा रखने वाले अपने प्रश्न का जबाब क्यों और कैसे से ही पाते हैं।

भू-विज्ञान की दृष्टि में पृथ्वी, सौरमंडल का एक सदस्य है, जिस सौरमंडल में एक तारा, नौ ग्रह, २८ चन्द्रमा इत्यादि सदस्य हैं। उसी प्रकार प्रत्येक तारे का अपना सौर मंडल है। सूर्य एक तारा है। सूर्य के बाद निकटतम तारा ४।। प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है। अनेक सौरमंडल मिलकर के "ब्रह्माण्ड" कहलाता है। इस प्रकार पृथ्वी की उपस्थिति का एहसास हमें हो जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी, ब्रह्माण्ड में अपना अस्तित्व रखती है। उसी तरह प्रत्येक मनुष्य अपना अस्तित्व पृथ्वी पर रखता है। मानव-जीवन के लिये आवश्यक प्रत्येक वस्तु पृथ्वी से प्राप्त होती है। चाहे वह हवा, पानी, पेट्रोलियम कोयला, हीरा, सोना, चाँदी ही क्यों न हो।

भू-विज्ञान को व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो भू-विज्ञान पर मानव की निर्भरता अधिक समक्ष में आयेगी। भू-विज्ञान जीवन के प्रत्येक क्षण व आवश्यकताओं की पूर्ति से इस तरह जुड़ा है कि इसके बारे में और अधिक जानने की इच्छा जागृत होने लगती है।

व्यवहारिक दृष्टि से प्रारंभिक अंश में हम महत्वपूर्ण आवश्यकता की तरफ ध्यान दें तो लगेगा कि पानी इतना आवश्यक है कि पानी को जीवन की संज्ञा दी जा सकती है। भू-विज्ञान की सहायता से हम उन सभी जलस्त्रोतों का पता लगाते हैं, जो भू-गर्भीय जल के भंडारों पर निर्भर करते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि पानी का प्रमुख स्त्रोत वर्षा है। यही पानी पृथ्वी के गर्भ में स्थित छिद्रदार चट्टानों में इकट्ठा हो जाता है। पानी का अधिकतर sand stone alluviruran आदि में इकट्ठा हो जाता है और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के कारण अधिक ऊँचाई वाले स्थान से कम ऊंचाई वाले स्थानों की ओर बहता है। यदि हम पृथ्वी के अंदर पाये जाने वाले पानी की संरचना एवं बहकर जाने वाली जगह का पता लगा लें। तो हम आसानी से यह सकते हैं कि कहाँ कुआँ बनाया जा सके। उसमें कितना पानी निकलेगा? पानी खारा होगा या मीठा? स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है या नुकसानदायक? सिंचाई के उपयोग का है, या कारखानों के उपयोग का? ये सभी बातें केवल कुछ ही प्रयोग करके, कम खर्चे में मालूम हो जाती हैं।

जलस्त्रोतों में दूसरे जलस्त्रोत वे हैं, जिनमें हम पानी बाहर से देखते हैं। जैसे-नदियाँ, झरने, झील, समुद्र इत्यादि। नदियाँ बारह महीने बहती हैं, जबकि पानी केवल वर्षा-ऋतु में ही गिरता है। इसका प्रमुख कारण है कि नदी भू-गर्भीय जलस्त्रोतों के भंडार से निरंतर पानी प्राप्त करती हैं। पेड़ बारह महीने हरे दिखाई देते हैं, क्योंकि ये भी अपनी गहराई तक पहुँची हुई जड़ों से पानी प्राप्त करते है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसके बाद अपनी दृष्टि घुमाने पर हम सोचे तो हम पायेंगे कि जमीन के अंदर एक मीटर नीचे के बारे में भी हम कुछ नहीं जान सकते हैं। परन्तु भू-विज्ञान की सहायता से भू-गर्भ के बारे में कुछ तथ्य इस प्रकार सामने आते हैं कि हम सभी कुछ बतला सकते हैं। सबसे सरल साधन खुदाई करने का है। परन्तु अभी तक हम गहरी से गहरी खदानों में २-२।। मील से अधिक नहीं खोद सके हैं। पृथ्वी के रहस्यमयी गर्भ की संरचना को जानने के भी साधन भू-विज्ञान ने दिये हैं। जिसमें बहुउपयोगी भूकम्पीय तरंगों के अध्ययन की विधि है। जिससे भू-गर्भीय संरचना जानी जा सकती है। इसके अनुसार कुछ तथ्य सामने आते हैं। जैसे कि ४००० मील के व्यास वाली पृथ्वी के अंदर आन्तरिक भाग (core) लोहा और निकिल जैसी धातु का बना है। जिसका आपेक्षिक घनत्व (Specific gravity) ११ से १२ तक है। दूसरी सतह में विभिन्न प्रकार की चट्टाने द्रवित अवस्था में रहती हैं। सबसे बाहरी सतह ठोस अवस्था में पाई जाती है, जिसे पृथ्वी की बाहरी सतह या (crust of the Earth) कहते हैं।

पृथ्वी के अन्दर के ताप के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना होगी। जैसे-जैसे हम पृथ्वी की सतह से अन्दर की तरफ जाते हैं। तापक्रम डिग्री सेंटीग्रेड प्रति ३२ फुट पर बढ़ता जाता है। यदि इस प्रकार से हम केन्द्र में पहुंचे तो तापक्रम करीब ६००० डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच जावेगा। उसी प्रकार पृथ्वी की गहराई के साथ-साथ दाब भी बढ़ता जाता है। इतने अधिक ताप एवं दबाव पर कोई भी वस्तु ठोस अवस्था में नहीं रह सकती। यही कारण है कि ७० किलोमीटर से नीचे सभी चट्टाने द्रव अवस्था में पायी जावेंगी। पृथ्वी की सतह जो ठोस अवस्था में है, उसकी गहराई १० किलोमीटर (कम से कम) से ७० किलोमीटर (अधिक से अधिक) है। सभी प्रकार के खनिज इसी बाहरी सतह में पाये जाते हैं।

जब द्रवित चट्टानें या मैग्मा पृथ्वी की सतह में आयी हुई दरारों में घुस जाती हैं, तो धीरे-धीरे उसका तापक्रम कम होने लगता है। तथा वह ठंडा पड़ने लगता है। ठंडे होकर विभिन्न प्रकार के खनिज व चट्टानों का निर्माण होता है। खनिज का प्रकार, संरचना व आकार उस स्थिति पर निर्भर करता है, जिसमें द्रवित चट्टानों का ठंडा होना चालू होता है। इस प्रकार के पाये गये खनिजो में विशेषता होती है कि प्रत्येक खनिज विशेष की परमाणु संरचना व रसायनिक (composition) रचना एक ही रहेगी। इस प्रकार हजार से भी ज्यादा प्रकार के खनिज प्रकृति में उपलब्ध हैं।

पेट्रोलियम या खनिज तेल के निर्माण की जटिल प्रक्रिया का सम्बन्ध प्रकृति से है। उसी प्रकार की जटिल परिस्थितियों में उसकी खोज की जानी है। आज जबकि पेट्रोल युग आ गया है, इसकी सहायता से अनेक जीवनोपयोगी वस्तुयें, यहाँ तक कि कपड़े, खाद, प्लास्टिक, नाइलोन दवाईयां भी इसके ऊपर निर्भर हो गई हैं, तब भू-वैज्ञानिकों ने जमीन के अन्दर हजारों मीटर नीचे से इसके भंडारों का पता लगाया हैं। आज भारत भी पेट्रोलियम के क्षेत्र में आत्म-निर्भर बनने की कोशिश कर रहा है।

लोह अयस्क, तांबे के भन्डार, बॉक्साइड, के भन्डार, लाइमस्टोन, कोयला के भन्डार, अभ्रक के भन्डार इत्यादि कुछ उदाहरण हैं। जो समझाने की कोशिश करते हैं कि पृथ्वी का गर्भ किस प्रकार की खनिज सम्पदा से भरा पड़ा है। सभी जानते हैं कि आज स्टील है बर्तन से लेकर रेल गाड़ी, हवाई-जहाज व छोटी से छोटी चीजें भी खनिज सम्पदा की देन है। किसी भी देश की अमीरी को उस देश की खनिज संपदा से आंका जा सकता है। खनिज-संपदा एक ऐसा भंडार है या ऐसा उत्पादन है, जिसको बनाने के लिये कोई पैसा खर्च नहीं होता, केवल उसके दोहन के लिये खर्च करना होता है। अतः ऐसा भंडार अमूल्य है।

भू-विज्ञान से जमीन के गर्भ की संरचना जानने की अनेक विधियाँ विकसित हुई हैं, जो सबसे सस्ती विधि कही जा सकती हैं। चाहे आपको बाँध बनाने के लिये जगह चुनना हो, चाहे High way बनाना हो, हवाई अड्डा बनाना हो, पुल बनाना हो या मकान बनाना हो, सभी पृथ्वी के ऊपर १० फुट से ५०० फुट की गहराई तक की संरचना के आधार पर बनाये जाते हैं। ये सभी बड़े-बड़े इंजीनियरिंग Structure बनाने के लिये भी आवश्यक सामग्री (raw

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

material) चाहिये। जैसे कि पत्थर, मिट्टी, सीमेंट इत्यादि। पत्थर के भंडार से लेकर उस Structure के बने रहने की सुरक्षा भी पृथ्वी की संरचना पर निर्भर करती है। जहाँ पर उसे बनाया जा रहा है, या बनाया गया है। भू-विज्ञान इन सभी बातों में हमारी मदद करता है। भू-विज्ञान के बारे में इतना जानने के बाद हम कह सकते हैं कि इसके बारे में अधिक से अधिक एवं सही जानकारी यदि हम प्राप्त करें तो यह काफी सरस, सरल एवं जीवन-उपयोगी विज्ञान हैं, जो हमारे हर पल, हर बिन्दु पर मार्ग-दर्शन करता है, एवं निर्भरता की प्रतीक है।

कु० मालती दुबे, कक्षा ९ वीं

१—दो मित्र कार को पार्क में चोड़कर बाजार की ओर चल पड़े। रास्ते में एक मित्र ने दूसरे से कहा—'यार तेरी कार चोरी तो नहीं हो जाएगी?' दूसरे ने बड़ी हैरानी से पूछा—'क्यों?' तो पहले मित्र ने कहा—'यार, मेरा रूमाल उसमें रह गया है।'

२—पत्नी—(पति से) 'आज त्यौहार का दिन है। आफिस से आते वक्त अपने साथ कुछ चमचे ले आना।' शाम को जब पतिदेव घर आये तो उनके साथ आफिस के कुछ व्यक्ति थे। उन्हें देख पत्नी ने पूछा—'ये कौन हैं?' पतिदेव बोले—'तुम्हीं ने तो कहा था कि जब आफिस से आतो तो कुछ चमचे ले आना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"मनीषियों की नजर में नारी"

कु० किरण जैन
(भूतपूर्व छात्र)

(१) —"नारी जगत् की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।"

—चतुरसेन शास्त्री

(२) —"सौन्दर्य से नारी अभिमानी बनती है, उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है और लज्जाशील होकर वह देवी बन जाती है।"

—शेक्सपियर

(३) —"स्त्रियों का सम्मान करो। वे हमारे पार्थिव जीवन को स्वर्गीय सुमनों से सुरभित एवं गुंफित बनाती है।"

—शिलर

(४) —"स्त्रियों की आँखों में कानून से भी अधिक शक्ति होती है और किसी भी तर्क से अधिक उसके आँसू प्रभावशाली होते हैं।"

—स्पेन लोकोक्ति

(५) —"जिसके घर में भली स्त्री है, उस पर ऐसी कोई विपत्ति नहीं आ सकती, जिसे वह सह नहीं सके।

- स्पेन लोकोक्ति

(६) —"पवित्र नारी सृष्टिकर्त्ता की सर्वोत्तम कृति होती है। वह सृष्टि के सम्पूर्ण सौन्दर्य को आत्मसात् किये रहती है।"

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(७) —"अपना घर और साध्वी स्त्री, सोना और मोतियों के बराबर है।"

—गेटे

(८) —"कंटकपूर्ण शाखा को फूल सुन्दर बना देते हैं और गरीब से गरीब घद को लज्जावती युवती स्वर्ग बना देती है।"

—गोल्डस्मिथ

(९) —"अगर अहिंसा हमारे जीवन का धर्म है तो भविष्य स्त्री के हाथ में है। दुनियाँ शान्ति के अमृत की प्यासी है। उसे शान्ति की कला सिखाने का काम स्त्री का है।"

—महात्मा गांधी

(१०) —"पति के लिए चरित्र, सन्तान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए प्रेम तथा जीव मात्र के लिए दया संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है।"

—रमण

(११) "घर को उज्जवल करने वाली और पवित्र आचरण वाली महाभाग्यवती स्त्रियाँ पूजनीय हैं, क्योंकि वे घर की लक्ष्मी (गृहलक्ष्मी) कही गई हैं। अतः उनकी विशेषता से रक्षा करें।"

—महाभारत

(१२) —"जहाँ स्त्रियाँ पूजी जाती हैं, वहाँ देवता रमण करते हैं और जिस कुल में स्त्रियां अपमानित होती हैं, वह कुल विनष्ट हो जाता है।"

—मनु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१३) —"शास्त्र के द्वारा निर्धारित आचार व्रत का पालन नारियाँ अधिक करती है। अतः वे पुरुषों से अधिक पवित्र है। पुरुष की उच्चता उनके सामने कहाँ ?"

—बराहमिहिर

(१४) —"जैसे घर की देहली पर रखा दीपक बाहर और भीतर समान रूप से प्रकाश करता है वेसे ही पुरातन मर्यादाओं के खेमे में रहते हुए भी महिलायें नित्य बदलती हुई परिस्थितियों के साथ समन्वय करने की सहजबुद्धि रखती हैं। अतएव पुरुषवर्ग से अधिक चरित्र की रक्षा स्त्री-वर्ग ने की है और आज जो धर्म के प्रति पुरुष-वर्ग की जो आस्था है तो उसके मूल में स्त्रियों की धार्यिकता ही निमित्त है।"

—मुनि श्री विद्यानन्द जी

(१५) —"नारी को अबला कहना, उसका अपमान करना है, उसके व्यक्तित्व को कुंठित करना है। नारी सबला है, मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में वह पुरुष से कम नहीं है।"

—महात्मा गाँधी

(१६) —"यदि नारी-वर्ग शिक्षित होकर सदाचारी हो जावे तो आज भारत क्या जितना जगत् मनुष्य के गम्य है, वह सभ्य हो सकता है। आज जिस समस्या का हल उत्तम से उत्तम मस्तिष्क वाले नहीं कर सकते, उसका हल अनायास ही हो जायेगा। पंचम काल में चतुर्थकाल का दृश्य यदि देखना है तो नारी-समाज की उपेक्षा न कर उसे सुशिक्षित बनाओ।"

—क्षु० गणेश प्रसाद वर्णी

—: ० :—

हम भारत के भावी सैनिक

कु० साधना सेन, कक्षा ६ बी

१ — हम भारत के भावी सैनिक हिन्दुस्तान हमारा है।
आजादी के पहरेदारों में स्थान हमारा है॥

१ — जिस आजादी को पाने में कितनों ने है प्राण दिये।
कितनी ही ललनाओं ने अपने मस्तक के सिन्दुर दिये॥
उस आजादी की रक्षा करने का काम हमारा है।
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान हमारा है॥

२— विश्व विजय करने की हमको सपने में भी चाह नहीं।
पर, स्वदेश को पर हाथो में देने को तैयार नहीं॥
"भारत माँ आजाद रहे" बस यही हमारा नारा है।
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान हमारा है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"मुहासों को दूर भगायें"

कु० साधना जैन, कक्षा ६ वी

तरुणावस्था आते ही युवक-युवतियों को मुंहासे धर दबोचते हैं। ये बडे कष्टप्रद होते हैं और मुख-सौन्दर्य के घोर शत्रु हैं। यौवन की देहलीज पर चरण रखते ही अधिकांश युवतियों के मुख-चन्द्र पर ग्रहण की भांति उभर कर ये पूरा जेहरा ही विकृत तथा वीभत्त कर देते हैं।

इनके होने का मुख्य कारण शरीर की उष्णता है। यदि शरीर कब्जियत से भरा है, खाने में अधिक गरम मसाला, मिर्च, गरिाठ भोजन एवं चाट की अधिकता है तो यह रोग अपनी जड़ें जमा लेता है और धीरे-धीरे बढ़कर पूरे शरीर के रक्त को भी दूषित कर देता है। कभी-कभी ये पारिवारिक दोष के कारण भी होते हैं, परन्तु अधिकांशत: पेट साफ न होने, अपच व मन्दाग्नि से ही होते हैं।

अत: चेहरे के सौन्दर्य की रक्षा हेतु सर्वप्रथम इसके रोगियों को अपने भोजन में परिवर्तन करना चाहिये। प्रातः दांत साफ करने के बाद आधे नीबू का रस एक गिलास पानी से डालकर पीना चाहिये तब शौच जाना चाहिये। "बेड टी" की आदत कभी नहीं डालनी चाहिये।

प्रातःकाल के नाश्ते में अंकुरित अनाज, केसे मूंग, गेहूं या चना आदि अदरक या किसमिस के साथ लेना चाहिये। यदि दही मही न मिले तो भुने जीरे या काले नमक के साथ लेना चाहिये। दोपहर के भोजन में कम मसाले की सब्जी, प्याज, धनिया की हरी पत्ती, आंवला, खीरा आदि का सलाद लेना चाहिये। भोजन के बाद इच्छानुसार मौसमी फलों (अमरूद, पपीता, संतरा, आम, सेव, केला, गन्ने का रस आदि) का सेवन करना चाहिये। सांय चार बजे के बाद दही-मही लेना चाहिये। रात में सोने से तीन घन्टे पूर्व भोजन कर लेना चाहिये। अच्छा हो सूर्यास्त के पूर्व ही भोजन कर लिया जावे। भोजन हल्का व सुपाच्य होना चाहिये।

उपर्युक्त खान-पान से चेहरे पर लाली व कांति उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी और मुंहासे कभी नहीं होंगे।

जिन्हें ये निकल आयें हैं, उन्हें उपर्युक्त खान पान के साथ-साथ निम्न में से कोई भी एक उपाय सुविधानुसार करना चाहिये। इससे मुहासों का नामो निशान न रहेगा।

१—नीम की जड़ से छाल अलग कर पानी में चन्दन की भांति घिसकर प्रतिदिन सुबह शाम मुहासों पर लगायें।

२—नीबू काटकर उस पर थोड़ा सा नौसादर छिड़क दें। गल जाने पर उसे चेहरे पर रगड़ लें। सूखने पर गरम पानी से धो देवें।

३—नारंगी या सन्तरे की छाल पीसकर लेप करे।

४—सन्तरे के छिलके को बेसन के साथ पीसकर उबटन की तरह से मुंह पर लेप करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५—मसूर की दाल भूनकर उसका चूर्ण करें। इसे दूध में मिलाकर उबटन की तरह लगायें।

६—लोध, धनियाँ, ककड़ी, बच ये सम-भाग में लेकर चूर्ण करें। इसे दूध के साथ फेंटकर रात में सोते समय लेप करें।

७—मसूर, लाल चन्दन, मजिष्ठा, कूट, लोध, प्रियंगु के बीज तथा बरगद के अंकुर बराबर मात्रा में लेकर पानी में पीसकर रात में सोते समय लेप करें।

८—निबोली (नीम के बीज) को पीस कर लेप करें।

९—गन्ने के सिरके में नीली थोड़ी तीन दिन तक भीगने दें। बाद में इसे पीसकर प्रातः व सांय चेहरे पर लेप करें।

१०—छिलका सहित भुनी मसूर की दाल को बकरी के दूध के साथ पीसकर शहद और घी के साथ प्रतिदिन लेप करें।

११—समुद्र फेन के साथ हल्दी को पीसकर प्रातः सांय लेप करें।

१२—चिरौजी, मसूर की दाल, पीली सरसों-तीओं को समभाग में चूर्ण करें। रात में गरम पानी से मुंह धोकर इसका लेप करें।

ये सभी आयुर्वेदिक विधियाँ प्राकृतिक उत्तम व अनुभूत है। इनका प्रयोग कर मुहासों से अपनी रक्षा करें।

सीख

कु० पुष्पा केवट, कक्षा ७ वी अ)

एक बार भालू ने सोचा, उड़ूं गगन में जाकर ।
पास पहुंच चिड़िया रानी के, कहता बात बनाकर ॥
नीचे उतरो मेरी बहिना, तुमको बात बताऊं ।
बिछुड़ गया है मेरा साथी, कैसे मन बहलाऊं ॥

सत्य कहूं मैं प्यारी बहिना, हम-तुम संग रहेंगे ।
आधा-आधा मिलकर खायें, सच्चे मित्र बनेंगे ॥
नीचे उतरी चिड़िया रानी, पकड़ा शीघ्र झपटकर ।
लगा खींचने पंख सभी तब, चिड़िया बोली घिघियाकर ॥

"भैया छोड़ो" कहती रोती, चिड़िया स्वर्ग सिधारी ।
मतिमारे भालू ने फिर की, उड़ने की तैयारी ॥
लगा गोंद पंखों में उसने, अपने तन पर चिपकाए ।
लगा सोचने रोज उड़ूंगा, जहां जहां मन जाए ॥

पहुच गया ऊँची चोटी पर (वहाँ से) एक छलांग लगाई ।
तड़फ-तड़फ कर भालू ने फिर, अपनी जान गंवाई ॥
कहत विनीत सुनो रे बच्चों, परहित के नित काम करो ।
सत्य अहिंसा की राहों पर चलकर अपना नाम करो ॥

—: ० :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाला की छात्रायें लेजम प्रदर्शन करती हुई

१५ अगस्त पर छात्रायें गीत प्रस्तुत करती हुई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांस्कृतिक कार्य-क्रम में भाग लेती हुई छात्रायें

श्री नाभिनन्दन शिशु मन्दिर के बालक बालिकायें अपनी शिक्षिकाओं के साथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कथा-कहानी

—: ० :—

मानव मन जिज्ञासु होता है। वह सदैव और अधिक जानने के लिये प्रयत्नशील रहता है। कथा कहानियाँ काफी हद तक जिज्ञासा को शांत करने में सहायक होती है। जहाँ छोटे बच्चे चन्दा मामा और परियों की कथायें नानी, दादी से सुनकर प्रसन्न होते हैं। वही बड़े और प्रबुद्ध वर्ग भी कहानियों में रुचि रखते हैं। वर्तमान परिवेश में मनुष्य की जिन्दगी का मशीनीकरण हो गया है। लम्बे-लम्बे उपन्यास पढ़ना, समयाभाव के कारण कठिन हो गया है। ऐसी परिस्थितियों में लघु कथायें महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। कहानी रोचक, शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक होना चाहिये। कथा-कहानी स्तम्भ में हम इसी प्रकार की कहानियों को सम्मिलित करने की कोशिश कर रहे हैं।

—सम्पादक

"छोटी बहू"

कु० स्वास्ति जैन, कक्षा ११वीं

एक गांव के जमींदार के पांच पुत्र थे। चार पुत्रों की शादी हो चुकी थी। सबसे छोटा अविवाहित था। यद्यपि सभी भाइयों में आपस में बड़ा प्रेम था; परन्तु उनकी पत्नियां आपस में लड़ती-झगड़ती थीं। वे सभी कामचोर भी थीं। कुछ समय बाद छोटे लड़के की भी शादी हुयी और नई बहू जब इस घर में आई तो अपनी जिठानियों का यह हाल देख बड़ी दुखी हुई। वह सोचने लगी—"मेरे माता-पिता ने तो मुझे बचपन से ही अच्छी शिक्षा दी है। मैं इस कलहपूर्ण वातावरण में कैसे रह पाऊंगी?" वह एकांत में भगवान से प्रार्थना करती—'हे भगवान! मुझे ऐसी सद्बुद्धि देना कि मैं इनको सही राह पर ला सकूं।" फिर वह कुछ सोचकर घर के कामों को स्वयं अपने हाथों से करने लगी। उसकी चारों जिठानियों और सास-ससुर का खाना पांच जगह अलग-अलग बनता था। किसी की बीमारी के समय कोई एक दूसरे का काम नहीं करता था। एक दिन इस छोटी बहू ने सास-ससुर का खाना बना दिया। दूसरे दिन दूसरी जिठानी का। इस तरह वह धीरे-धीरे सभी का खाना स्वयं बनाने और खिलाने लगी। इससे उसकी जिठानियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे छोटी बहू को समझदार व होशियार समझने लगी और इसकी प्रशंसा भी करने लगीं। अब उनके मन से द्वेष निकल गया। वे सभी मिल जुल कर एक ही रसोई में काम करने लगी।

तब छोटी बहू ने कुयें से पानी भरना और घर पर आटा पीसना शुरू कर दिया। यह सब देख जिठानियों ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटी बहू से पूछा कि वह ऐसा क्यों करती है ? उसे इसमें क्या आनन्द आता है ? तब छोटी बहू बोली—"दीदी, इन सब कामों से मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। दूसरे, घर के इन सब कामों को अपने हाथ से ही करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है, बीमारियाँ नहीं होतीं। अपने हाथ के पिसे आटे में पोषक तत्व अधिक रहते हैं। चक्की पर आटे में अनेक अशुद्धियाँ भी मिल जाती हैं जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं, इनसे बीमारियाँ भी घेर लेती हैं। इसी तरह कुयें का पानी शुद्ध होता है। नल का पानी अशुद्ध होता है। पानी भरने और आटा पीसने में शरीर का व्यायाम भी हो जाता है, जिससे मन प्रसन्न और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

छोटी बहू की बातें सुनकर वे सभी दंग रह गईं। वे उसका लोहा मान गयीं।

एक बार उसके ससुर ने सभी बहुओं के लिये जेवर, गहने, आभूषण और वस्त्र लाकर दिये। पहली चारों बहुओं ने अपने-अपने हिस्से का सामान लेकर रख लिया पर छोटी बहू ने अपने हिस्से का सभी सामान अपनी जिठानियों में यह कहकर बांट दिया कि मेरे पास अभी बहुत से आभूषण तथा वस्त्र हैं। मुझे इनकी जरूरत नहीं है। आप लोग ही इन्हें ले लें। जेठानियों के कहने पर उसने उत्तर दिया कि 'मेरे माँ-बाप ने मुझे यही शिक्षा दी है कि हर चीज मिल-बांटकर ही लेना चाहिये।'

उसकी ऐसी मीठी वाणी, मधुर व्यवहार, कार्यक्षमता, बुद्धिमानी, स्वावलम्बन के गुणों से सभी जिठानियाँ बड़ी प्रभावित हुईं। उन्हें अपने आपसे, अपनी गतिविधियों से, व कार्यों से ग्लानि होने लगी और वे पूरी तरह से छोटी बहू के ही समान प्रत्येक कार्य स्वयं करने लगीं।

इस तरह छोटी बहू ने अपने मीठे वचन व मधुर व्यवहार से सब का हृदय जीत लिया। कलहपूर्ण वातावरण को सुख-शांति में बदल दिया। छोटी बहू की चतुराई से उस घर में फिर से सुख-शान्ति की बहारें छा गईं। सच है—ऐसी नारियाँ ही गृहलक्ष्मी कही जाती हैं।

—: ० :—

भारत महिमा

कु० रानी विश्वकर्मा, कक्षा नवीं

भारत वर्ष से निराला कोई देश नहीं
ऐसी आन-बान वाला कोई देश नहीं
जन्मे यहीं प्रताप, शिवाजी,
दयानन्द गांधी नेताजी
ऐसा लाल जवाहर वाला कोई देश नही
प्रिय वसन्त हेमन्त मनोरम
वर्षा शिशिर शीत और ग्रीषम
ऐसा छः-छः ऋतुओं वाला कोई देश नहीं
गंगा-यमुना, सी सरितायें
निर्मल शीतल नीर बहायें
ऐसा मन-भावन हरियाला कोई देश नहीं।

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"शलगम का मुखौटा"

कु० रुकमणी सोनी, कक्षा ६वीं

राजू एक हसमुख लड़का था। वह तरह-तरह के वेश बनाकर लोगों को हंसाया करता था, मगर पिता की अचानक मृत्यु होने के वाद वह उदास रहने लगा।

राजू का मित्र राकेश उसे समझाता। उसके दुख को दूर करने के लिये इधर-उधर घुमाता, मगर राजू की उदासी न टूटी। एक दिन उसने राजू को बताया—'कल मेरा जन्मदिन है। तुम्हें उक्त अवसर पर मेरे घर जरूर आना है।'

राजू क्या करता। राकेश की बात को टाल नहीं सकता था। दूसरे दिन उत्सव में जा पहुँचा। वहाँ सब बच्चे बैठे उसका इंतजार ही कर रहे थे। एक बच्चे ने शलगम का मुखौटा राजू को पहना दिया। यह देख, सभी हँसने लगे। तभी राकेश के पिता ने बच्चों को भोजन के लिये बुलाया। राजू ने मुखौटा उतारा। तो वह फिर से उदास हो गया। उसे अपना पिछला दिन याद आ गया।

राजू को उदास खड़ा देख राकेश उसके पास आया राजू ने मन की बात जानकर वोला—'इसमें उदास होने की बात क्या है? इस बार हम तुम्हारा जन्मदिन मनायेंगे। विश्वास न हो तो पिताजी से पूछ लो।' ऐसा कहकर वह राजू को अपने पिता के पास ले गया। राकेश के पिता ने राजू को गोद में उठाया और कहा—'बेटा।' राकेश ठीक ही कहता है। तुम्हारा जन्म दिन मनाऊँगा। तुम भी तो मेरे बेटे हो।' राकेश के पिता से उक्त वात्सल्यपूर्ण शब्दों को सुनकर राजू की आंखों में आंसू आ गये। उसे राकेश के पिता में अपने ही पिता के दर्शन हुये। वह अपने पिता के दर्शन हुये। वह अपने पिता के अभाव को भूल गया। राकेश के पिता भी उसे अपने ही बेटे की तरह स्नेह करने लगे। और राजू के चेहरे से उदासी गायब हो गई।

हमारा देश

कु० शशि द्विवेदी, कक्षा ७वीं 'अ'

सुन्दर-सुन्दर प्यारा देश
अपना जग से न्यारा देश॥
हरी-भरी धरती वाला यह,
हर आंखों का तारा देश॥
चमक रहा है, जग के नभ में,
झिलमिल बना सितारा देश॥
इसके होकर पुत्र धन्य हम।
ऐसा मधुर हमारा देश॥
आओ इसे महान् बनायें।
सबका बने सहारा देश॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"लालची शिकारी"

हेमलता पराशर, कक्षा १०वीं

एक नदी थी। उसमें एक कछुआ रहता था। नदी के पास ही एक वन था। वन में मोर रहता था। जब कभी मोर नाचता तो कछुआ उसका नाच देखता और बहुत खुश होता। एक दिन कछुआ मोर के पास गया और बोला—मैं तुम्हारा नाच रोज देखता हूं तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो। तुम मेरे मित्र बन जाओ मोर बोला - मुझे मन्जूर है।

इसी तरह कई दिन बीत गये। एक दिन उस वन में एक शिकारी आया। उसने मोर को नाचते देखा। उसके मन में लालच भर गया। उसने मोर को जाल में फँसा लिया। जाल में फँसा देखकर कछुआ शिकारी के पास गया और बोला—'शिकारीजी' आज मेरे मित्र को न ले जाये आप जो मागेंगे वह देने की कोशिश करूंगा।' अच्छा मै तुम्हारे मित्र को छोड़ दूंगा। तुम मुझे नदी में से एक हीरा लाकर दे दो। कछुआ गया। डुबकी लगायी और देखते ही देखते हीरा ले आया। शिकारी बड़ा प्रसन्न होकर घर चला गया।

रात को सोते समय वह सोचने लगा—"यदि मैं दो हीरे मांग लेता तो कछुआ अपने मित्र को बचाने के लिये दो भी ला देता।" वह बेचैन हो उठा। रात भर उसे नींद नहीं आयी।

अगले दिन सुबह ही शिकारी वन की ओर निकल पड़ा। इधर कछुए ने मोर से कहा—मित्र तुम अब दूसरे वन में चले जाओ। शिकारी कभी भी आ सकता है। मोर चला गया। शिकारी वन में पहुँचा। उसे कछुआ तथा मोर दोनों नहीं मिले। वह नदी के पास गया। कछुआ उसे वहाँ मिला। उसे देख शिकारी बोला—कछुए भाई, तुम मेरे लिये एक और हीरा ला दो। मैं तुम्हारे मित्र को कभी नहीं पकड़ूंगा। कछुआ बोला—ठीक है भाई। तुम मुझे पहला वाला हीरा दे दो। उसे लेकर मैं अभी दूसरा हीरा ले आता हूँ।

शिकारी बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उसे पहला वाला हीरा दे दिया। कछुए ने पानी में डुबकी लगाई। इसके बाद वह बाहर निकला ही नहीं। शिकारी अपना सिर धुनता रहा।

इसी लिये कहा है—

'माखी गुड़ में गढ़ी रही, पंख रह्यो लिपटाय,
हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय।'

इससे हमें यही शिक्षा लेनी चाहिये कि हमें कभी लालच मे नहीं पड़ना चाहिये। नहीं तो 'आधी छोड़ एक को धावै, दो में से एक ही न पावै' वाली कहावत हमारे साथ भी चरितार्थ हो सकती है। दूसरे हीरे के लालच में शिकारी को अपने पहले हीरे से भी हाथ धोना पड़े।

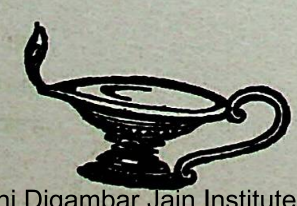

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोक कथा—

ठगी का फल

कु० ऊषा गोस्वामी, कक्षा १०वीं

—किसी गाँव में एक पंडित जी रहते थे। वे भिक्षा मांगकर अपनी आजीविका चलाते थे, पर भिक्षा से उन्हें इतना भी नहीं मिलता था कि वे अपनी और अपनी पत्नी की ठीक से उदरपूर्ति कर सकें। एक दिन नाश्ता के लिए चार रोटियां लेकर वे भिक्षा के लिए दूसरे गाँव को चल दिये। रास्ते में उन्हें एक बावड़ी मिली, जिसमें चार परियाँ रहती थीं। पंडित जी ने यहां नाश्ता करने का विचार कर बावड़ी के चारों कोनों पर एक-एक रोटी रख दी और कहने लगे 'एक खाऊँ कि दो खाऊँ कि चारों चट कर जाऊँ' क्योंकि उन्हें भूख बहुत जोरों से लग आई थी।

—पंडित जी के उक्त शब्द बावड़ी की परियों ने सुने। वे बहुत घबड़ा गईं। उन्होंने समझा कि यह व्यक्ति हम चारों परियों को खाने की बात कह रहा है। अतः एक परी साहस कर ऊपर आई और पंडित जी से बोली—

—'पंडित जी हम लोगों को मत खाओ। हम तुम्हें सोने की लेंड़ी देने वाली यह बकरी देते हैं'। इस लिये पुत्ते स्थान पर खड़ा करके धीरे-धीरे छड़ी घुमाते हुए कहना कि 'बकरी सोने की लेंड़ी दे' तो यह सोने की लेंड़ी देने लगेगी। इससे तुम मालामाल हो जाओगे।'

—परी की बात से पंडित जी बड़े खुश हुए। वे बकरी लेकर घर वापिस लौट पड़े। रास्ते में उन्हें शाम हो गई। वहीं एक मकान था जिसमें कोई एक स्त्री रहती थी। वह बड़ी ठग थी। पंडित जी को इसका पता न था। उस स्त्री ने पंडित जी को अपने यहां रात रुक जाने के लिए कहा। पंडित जी मान गये और रात वहीं रुक गये। रात में उस स्त्री ने पंडित जी से उस बकरी के बारे में सारी बात पूछ ली। अतः उसने रात में पंडित जी के सो जाने पर वह बकरी बदल ली।

—सबेरे उठकर उस बकरी को लेकर पंडित जी अपने घर पहुँचे। पत्नी को उस बकरी की खूबी बतलाई कि वह सोने की लेंड़ी देती है। अतः लीप पोतकर आंगन तैयार करो। पर बतलाए अनुसार छड़ी घुमाने पर भी उस बकरी ने सोने की लेंड़ी न देकर साधारण लेड़ियां ही दीं। यह देखकर पति-पत्नी दोनों ही बड़े निराश व दुखी हुए। बकरी बदले जाने का पंडित जी को पता ही न था।

—अगले दिन पंडित जी फिर चार रोटियाँ लेकर उसी बावड़ी पर पहुँचे और वैसा ही नाटक किया। तब फिर एक परी ऊपर आई और एक आसन देती हुई पंडित जी से बोली—'पंडित जी, इसे झड़ाने से यह हीरे मोती देगी। आप हमें मत खाओ। इसे ले जाकर मालालाल होओ और सुख से रहो।'

—पंडित जी आसन पाकर मन ही मन बड़े खुश हुए और वापिस घर को लौट पड़े। अबकी बार फिर उन्हें उसी स्त्री के यहाँ रात रुकना पड़ा और उस स्त्री ने आसन के बारे में सारी बाम पंडित जी से ज्ञातकर रात में उसे बदल लिया। पंडित जी बदली हुई आसन लेकर अपने घर पहुँचे और उसे बतलाये अनुसार झड़ाया तो हीरे-मोती तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीं झड़े पर धूल झड़ने लगी। अतः वे फिर दुखी हुए। उन्हें परियों पर रोष आया।

—अगले दिन चार रोटियाँ लेकर पंडित जी फिर उसी बावड़ी पर पहुँचे और रोटियाँ दोनों पर रखघर उसी तरह कहा। फिर एक परी बाहर आई। उसने बकरी और आसन के बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि उनसे सोने की लेंड़ी व हीरे-मोती प्राप्त नहीं हुए। यह भी पंडित जी से परी को मालूम हुआ कि पंडित जी रास्ते में एक स्त्री के यहाँ रात रुकते थे। परी सारी बात समझ गई। अब की बार उसने पंडित जी को एक मोटा डंडा दिया और कहा कि इस रात भी वह उसी स्त्री के यहाँ रुके।

—पंडित जी डंडा लेकर फिर वापिस घर की ओर लोट पड़े और रात में उसी स्त्री के यहाँ विश्राम किया। सुबह जैसे ही पंडित जी उठे तो उन्हें मालूम पड़ा कि वह मोटा डंडा उस स्त्री की पिटाई कर रहा है और वह स्त्री चीख-चिल्ला रही है। उसे ठगी का फल मिल रहा था। वह पिटाई से घबरा उठी। उसने पंडित जी से निवेदन किया कि 'वह उसकी बकरी और आसन लौटा रही है वह डंडे को पीटने से रोके।'

—पंडित जी ने बकरी और आसन लेकर डंडे को बुला लिया। वे सीधे घर गये आंगन लीप-पोतकर बकरी से सोने की लेंड़ियाँ तथा आसन से हीरे-मोती देने को कहा। दोनों से ही उन्हें खूब सोने की लेड़ियाँ और हीरे-मोती प्राप्त हुए। अब तो पंडित जी थोड़े ही समय में मालामाल हो गये तथा पति-पत्नी सुखपूर्वक अपनी जिन्दगी बिताने लगे।

—इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें किसी को ठगना नहीं चाहिए और लालच में नहीं पड़ना चाहिए, नहीं तो उस स्त्री जैसी हमारी भी दुर्दशा हो सकती है। दूसरों को ठगना या धोखा देना बहुत बड़ा पाप है, अन्याय है। इससे हम हमेशा बचें।

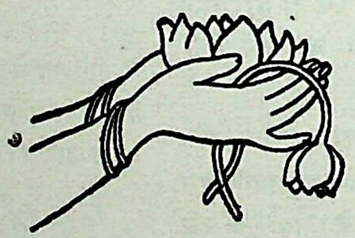

—कु० सीता चोरसिया, कक्षा ८

१—औरत—डाक्टर साहब, मेरे बच्चे को दांतों से नाखून कुतरने की बड़ी बुरी आदत है।
डाक्टर—घबराइए नहीं, मैं आपके बच्चे के दांत निकाले देता हूँ।

२—पिता—बेटा, पैपर कैसा हुआ ?
बेटा—पिताजी, एक सवाल गलत हो गया।
पिता—बाकी तो सब ठीक किए हैं न ?
बेटा—बाकी तो मैंने किए ही नहीं हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"मानवता की सीख"

ममता जैन, कक्षा ९वीं

एक डाक्टर साहब थे। खूब बड़े नगर में रहते थे। उनके यहाँ रोगियों की बड़ी भीड़ लगी रहती थी। घर बुलाने पर उनको फीस के बहुत रुपये देने पड़ते थे। वे पूरे शहर में प्रसिद्ध डाक्टर थे। उनकी दवा से रोगी तुरन्त ठीक हो जाया करता था।

डाक्टर साहब के लिए कोई गरीब बुलाने आये तो तुरन्त अपने टाँगे पर बैठकर रोगी को देखने चले जाते थे। साथ ही बिना दाम लिये रोगी को दवा भी दे देते थे। डाक्टर साहब ने अपना अनुभव बताया कि उस समय हमारे पिता जीवित थे, तब मैंने डाक्टरी की नई-नई दुकान खोली थी। तब एक दिन एक किसान ने आकर मुझसे कहा "मेरी स्त्री बहुत बीमार है। आप उसे चलकर देख आवें।" तब मैंने कहा "मैं इतनी दूर बिना फ़ीस लिये कैसे जा सकता हूँ? मेरी फीस लाओ तथा अपना ताँगा ले आओ। तो मैं चलूंगा।" वह गरीब किसान था। उसने मेरे पैरों पर पांच रुपये रख दिये और बोला—"मेरे पास और पैसे नहीं हैं बाकी पन्द्रह रुपये फसल होने पर अवश्य दूंगा।" मैंने उसे डाँट दिया और रुपये फेंककर बोला—"तुम जैसे भिखारियों के लिए मैने डाक्टरी नहीं पढ़ी है। जब पैसे हों, तब मेरे पास आना। तुम जैसों के लिए मेरे पास समय नहीं हैं।" किसान गिड़गिड़ा कर बोला—"सरकार, मैं गाँव चलकर कर्ज करके रुपये दे दूंगा।" आप जल्दी चलिये। मेरे बच्चे अनाथ हो जायेंगे। मेरी स्त्री मर जायेगी। मैं क्रोधित होकर बोला—"भाड़ में जाये तेरी स्त्री और बच्चे। पहले पैसे ला, फिर चलने की बात कर।" मेरे पिताजी यह सब सुन रहे थे। उन्होंने मुझे पुकारा। जैसे ही मैं उनके पास गया। उन्होंने मेरे मुख पर थप्पड़ मार दिया। मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा। पिताजी ने कहा—"मैंने तुझे इसीलिये पढ़ाकर डाक्टर नहीं बनाया कि तू गरीबों के साथ ऐसा व्यवहार करे, उन्हें गालियाँ दे, उनका गला दबाये। जो अभी मेरे घर से निकल जा, तेरे पालने, पढ़ने में जितना पैसा लगा, चुपचाप दे। नही तो अभी उस गरीब के घर अपने ताँगें में बैठकर जा। उससे एक पैसा भी ज्यादा लिया तो आग लगा दूंगा, दुकान में। मैंने हाथ जोड़ लिये। तब पिताजी शांत होकर बोले—"देख यदि आज बहू बीमार होती और तेरे हाथ में पैसे नहीं होते। तू डाक्टर के यहाँ जाता, यदि तुझे डाक्टर भी यही जवाब देता, जो तूने इस गरीब किसान को दिया है। तब तेरा हृदय कितना दुःखी होता? मनुष्य को दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये, जसा वह अपने साथ चाहता है। तू गरीबों का आर्शीर्वाद पायेगा, तो फूलेगा फलेगा।" मेरा एक ओर मुंह फूल गया था। मैंने पिताजी की बात मान लीं। चुपचाप दवा का बक्सा लेकर ताँगा में उस किसान को बैठाकर गांव चल दिया। अब किसी गरीब रोगों के आने पर पिताजी की उस मूर्ति का स्मरण हो जाता है और मेरा हाथ तुरन्त गाल पर पहुंच जाता है, साथ ही पिताजी का उपदेश याद आ जाता है। धन्य थे मेरे वे पिता।" जिन्होंने मुझे सन्मार्ग दिखलाया और मुझे मानवता की राह पर चलने के लिए पथ-प्रदर्शित किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"अधूरी सीख"

मोनिका जैन, कक्षा ७वीं 'अ'

विशाखा में धनगुप्त नामक एक व्यापारी रहता था। जब वह बूढ़ा होने लगा, तब उस ने अपने पुत्र दीनदयाल को बुलाया और कहा कि "बेटा व्यापार में लाभ प्राप्त करने के लिये सदैव कम तौलना चाहिये" दीनदयाल ने पिता की इस शिक्षा को गांठ बाँधकर अपने मन में रख ली। वह ग्राहकों से पूरा पैसा लेता और सामान कम तौलता रात को जब वह घर लौटता और अपने पिता को पूरे दिन का लाभ दिखाता तो पैसे देखकर धनगुप्त खुश होता। एक बार बनारस से लोगों का एक बड़ा व्यापारी आया। दीनदयाल ने उससे लोगों का सौदा कर लिया। उसने कहा मैं आपका सारा माल स्वयं तोलूंगा। व्यापारी ने कहा, मुझे मजूर है। लोगों को तौलते समय उसे अपने पिता की शिक्षा याद थी। उसने व्यापारी की लोगें कम तौल-तौल कर डेढ़ गुना ज्यादा कर दी। वह रात को खुशी-खुशी घर पहुँचा। उसने अपने पिता को लोगों के विषय में सारी बातें बता दी। यह सुनकर धनगुप्त ने सिर पीट लिया और बोला—मूर्ख, मैंने कम तौलकर देने को कहा था, लेने को नहीं कहा था। तूने सारी कमाई एक ही बार में चौपट कर दी। सच है, बुरी शिक्षा का बुरा नतीजा होता। हमें अपने बच्चों में शुरू से ही अच्छे संस्कार डालना चाहिए, उन्हें अच्छी शिक्षा देनी चाहिए।

शिक्षा—हमें इस कहानी से यही शिक्षा लेना चाहिये कि हमें पढ़-लिखकर मानवधर्म, मानवता तथा जन सेवा को नहीं भूलना चाहिये। योग्य अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा नहीं समझना चाहिये। सभी इन्सान बराबर है।

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्चतर माध्यमिक विभाग

वायें से—श्री संजय भाटिया, श्रीमती सुधा श्रीवास्तव, कु० इन्द्रा श्रीपति, श्रीमती हरवंश डांगे
कु० गीता ठाकुर, श्रीमती सुलेखा जैन, श्रीमती किरण ठाकुर
खड़े में— श्री प्यारेलाल, श्रीमती लक्ष्मी साहु, श्री गणेश

पूर्व माध्यमिक विभाग

वायें से—श्रीमती कमला जैन; कु० पदमा जैन, श्रीमती सुनीता स्टेनली कु० हेमलता श्रीवास्तव, कु० इन्दु श्रीवास्तव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

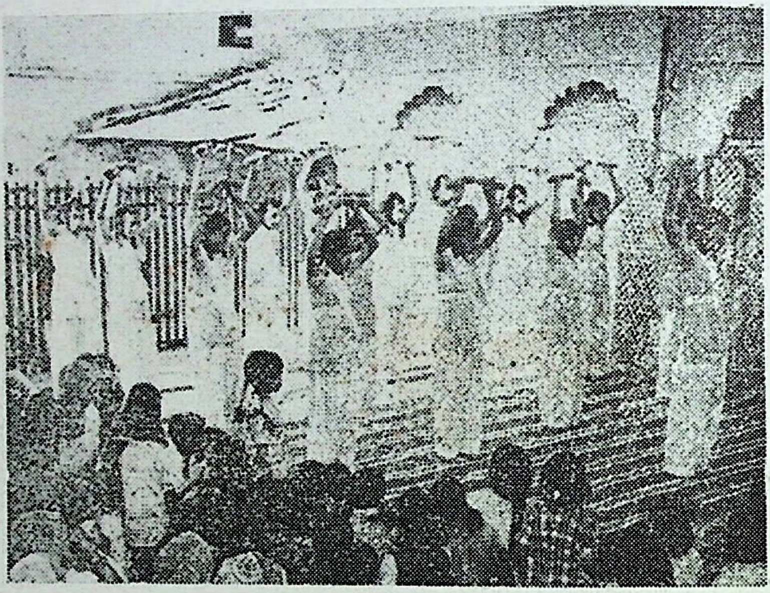

शाला की छात्रायें डम्बल प्रदर्शन की मुद्रा में

शाला की छात्रायें डम्बल्स में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"सच्चा बालक"

स्नेहलता जैन, कक्षा ६वी

यह उस समय की बात है, जब आजकल की सी सवारियाँ नहीं थी। रेल, मोटर, हवाई जहाज नहीं थे। अच्छी सड़कें भी न थीं। यात्रा करने में बड़ी कठिनाइयों होती थीं। डाकुओं के डर से व्यापारी और यात्री एक साथ काफिला बनाकर चलते थे। सामान ऊँटों और घोड़ों पर लादा जाता था। लोग इस पर सवारी करते थे। एक बार एक लम्बा काफ़िला बगदाद की ओर जा रहा था। रास्ते में उस पर डाकू टूट पड़े और लूट-मार करने लगे। काफिले में एक नौ वर्ष का बालक था। वह एक ओर चुपचाप खड़ा खड़ा इस लूट-मार को देख रहा था। एक डाकू की नजर उस पर पड़ी। उसने पूँछा कि तुम्हारे पास कुछ है? उसने कहा—"मेरे पास चालीस अशरफियाँ हैं।" डाकू ने आश्चर्य से पूँछा—चालीस अशरफियाँ है? लड़के ने कहा—"जी है', । डाकू लड़के का हाथ पकड़ कर सरदार के पास ले गया और बोला—"यह बालक अपने पास चालीस अशरफियाँ बताता है।', यह बात सरदार की समझ में नहीं आई। उसने लड़के से पूछा—"तेरी अशरफ़ियाँ कहाँ हैं?" लड़के ने अपनी सादरी उतारी और उसके अस्तर को फाड़कर अशरफियाँ सामने डाल दी। डाकू हैरान हो गया। सरदार ने पूछा—"अशरफियों को इस प्रकार रखना तुम्हे किसने बताया है? लड़के ने उत्तर दिया—"मेरी माँ ने।" सरदार ने अचम्भे से पूछा—"तो तूने इन अशरफियों का हाल हमें क्यों बता दिया? लड़के ने कहा—"मैं झूठ कैसे बोलता?" चलते समय मेरी माँ ने कहा था कि बेटे झूठ कभी न बोलना, झूठ बोलना पाप है।" डाकू के दिल पर बालक की इस बात का बड़ा असर हुआ। वह अपने साथियों से बोला—"यह छोटा बालक अपनी माँ का इतना कहना मानता है कि ऐसे संकट में भी वह झूठ नहीं बोलता। हम लोग इतने बड़े होकर भी ईश्वर के बताये रास्ते पर नहीं चलते और लूट-मार करते हैं।',

डाकुओं ने उसी समय यह तय किया कि "अब हम कभी लूट-मार नहीं करेंगे।" उन्होंने लूटा हुआ सामान भी वापस कर दिया। काफिले वाले अपना सामान पाकर बड़े प्रसन्न हुए और उस बालक का आदर करने लगे। इस बालक का नाम "अब्दुल कादिर" था। बड़ा होकर यह बालक एक महान सन्त हुआ और आज भी मुसलमानों के पीरों में प्रसिद्ध है। लोग बड़े पीर का बहुत आदर करते हैं। उसकी समाधि बगदाद में है। वहाँ हर साल बहुत से लोग दर्शन करने जाते हैं। हमें भी जीवन में सदा सत्य बोलना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवितायें

—: ० :—

यदि कविता सशक्त, मनोरंजक, समसामयिक, प्रभावशाली और देशप्रेम से ओत-प्रोत हो तो हृदय पर गहरा प्रभाव डाल जाती है। कुछ गीत प्रदेश के रीति-रिवाजों सामाजिक मान्यताओं और भाषा से संबंधित भी होते हैं। इस स्तम्भ मे राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत कविताओं के साथ-साथ बुन्देली लोक-गीत भी दिये हैं। जो अपने ढंग के अनूठे और प्रेरणादायक है।

—सम्पादक

कल का हिन्दुस्तान हम

कु० सीमा जैन, कक्षा १०वीं

सूरज की सन्तान हम
धरती का अभिमान हम
आजकी नन्हीं आशाऐं
कल का हिन्दुस्तान हम

राम कृष्ण की परम्परा को
लेकर बढ़ते आगे
एक लक्ष्य है अपना
सोई दुनियाँ को जगाते
महावीर का मान हम
गौतम की पहचान हम
आज की नन्हीं आशाऐं
कल का हिन्दुस्तान हम

न्याय धर्म का साथ निभायें
यह संकल्प हमारा
सुख-दुख को सब मिलकर बाटें
पालें भाई चारा
नेहरू का ईमान हम
गाँधी का वरदान हम
आज की नन्हीं आशाऐं
कल का हिन्दुस्तान हम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत देश महान

कु० पुष्पा सेन, कक्षा ११वीं

प्यारा भारत देश महान
हमको इस पर है अभिमान ।
कभी न कम हो इसकी शान
चाहे वलि हो जायें प्राण
इसके लिए शहीद हुए
भगतसिंह आजाद महान
जिनने हँसते-हँसते दे दी
भारत माँ को अपनी जान ।। प्यारा भारत देश महान ।

इसी देश के हम वासी हैं
इसी देश की हम संतान
एक तिरंगा ध्वज है अपना
राष्ट्र गीत है सबकी जान ।। प्यारा भारत देश महान् ।
भाषा धर्म अलग हो चाहे
फिर भी हम सब एक समान
प्यारा भ.रत देश महान्
हमको इस पर है अभिमान ।। प्यारा भारत देश महाक।

□□□

"बुन्देली लोक गीत"

कु० अलका जैन, कक्षा ११वीं

धरती के ये चाँद-सितारे उठे बड़े भुनसारे ।
हाथ पकर बैलन की डोरी निकर पड़े हरवारे ।।

बासी रोटी बाँध खुटी में भर घैला पानी ।
करन चले धरती के बेटा छाती फार किसानी ।
सुघर दुलइयां उते सम्हारे घर में लरका बारे ।
ये धरती के चाँद सितारे उठे बड़े भुनसारे ।।

एक हाथ में हर की मुठिया एक में डोर समानी ।
मुंह में एक फका तम्बाकू आंखन में निगरानी ।।

डलिया में ले रोटी चल दई रानी भरे दुवारे
धरती के ये चाँद सितारे उठे बड़े भुनसारे ।।
हाथ पकर बैलन की जोड़ी निकल परे हरवारे ।
सूरज के उजयारे है ये धरती के रखवारे ।।
उठे बड़े भुनसारे, उठे बड़े भुनसारे ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"सपूत"

राजकुमारी जैन, कक्षा ६वीं

१— जो रोज मदरसे जाते हैं,
पढ़ने में ध्यान लगाते हैं,
जो सबक गुरू से पाते हैं,
उसको कर याद सुनाते हैं।
पढ़ते है और पढ़ाते हैं।
वे ही सपूत कहलाते हैं ।।

२— जो कहा बड़ों का करते हैं,
दुखियों की पीड़ा हरते हैं।
शुभ सीख हृदय में धरते हैं,
चुगली चोरी से डरते हैं।
सच्चाई जो अपनाते हैं,
वे ही सपूत कहलाते हैं ।।

मां

कु० सुनीता सेन, कक्षा ७वीं

सारे घर के लिए रसोई, रोज बनाती मां
हम सब खा चुकते. हैं, सबके पीछे खाती मां
छुट्टी के दिन धमा-चौकड़ी, से घबरा जाती मां
पढ़ना भी है बहुत जरूरी यह समझाती मां
नहीं मानते तो धीरे से चपत जमाती मां
पल दो पल के बाद पास आ, सिर सहलाती मां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मां का वही लाल कहलाता

कु० भावना दुबे, कक्षा नवीं

उठता है जो बड़े सवेरे, जिसे न रहता आलस घेरे।
चित्त लगाकर जो पढ़ता है, सेवा हित को जो बढ़ता है
वही सफलता जग में पाता, माँ का वही लाल कहलाता
दुःखीजनों का दुःख हरता है बूढ़ों का आदर करता है।
जिसको कभी न रोना आता, कठिनाईयों में जो मुस्काता
वही सफलता जग में पाता, माँ का वही लाल कहलाता।

—: ० :—

बच्चों की शनिवार की शाम

कु० वर्षा जैन, कक्षा नवीं

काम मिला जो झटपट कर लो, सन्ध्या है शनिवार की
कल मैदानों में गूंजेगी जय अपने रविवार की
कल खेलेंगे चोर सिपाही, चोर बनेंगे बौआ राही
देंगे मेवालाल गवाही, नहीं चलेगी तानाशाही।
उदयसिंह के सिर पर होगी, टोपी थानेदार की
कल मैदानों में गूंजेगी, जय अपने रविवार की ॥
धक् धक् धक् धक् ट्रेन चलेगी, स्टेशन पर सीटी देगी
जो बैठेगा टिकिट लगेगी, बिना टिकिट न दाल गलेगी
बिना टिकिट वाले पर होगी, डिग्री ढाई हजार की
कल मैदानों में गूंजेगी जय अपने रविवार की ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हास्य-व्यंग्य

व्यस्त जिन्दगी से अगर हो जाते हो बोर,
गोता एक लगाओ तुम नहीं मचाओ शोर।
नहीं मचाओ शोर, और न दुखड़ा रोओ,
हास्य व्यंग्य में डूब जाओ मुँह ढँककर सोओ ॥

यह स्तम्भ पाठकों के अशांत और थके चित्त को पुनः प्रसन्न और तरो-ताजा करने में मदद करेगा।

—सम्पादक

हास्य-व्यंग्य

कु० अनीता राय, कक्षा ११

गप्पी समाचार

—एक व्यक्ति ने अपनी आर्थिक परेशानियों से ऊबकर चाय के प्याले में डूब कर आत्म हत्या कर ली। पुलिस को लाश निकालने में गोताखोरों की सहायता लेनी पड़ी।

—दो मुर्दे कब्रिस्तान से १५ टन लकड़ी लेकर फ़रार हो गये हैं। पुलिस उनका पीछा बिना पहिए की जीप से कर रही है।

—आज रात में इटावा-बाजार की सब्जी मंडी में भयानक बम विस्फोट हुआ। इससे २०० आलू गायब और १५ टमाटर घायल हो गये तथा भिण्डी लापता है।

—एक चींटी सपने में मोटर साईकिल चला रही थी। मोटर साईकिल के नीचे एक हाथी कुचल गया। चींटी ने मोटर साईकिल सहित भागने में सफलता प्राप्त की।

—अभी अभी समाचार मिला है कि सर्वोदय चौराहे पर हंस और मच्छर की टक्कर हो गई। जिसमें हंस की तो घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई और मच्छर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

—:०:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'मैं काम चोर हूँ'

कु० सविता सेन, कक्षा ९वीं

—जी हाँ, मैं काम चोर हूँ ।
अपनी रचना सुनाकर, जनता को करता बोर हूँ ।
जी हाँ, मैं कामचोर हूँ ।
—पहिन कर सुन्दर सूट और बूट, लगाकर टाई ।
घूमने जाता तो जेब में नहीं रहती एक पाई ॥
गलियों में फिरता हूँ, जैसे जंगल क मोर हूँ ।
जी हाँ, मैं कामचोर हूँ ।
—मैं घर में माँ और बाप को करता हरदम तंग ।
रंग पंचमी का दिन है आज, पीकर आया भंग ॥
हर दिन करता अपने घर में शोर हूँ ।
जी हाँ, मैं कामचोर हूँ ।

नेता, अबके और जब के

कु० ऊषा किरण जैन, कक्षा ९वीं

जब के नेता जनहितकारी,
अब के नेता पदवीधारी ।
जब के नेता किए कमाल,
अब के पहने श्री जयमाल ॥ १ ॥

जब के नेता काटे जैल,
अब के नेता चौथी फैल ।
जब के नेता डण्डे खाये,
अब के नेता अण्डे खाये ॥ २ ॥

जब के सुन्दर भाषण वाले,
अब के राजसिंहासन वाले ।
जब को था आराम हराम,
अब के नेता को प्रिय दाम ॥ ३ ॥

जब के नेता को हम मानें,
अब के नेता को पहिचाने ।
बापू का मारग अपनावें,
गिरे जनों को ऊपर लावें ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आधुनिक अर्थशास्त्र

कु० सुधा जैन, कक्षा ११वीं

शादी होने के बाद, पहले वर्ष तक पति,
दफ्तर से सीधा घर आता है ।
लेकिन दूसरे वर्ष एक-दो घंटे हो लेट जाता है ।

तीसरे वर्ष पति पत्नी को सहता है,
रात-रात भर वह घर से गायब रहता है।
चौथे वर्ष जब पत्नी को देख पति की आँखों में
आ जाएँ आंसू, खुशी की बजाय होने लगे गम
अर्थशास्त्र में कहेंगे हम 'उपयोगिता ह्रास नियम'

जब पत्नी मायके से आये,
साथ से अपनी छोटी बहिन को लाये।
जब साली जीजा जी के यहाँ आयेगी,
अर्थशास्त्र में 'बोनस' कहलाएगी ।

जैसे अर्थशास्त्र में मतभेद रहते हैं।
तभी तो 'शाविन्स' साली को 'बोनस'
और 'एडमस्मिथ' 'अन्तरिमराहत' कहते हैं।

उपयोगिता, दुर्लभता, हस्तान्तरण के कारण
पत्नी 'धन' कहलाएगी ।
लेकिन जिस दिन वह नौकरी पर जाएगी,
अर्थशास्त्र में पूंजी कहलाएगी ।

जब आपकी 'पूंजी' के आफिस का बॉस,
अपने घर पर चाय पर बुलाएगा ।
पति साथ मे जाएगा, दो रुपये का नाश्ता करके आएगा।
अर्थशास्त्र में 'पूंजी पर व्याज' कहलाएगा।

पति पत्नी का गुलाम,
सच्चे सेवक की तरह करे काम ।
पत्नी करे शोषण, पति रहे मजबूर
इसे अर्थशास्त्र में कहते हैं 'बंधुआ मजदूर' ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब पत्नी पति के सूने में मायके चली जाए,
पति तुलसीदास के समान पीछे-पीछे जाए ।
पत्नी के कमरे का दरवाजा खटखटाये,
तो यह घटना अर्थशास्त्र में बच नहीं पायेगी
और यह 'प्रेम की गतिशीलता' कहलाएगी ।

उसी के पड़ौस में एक पहलवान
बेचारा बेहद परेशान है ।
ग्यारह बरस से निःसन्तान है,
यह 'अकुशल श्रम' की पहचान है ।।

उसी पहलवान की बाजू में
अर्थशास्त्र के एक प्रोफेसर रहते हैं ।
उनकी पत्नी के एक साथ दो बच्चों को जन्म दिया ।
प्रोफेसर साहब अर्थशास्त्र में खोये रहते हैं ।
दूसरे बच्चे को 'उपयोगिता की बचत' कहते हैं ।

एक शान की बात

कु० कविता जैन, कक्षा १०वीं

मैं अपनी एक सहेली के घर गई थी । उसके पड़ोसी के दरवाजे पर F. R. C .S. की प्लेट लगी थी । दो मकान आगे F. M. A. (Oxen) F. E. I. S. रहता था । मेरी सहेली के दादा जी ने भी एक नया चमकदार बोर्ड दरवाजे पर टांग रखा था । उस पर अंग्रेजी के मोटे अक्षरों में F. E. C. F. B. F. G. लिखा हुआ था । इसे देख मैं बड़े अचम्भे में पड़ गई । आखिर मैंने पूंछ ही लिया । 'इस डिग्री का क्या मतलब है, दादाजी ? मेरे प्रश्न को सुन कर दादाजी चहक उठे और बोले मेरा बोर्ड गलत नहीं है । मेरे आठ बच्चे हैं । उनमें ४ लड़के और ४ लड़कियाँ । यही तो मैं सारी दुनियाँ को बोर्ड से बतला रहा हूँ । Father of Eight Children, Four Boys and Four Girls.

—: ० :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरू गणित में बोले

कु० संध्या जैन, कक्षा ११वीं

छात्रों ने एकत्रित होकर कहा-गुरुवर ! आज्ञा दें, हम बोलें, हिन्दी वाले हिन्दी में, अंग्रेजी के टीचर इंगलिश में बोलें और गुरूजी, हर अध्यापक, भाषा अपनी-अपनी बोलें। आप गणित क गुरू तो, क्यों न आप गणित में बोलें ? तीन पाँच मत कर, नौ दो ग्यारह, होजा। गुरुवर चीखे, क्रोधित हुए गुरू गणित में, छात्र भागते दीखे ॥

□●□

"पहुँच गये अमरीका"

कु० पार्वती चौरसिया, कक्षा ७वीं 'ब'

कलकत्ता जाके बंदर जी ले आये सामान,
जंगल में पीपल के नीचे खोली एक दुकान।
तोते को अमरूद खिलाके विज्ञापन करवाया,
इस जंगल में पान बेचने लल्लू बंदर आया।
घोड़ा, भालू, हाथी, मैना रोज़ लगे बस आने,
शेर बहादुर भी जा पहुँचे इक दिन पान चबाने।
बोला अपने घरवालों का लल्लू हाल सुनाओ,
पान बना रसवाला बढ़िया जल्दी एक लगाओ।
जंगल के राजा को देखा बंदर जी घबड़ाये,
सौंप, सुपारी, कत्था, चूना किसी तरह रख पाये।
तम्बाकू का डिब्बा खोला फिर से हिम्मत बाँधी,
इसी समय चल गई वहाँ पर बस थोड़ी सी आँधी।
तम्बाकू घुस गई नाक में, शेर जोर से छींका।
लल्लू डरकर ऐसे भागे, पहुँच गये अमरीका ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ा महत्व है टर वालों का

कु० रश्मि जैन, कक्षा ६वीं

रचना छापे एटीटर ।
लड़े मुकद्दमा बैरिस्टर ।
शासन करते मिनिस्टर । [बड़ा]

टिकिट बनाते कंडक्टर ।
जान बचाते हैं डाक्टर ।
शिक्षा देते हैं मास्टर [बड़ा]

प्यास बुझाता है वाटर ।
ताकत देता है टमाटर ।
खेत जोतता है ट्रैक्टर । [बड़ा]

ठंडक दूर करे स्वेटर ।
कापी जांचं कम्प्यूटर ।
जोड़ करे कैलकुलेटर । [बड़ा]

करे ताजगी टाँसलेटर ।
ठेका लेता कन्ट्रेक्टर ।
बीड़ी जलाता है लाइटर । [बड़ा]

वस्त्र नापता है मीटर ।
पानी गर्म करे हीटर ।
करे धुनाई हंटर । [बड़ा]

सफर कराये मीटर ।
वोट डालते वोटर ।
प्रचार करते पोस्टर । [बड़ा]

होटल में मिलते बेटर ।
गाना सुनाये ट्रांजिस्टर ।
रंग लगाये पेन्टर । [बड़ा]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्मरण

"कन्या शाला अतीत के आइने में

कु० बिन्दु जैन,
(भूतपूर्व छात्रा)

हम कन्याशाला की अतीती छात्राएँ कन्या शाला को अतीत के सुनहरे हमसफर रास्ते की ओर ले जाते हैं।

प्यारी बहनों! हम एक दिन तुम्हारी तरह ही अपने भविष्य को बनाने के लिये, उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिये कन्या-शाला में प्रविष्ट हुये। लेकिन उक्त उन्नति के क्रम में जहाँ व्यक्ति निवास करता है, उससे आकर्षण और लगाव होना स्वाभाविक है।

हमें यहाँ की प्रत्येक वस्तु से लगाव हो गया था। कहते हैं न व्यक्ति जिस वस्तु के प्रति आकर्षित होता है, वह उससे दूर चली जाती है।

कहा जाता है कि समय पंख लगाकर उड़ता है न जाने कब हमारे शाला छोड़ने की अवधि करीब आ गयी और हम विद्यालय के छात्र न होकर महाविद्यालय के छात्र हो गये।

कितने आनंदकारी थे वे दिन, जब हम पौधों को ज्ञान रूपी अमृत से सींच कर बड़ा किये और स्वाश्रित करके और अधिक फलने-फूलने के लिये छोड़ दिये।

इस शाला में छात्राओं को हर तरह की शिक्षायें दी जाती हैं। ऐसी उच्चतम शाला को छोड़कर भविष्य बनाने की आशा में, मजबूरी में हमें जाना पड़ा। कहते हैं न कि 'मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी है।'

परन्तु शाला छोड़कर जाने का आशय यह नहीं कि इस शाला को हम भूल जायें? नहीं। ऐसा नहीं होगा। यदि परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला है तो विद्यालय सामाजिकता और नागरिकता की पहली व दूसरी पाठशाला है।

आज युग बदल गया है। परम्परायें, रिवाज सब कुछ बदलते आ रहे हैं। इसी तरह आज के आधुनिक युग में अतीत को कोई स्थान नहीं है। आज की युगीन मान्यता वर्तमान युग को प्राप्त है।

आज कन्या शाला उन्नति के कगार पर खड़ी है। ऐसे कगार पर जहाँ से उन्नति के मार्ग सभी दिशाओं में उन्मुक्त हैं। हमारी आशा है कि यह शाला उन्नति करेगी और पग-पग पर सफलता इसके कदम चूमेगी। हमारी प्रत्येक सांस में अपनी शाला की उन्नति पर गर्व है।

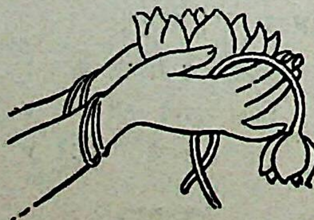

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(शाला-परिवेश)

"इटावा :—एक झलक"

श्री एम०एल० श्रीपति, एडवोकेट

प्रकृति के सुरम्य, रमणीक स्थल बुन्देलखंड के बीच में सागर जिले में स्थित 'इटावा' बहुत प्राचीन कस्बा है। इस कस्बे में वर्तमान स्वरूप को वर्णित करने के पूर्व इसके अतीत का अवलोकन करनेपर स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसका ऐतिहासिक महत्व भी है। यत्र तत्र प्राप्त प्रशस्तियों, लेखों और शिलालेखों से यह प्रमाणित होता है कि यह कस्बा सैकड़ों वर्ष पुराना है। यहाँ के जैन मन्दिर में सबसे प्राचीन मूर्ति विक्रम संवत् ११३७ की है। तथा अनेक मूर्तियाँ चौदहवीं सदी की हैं।

सोलहवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ 'ग्रन्थ माला' में 'इटाये' नामक गाँव का उल्लेख हुआ है। जो संभवतः इटावा का ही नाम है। इटावा ग्राम की चारों दिशाओं—बहोराघाट, कंजिया, चंदेरी, खिमलासा. ऐरन, देवगढ़ आदि के प्राचीन मंदिर, खंडहर तथा शिलायें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि इस शहर का अपना ऐतिहासिक महत्व अवश्य रहा है।

बुजुर्गों तथा किंवदन्तियों के आधार पर जानकारी मिलती है कि तीसरी शताब्दी के मध्य में प्रवरसेन ने बुन्देलखंड में अपना राज्य स्थापित किया था। देवगढ़, चंदेरी, ऐरन तथा खिमलासा के भग्नावशेष अपनी शिल्प-कला, मूर्तिकला और वास्तुकला की कहानी सुनाते हैं कि कभी इन क्षेत्रों का भी अभूतपूर्व विकास हुआ था। ऐतिहासिक किंवदन्ती है कि वनवास के समय शर्त के मुताबिक पांडवगढ़ ऐरन में अज्ञातवास के समय रहे और बहोराघाट में भीम ने पशु चराये थे।

इटावा शहर के दक्षिण-पश्चिम मे ऐरन नामक स्थान है और उत्तर पूर्व में खिमलासा जहाँ की दरगाह, शीशमहल तथा डोहला दर्शनीय है। थूबोनजी प्रसिद्ध जैन तीर्थ है तथा चंदेरी की चौबीसी, किला, तथा राजा शिशुपाल का महल देखने योग्य है। यहाँ की बनी रेशम जरी की साड़ियाँ विश्वविख्यात है। अंग्रेजों के शासन-काल में यह क्षेत्र महाराजा सिंधिया के राज्य में शामिल था।

इटावा का हिन्दुओं का बड़ा मन्दिर लगभग २०० वर्ष पुराना बताया जाता है। इटावा के बीच में बना सुप्रसिद्ध एवं भव्य श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मन्दिर भी बहुत प्राचीन है। इसका विस्तार सम्वत् १९३७ में गजरथ महोत्सव के समय में किया गया। मंदिर जी के मुख्य द्वार एवं दीवारों के प्रत्येक पत्थर पर की गई खुदाई कलात्मक पच्चीकारी तथा नक्कासी इतनी खूबसूरत है कि बर-बस ही दर्शकों का मन मोह लेती है। ऐसा भव्य एवं अद्वितीय मंदिर आस-पास के क्षेत्रों में दृष्टिगोचर नहीं होता।

अंग्रेजी राज्य की स्थापना होने पर बम्बई से पेशावर तक पहली बड़ी रेलवे लाईन बिछायी गयी, तथा अन्य लाइनें बिछाई गई, तो इटावा क्षेत्र की दक्षिण दिशा में बहने वाली 'बीना नदी' के कारण इस स्टेशन का नाम बीना रख दिया गया। और यह इटावा शहर बीना इटावा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। चारों दिशाओं में रेल जाल बिछ जाने से इस शहर का सम्बन्ध व्यापारिक नगरों तथा महानगरों से जुड़ गया। फलस्वरूप धीरे-धीरे अन्य स्थानों से आकर अनेक परिवार यहाँ बसते गये। और आज इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शहर की आबादी लगभग ५०,००० से ऊपर पहुंच गयी है।

ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ इस शहर का शैक्षणिक स्वरूप प्रारंभ से ही अच्छा रहा है। बीना का सबसे प्राचीन विद्यालय श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय है। जिसकी नींव सम्वत् १९६३ में स्वर्गीय श्री नाथूराम जी सिंघई ने रखी। शिक्षा के प्रति उनके स्नेह को देखकर जैन समाज ने उन्हें 'संस्थापक' की पदवी दी। इस विद्यालय के संचालन हेतु भवन तथा कृषि भूमि उन्होंने दान स्वरूप दी। जिसकी आय से लगभग २० वर्षों से संस्कृत विद्यालय सुचारू रूप से चल रहा है। इस विद्यालय ने देश को कई विद्वान पंडित दिये हैं जो शिक्षा, साहित्य, धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में उच्च पदों पर आसीन होकर बीना का नाम ऊंचा कर रहे हैं।

आज से लगभग ४५ वर्ष पूर्व बीना इटावा में मिडिल कक्षाओं तक ही शिक्षण व्यवस्था थी। इस मिडिल स्कूल को हाईस्कूल तक बढ़ाने का श्रेय स्वर्गीय श्री बी० एस० कागनोलकर, स्थानीय विद्वान शिक्षकों श्री बापट, श्री श्रीपति, श्री हर्षे आदि को जाता है। जिनके अथक प्रयास एवं सच्ची लगन से यह विद्यालय फला-फूला है एवं इस विद्यालय के होनकार बालक आज उच्च पदों पर आसीन हैं। नगर परिषद् के इस विद्यालय को सन् १९६१ में शासन ने अधिग्रहण कर लिया। श्री नाभिनंदन दिगम्वर जैन हितोपदेशनी सभा ने अपनी धर्मशाला वाली इमारत शासन को शैक्षणिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु नाममात्र के किराये पर दे दी। जिसमें आज भी माध्यमिक कक्षायें लगती हैं।

छात्र-छात्राओं की बढ़ती हुई संख्याओं को देखकर आज बीना में दो महाविद्यालय, छह शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चौदह पूर्व माध्यमिक विद्यालय, सोलह प्राथमिक विद्यालय तथा पाँच बाल मंदिर हैं। जो शैक्षणिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

साहित्यिक अभिरुचियों को बढ़ाने की दृष्टि से साहित्य प्रतिष्ठान, सूर्य प्रकाश मंडल, साहित्य सौरभ, काव्य मनीषा, आलोक आदि साहित्यिक संस्थायें कार्यरत हैं। विष्णुप्रसाद पटैरिया के लोकगीत लगभग प्रदेश भर में प्रसिद्धि पा रहे हैं। भावी कवि जगत में गोरेलाल साहू जाने माने कवि हैं।

नगर में अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक समितियाँ गठित है। सर्वोदय प्रचारक संघ वीर सेवा संघ नवयुवक मंडल, प्रगति क्लब, लायन्स क्लब आदि समाज सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। श्री नाभिनदन दिगम्बर जैन हितोपदेशनी सभा बीना द्वारा समय-समय पर जनहित के कार्य किये जाते हैं। यह संस्था पूर्णरूप से धार्मिक, शैक्षणिक, पारमार्थिक एवं लोकहित के कार्यों को समर्पित है। इस समिति द्वारा संचालित कन्या विद्यालय का मूल उद्देश्य कन्याओं को शिक्षित करना, उनका चारित्रिक विकास करना, नारी जाति का पुनरुत्थान कर उन्हें आदर्श भारतीय नारी बनाना है। इस समिति द्वारा संचालित 'महावीर धर्मार्थ औषधालय' नागरिकों की निःशुल्क चिकित्सा करती है।

नगर में पाँच जैन मंदिर, हिन्दुओं का बड़ा मंदिर, मारुति और राम मदिर, गुरुद्वारा, मस्जिद, चर्च आदि हैं। यहाँ सभी वर्गो के लोग मिलकर दीवाली, दशहरा, महावीर जयंती, दुर्गा-उत्सव, होली, गुरूनानक जयंती, मोहर्रम तथा क्रिसमस आदि धार्मिक पर्वों को उल्लासपूर्वक मनाते हैं। तथा यहाँ की जनता सभी पर्वों में सम्मिलित होकर साम्प्रदायिक सद्भावना तथा एकता का परिचय देती है।

बीना मध्य रेल्वे का अत्यन्त महत्वपूर्ण जंक्शन है। यहाँ से चारों दिशाओं में रेल सम्पर्क जुड़ा हुआ है। बीना तहसील का मुख्य व्यवसाय कृषि है। बीना खुरई तहसील में सर्वाधिक ट्रेक्टर्स हैं। जो यहाँ के कृषकों की आर्थिक समृद्धि का परिचय देते हैं। राज इंडस्ट्रीज, एस० के० इंडस्ट्रीज आदि कृषि उपकरण बनाती हैं। दाल मिल, तेल मिल, कीटनाशक पाउडर फैक्ट्री भी यहाँ है। किसान, चरखा, कमल, पीला फूल, बीड़ी, प्रदेश भर में बिक रही है।

बीना नगर को तहसील का दर्जा तो मिल गया है, किन्तु अभी तक न्यायालय तथा कोषालय का भवन न बन पाने के कारण नागरिकों को असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। यह बीना क्षेत्र का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस क्षेत्र के अधिकांश विधायक स्थानीय न होकर बाहरी रहे हैं। जों इस क्षेत्र के विकास हेतु अधिक प्रयत्नशील नहीं रहते। नगरपालिका भी शहर की सफाई, स्वच्छता एवं नागरिक स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह है। सरकार द्वारा बीना में कोई बड़ा सरकारी उद्योग न खोला जाना इस क्षेत्र के साथ सौतेला व्यवहार करने जैसा प्रतीत होता है।

अन्त में शासन से निवेदन है कि नगर विकास कार्य बीना नगर के नाम के अनुरूप नहीं हो रहे हैं। अतः इस वर्तमान उपेक्षित शहर पर भी शासन विशेष ध्यान दे जिससे यह शहर भी प्रगति के सोपान चढ़ सके।

कु०---सीमा समैया, कक्षा १० वीं

अमेरिकन, रूसी और इंडियन की बातचीत

अमेरिकन---हमारे यहाँ जहाज जमीन पर चलता है।

अन्य दो---कैसे भाई? जमीन पर नहीं चल सकता।

अमेरिकन---अरे भाई, जमीन से जरा ऊपर।

रूसी बोला---हमारे यहाँ हवाई जहाज बादल से सटकर चलता है।

अन्य दो---यह कैसे हो सकता है भाई?

रूसी---अरे भाई, बादल से जरा नीचे।

इन्डियन---हमारे यहाँ लोग नाक से चना खाते हैं।

अन्य दो---अरे भाई, यह कैसे हो सकता है?

इन्डियन---नाक से थोड़ नीचे (अर्थात् मुंह से)!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"गाइड का महत्व"

प्रभारी
कु० पदमा जैन,

'गाइड' का उद्देश्य छात्राओं का सर्वांगीण विकास कर उन्हें आदर्श नागरिक बनना है। यह एक महान विश्व आन्दोलन है।

गाइड के जन्मदाता "लार्ड वेडन पावल" ने केवल बालकों के लिये "स्काउटिंग" को चलाया, परन्तु बालिकायें भी पीछे रहने वाली नहीं थीं। क्रिस्टल पैलेस की स्काउट रैली में वे वाय-स्काउट्स की पोशाक पहनकर सम्मिलित हो गईं, और फिर मजबूर होकर स्काउटिंग की दूसरी शाखा 'गर्ल गाइडिंग' को प्रारम्भ करना पड़ा और वेडन पावल की बहिन एग्नेस वेडन पावल इस शाखा की देखरेख करने लगी।

गाइड का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण है; क्योंकि आज की बालिका कल की 'माँ' है और सुसम्पन्न माँ ही अपनी संतान को समुचित शिक्षण प्रदान कर सकती है। प्रश्न उठता है कि चरित्र निर्माण क्या है? आत्मनिर्भरता, आत्म-नियंत्रण, कर्त्तव्य परायणता और देशप्रेम ही चरित्र निर्माण है।

गाइड का सिद्धांत है "तैयार"। इसका तात्पर्य यह है कि गाइड को मन तथा शरीर से हमेशा दूसरों की निस्वार्थ सेवा करने के लिये तत्पर रहना चाहिये।

गाइडिंग का पहले कोई महत्व नहीं था। स्कूलों में भी गाइडिंग की शिक्षा नहीं दी जाती थी; लेकिन अब सभी लोग इसके महत्व को समझने लगे हैं और अब यह सभी स्कूलों में जरूरी हो गई है। गाइडिंग के लिये भी प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है, क्योंकि तभी वे छात्राओं का सही मार्ग-दर्शन करा सकती हैं। इसलिये अब सभी शिक्षकों को इसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अभी इसका प्रशिक्षण शिविर सागर (महारानी लक्ष्मीबाई विद्यालय) में लगा था इस प्रशिक्षण शिविर में भी प्रशिक्षण के लिये गयी थी।

छात्राओं के भी गाइड कैम्प लगते हैं। उसमें अलग-अलग प्रदेशों के बालक-बालिकायें भाग लेते हैं। इनके आचार-विचार, खाना, पहनना, रीति-रिवाज, भाषा, संस्कृति सभी कुछ अलग-अलग रहता है। फिर भी ये एक साथ मिलजुल कर कार्य करते हैं और एक साथ रहते हैं। गाइडिंग में छात्रायें अनुशासनशील और स्वावलम्बी हो जाती है। इससे राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा मिलता है।

गाइडिंग के माध्यम से बालिकाओं को दूसरे प्रदेशों में जाने का अवसर मिलता है। पहले लड़कियों के मन में यह धारणा पैदा कर दी जाती थी कि वे बाहर का कोई कार्य नहीं कर सकती हैं। इससे उनकी शिक्षा एक सीमित दायरे में सिमट कर रह जाती थी। गाइडिंग के माध्यम से उनके सामान्य ज्ञान में भी बढ़ोत्तरी होती है। गाइडिंग में मनो-रंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं। इससे बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास भी होता है।

हमारी शाला में गाइड का प्रारंभ १९८० से हुआ। गाइड कैम्प में शाला से छात्रायें गई हैं और भविष्य में भी जाती रहेगी। इसमें प्राचार्यजी और प्रधानाध्यापिका का बहुत सहयोग रहा। इसमें छात्राओं को गाइड बैच मिलता है, जो प्रगति पथ की सीढ़ियों के समान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"क्रीड़ा प्रांगण"

प्रभारी
श्रीमति सुलेखा जैन,

शारीरिक शिक्षा का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। शारीरिक शिक्षा का ज्ञान खेल के मैदान में दिया जाता है, जिससे खिलाड़ियों में परस्पर प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता की भावना जागृत होती है।

हमारी शाला में छात्राओं को कबड्डी, खो-खो, वाली-बाल, बेडमिंटन एवं एथलेटिक्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष बीना में तहसील स्तरीय प्रतियोगितायें सम्पन्न हुईं। जिसमें हमारी शाला की छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिये और वे जिला स्तरीय तथा संभागीय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के लिये चुनी गईं।

जिला स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता—बीना

कबड्डी—संध्या, राजकुमारी, अल्पना, पूना

खो-खो—मधु, अनीता, रश्मि, अलका, संध्या

संभागीय क्रीड़ा प्रतियोगिता—नौगाँव (छतरपुर)

कबड्डी—संध्या, राजकुमारी, पूना

खो-खो-मधु संध्या।

इन छात्राओं ने खेल का बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और हमारी शाला का नाम गौरवान्वित किया। इन सभी कार्यों में हमारी आदरणीय प्राचार्याजी का बहुत सहयोग रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्य-क्रम"

प्रभारी
श्रीमती सुनीता स्टेनली

शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकी ज्ञान देना नहीं, अपितु बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करना है। पुस्तकीय ज्ञान केवल मस्तिष्क को शिक्षित करता है, परन्तु संस्कृति हृदय को भी प्रशिक्षित कर देती है। प्रत्येक बालक-बालिका का जब तक सांस्कृतिक विकास नहीं होता, तब तक वह स्वयं को सामाजिक परिवेश के अनुकूल बनाने में असमर्थ रहता है। अतः आवश्यक है कि बालिकाओं में कलात्मक रुचियों एवं कलात्मक रहन-सहन के गुणों की अभिवृद्धि हो; क्योंकि एक सुसंस्कृत व्यक्ति सदैव व्यक्तिगत रुचियों को सामाजिक वातावरण के उच्च आदर्शों पर बलिदान करने को तैयार रहता है।

अतः छात्राओं के मानसिक, रचनात्मक, सांस्कृतिक एवं गुणात्मक विकास के उद्देश्य से पाठ्येत्तर सहगामी क्रिया कलाप इस कन्या-शाला में समय-समय पर होते रहते हैं। जहाँ राष्ट्रीय पर्वों, महापुरुषों की जयंतियों आदि पर कविता-पाठ, भावनात्मक गीत, भाषण एवं लघु नाटिकाओं का आयोजन किया जाता है। वहीं प्रतिवर्ष इस शाला का वार्षिकोत्सव भी मनाया जाता है। जिसके अन्तर्गत विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम में भाग लेने वाली सभी छात्राओं को पुरस्कार वितरित किये जाते हैं।

शिक्षिकाओं के साथ-साथ शाला की आदरणीय प्राचार्या भी सहयोग प्रदान करती हैं।

"जिओ और जीने दो"

कु० स्वास्ति जैन, कक्षा ११वीं

सबसे सुन्दर, सबसे प्यारा, भारत देश हमारा।
इन्द्र धनुष के रंगों से भी, इसका रंग न्यारा॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आपस में सब भाई भाई।
अंग देश के हैं ये प्यारे, इन्हीं से खुशहाली छाई॥
सबने मिलकर बड़े जतन से इसको खूब सँवारा है।
इन्द्र धनुष के रंगों से भी, इसका रंग न्यारा है॥
प्रीत की उज्जवल ज्योति जलाएँ, हम भारत की शान बढ़ायें।
आओ साथियो हिल मिलकर हम, आज देश को स्वर्ग बनायें॥
"जिओ और जीने दो सबको", यही देश का नारा है।
इन्द्र धनुष के रंगों से भी, इसका रंग न्यारा है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"मेधावी छात्रा कु० अर्चना जैन को प्रशस्ति पत्र"

—:०:—

नगर के मेधावी छात्र/छात्राओं का अभिनन्दन समारोह का अभिनव कार्यक्रम उच्चतर माध्यमिक शाला क्र० । में म० प्र० विद्युत कर्म० संघ (फेडरेशन) बीना संभाग के तत्वाधान में प्राचार्य श्री चौबे जी की अध्यक्षता एवं युवक कांग्रेस के प्रान्तीय अध्यक्ष-विधायक श्री उत्तम चन्द खटीक के आतिथ्य में डा० प्रेम श्रीवास्तव द्वारा आयोजित किया गया था । इस समारोह में शाला की मेधावी छात्रा कु० अर्चना जैन, जो कि उच्चतर माध्यमिक प्रमाण-पत्र परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई, का अभिनन्दन किया गया। छात्रा को विधायक श्री उत्तमचन्द खटीक के कर कमलों से प्रशस्ति पत्र एवं मैडल प्राप्त करने का सौभाग्य मिला ।

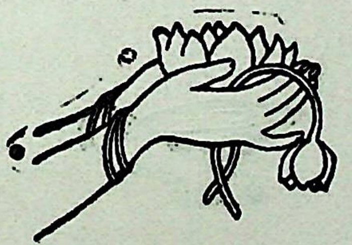

कु० ममता सेन,
कक्षा ९

आशीर्वाद

—एक बुढ़िया सड़क पर कार से दबी जा रही थी । एक सज्जन ने जल्दी से उसे उठा कर एक ओर खड़ा कर दिया । बुढ़िया ने आशीर्वाद देते हुए कहा – 'बेटे, जैसे तूने मुझे उठाया वैसे भगवान तुझे उठा ले ।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाला का गौरव

—: ० :—

जब भी शाला की कोई छात्रा किसी विशिष्ट कार्य हेतु पुरुस्कार प्राप्त करती है तो यह शाला के लिए गौरव की बात होती है और शाला परिवार इससे गौरवान्वित है।

बीना में "सैन्ट्रल वेयर हाउस" का सिल्वर जुबली फंक्शन कृषि उपज मंडी शेड में विभिन्न आकर्षक व रंगारंग कार्यक्रमों के साथ आयोजित था। नगर की विभिन्न शालाओं की ओर से अनेक कार्यक्रम प्रतिस्पर्धात्मक आयोजित थे। इस अवसर पर हमारी शाला की विभिन्न छात्राओं ने भी अनेक शानदार व जानदार कार्यक्रम प्रस्तुत कर अनेक पुरुष्कार प्राप्त किये। पुरुस्कार प्राप्त करने वाली कलाकार प्रमुख छात्रायें हैं—कु० साधना जैन, कु० ममता जैन, कु० मीना चौधरी, कु० मीना जैन, कु० नीलम बुखारिया, कु० मन्जु जैन, कु० रश्मि जैन और कु० मीरा पाराशर।

सैन्ट्रल वेयर हाउस बीना के मैनेजर श्री महेन्द्रनाथ डाँगे के कर कमलो से छात्राओं ने पुरुष्कार प्राप्त किये। श्री डाँगे साहब द्वारा छात्राओं की सजीव कला की मुक्त कंठ से सराहना की गयी तथा यह समाचार चित्रावली सहित दिसम्बर ८२ में नई दिल्ली से प्रकाशित वेयर हाउसिंगसमाचार-पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

यह शाला के लिये गौरव की बात है।

कु० भावना जैन,
कक्षा ९

१—अध्यापक—बच्चो, क्या तुम दर्जन का अर्थ जानते हो ?
बच्चे—जी, दर्जी की पत्नी को 'दर्जन' कहते हैं।

२—अध्यापक—पसीना क्यों आता है ?
बच्चे—जी, आपका पीटने वाला डण्डा देखकर।

३—एक व्यक्ति—(लीडर से) आपको आजादी कब मिली ?
लीडर—जिस दिन मेरी पत्नी ने मुझे तलाक दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ना० नं० दि० जैन शिशु मन्दिर एवं प्राथमिक शाला

कु० माधुरी भागवत,
प्रधानाध्यापिका

प्रत्येक प्रगतिशील राष्ट्र में शिशु-शिक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता है। शिशु ही आगे चलकर देश के भावी नागरिक बनेंगे, जिनके कन्धों पर देश का भार आयेगा। अत: बचपन से ही उनमें ऐसे संस्कार डाले जाना आवश्यक हैं जो उन्हें देश के सुयोग्य एवं आदर्श नागरिक बना सकें। भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश में तो शिशु-शिक्षण और भी जरूरी है। इसी से देश के विभिन्न नगरों में शिशु-मन्दिर, शिशु-सदन, बाल-वाड़ियाँ जगह-जगह खोली जा रही हैं। बीना नगर भी इसका अपवाद नहीं है। यहाँ भी दो-एक शिशु-मन्दिर पूर्व से ही संचालित हैं, तथापि बीना नगर की आवश्यकता को देखते हुए वे अपर्याप्त थे। इसीलिए नगर के इटावा भाग में जैन समाज ने शिशु-मन्दिर की स्थापना कर एक अद्वितीय कदम उठाया है।

श्री ना. नं. दि. जैन शिशु-मन्दिर एवं प्राथमिक शाला इटावा में प्रत्येक नागरिक के शिशु बगैर किसी भेदभाव के आसानी से प्रवेश पा लेते हैं। शिक्षण एवं व्यवस्था उत्तम है। शुल्क भी कम लिया जाता है। नगर के मध्य सुरक्षित स्थान में होने से शिशुओं को घर से यहां तक आने जाने में असुविधा नहीं होती तथा दुर्घटना की भी कोई संभावना नहीं है। अत: जैन समाज द्वारा शिशु-मन्दिर की स्थापना एक अद्वितीय कदम है। इससे एक ओर जहाँ नगर के प्रत्येक नागरिक के शिशु यहाँ अध्ययन करके सुसंस्कारित होकर देश के आदर्श नागरिक बनेंगे वहीं दूसरी ओर नगर की गौरवशाली परम्परा को भी कायम करेंगे।

श्री ना. नं. दि. जैन शिशु-मन्दिर का शुभारम्भ १९८१ में हुआ। प्रति वर्ष इसकी एक कक्षा बढ़ती रही। सन् १९८२ में उपर्युक्त कड़ी में एक कड़ी का शुभारम्भ प्राथमिक शाला की स्थापना से हुआ। इसका परीक्षा-परिणाम प्रारम्भ से आज तक शत प्रतिशत रहा है। यह परिणाम शिशुओं की लगन, मेहनत एवं शिक्षिकाओं की कर्मठता योग्यता एवं अच्छे आदर्श की ओर इशारा करता है।

प्रत्येक वर्ष का परीक्षा परिणाम एवं क्रीड़ोत्सव

कक्षा	वर्ष	बच्ची की संख्या	परीक्षा परिणाम	प्रतिशत	खेल खूद
के० जी० I	१९८२	३२	३२ पास	१००%	राष्ट्रीय गति
के० जी० II	१९८२	३६	३६ पास	१००%	नृत्य
के० जी० I	१९८३	२८	२८ पास	१००%	कविताएँ
के० जी० II	१९८३	४७	४७ पास	१००%	
प्राइमरी क्लास I	१९८३	३६	३६ पास	१००%	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

--शिशु को सुसंस्कारित करना आसान नहीं होता, क्योंकि वह बहुत छोटा होता है। इसे अधिकांशतः कुछ ज्ञान नहीं होता। इसे अपने माता-पिता, भाई-बहन और घर का वातावरण छोड़कर स्कूल में आने में अच्छा नहीं लगता। अतः इस अवस्था में उन्हें सस्कारित करने में शिक्षिकाओं को बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निवाहनी पड़ती हैं।

—शिशु कुम्हार की कच्ची माटी जैसा होता है। शिक्षिकाएँ कुम्हार जैसी होती हैं। जैसे कुम्हार मिट्टी से तरह तरह की चीजे बनाता है वैसे ही ये शिक्षिकाएँ यहाँ शिशु-मन्दिर में शिशुओं के कोमल मस्तिष्क को विकसित कर उन्हें सच्चा देशभक्त बनाती हैं तथा जीवन की हर समस्या का डटकर मुकाबला करने वाले आदर्श भावी नागरिक का निर्माण करती हैं।

-- शिक्षा, शिशु की अनिवार्य आवश्यकता है, क्योंकि इससे अज्ञानरूपी अन्धकार को हटाया जा सकता है। शिक्षा ही मानव को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराती है। इसी से हर नागरिक अपने शिशु को उत्तम शिक्षा दिलाना चाहता है ताकि वह आदर्श नागरिक बनकर समाज में उचित व सम्मान जनक स्थान पा सके।

नागरिकों की इसी भावना को वीना जैन समाज ने महसूस किया और सन् १६८१ में शिशु शिक्षण हेतु शिशु मन्दिर का शुभारम्भ कर साहसिक कार्य किया। जैन समाज द्वारा शिशु मन्दिर की स्थापना के साहसिक कदम का नागरिकों ने सर्वत्र स्वागत किया।

कु० शिखा जैन,
कक्षा ६

मां—बेटे, उठ।
बेटा—मैं अभी नहीं उठ रहा हूँ।
मां—क्यों बेटे ?
बेटा—मैं रात भर सपने देखता रहा। अतः मैं सो नहीं सका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

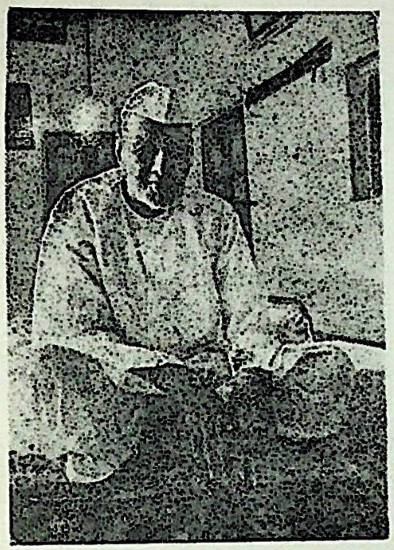

नगर के लब्ध प्रतिष्ठ समाज शिरोमणि एवं सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमान् सिंघई श्रीनन्दन लाल जी बीना के स्वर्गवास पर बीना समाज द्वारा समर्पित

श्रद्धा-सुमन

श्रीमान् सिंघई राजकुमारजी,
उपाध्यक्ष—श्री ना० न० दि० जैन हितोपदेशनी सभा बीना,

आपके पूज्य पिताजी माननीय सिंघई श्री श्रीनंदलालजी के दिनांक ७-५-८४ के आकस्मिक देहावसान से समस्त दिगम्बर जैन समाज बीना को अपूरणीय क्षति हुई है, क्योंकि वे सर्वसमाज के कर्णधार, शुभचिन्तक, अग्रगण्य व लब्ध-प्रतिष्ठ "दद्दा" जी थे। ३४ गावों के मालगुजार, अपार वैभव के स्वामी, स्वाभिमानी, मनस्वी, प्रभावी व्यक्तित्व के धनी, एवं भद्र परिणामी जीव थे। समाज के गौरव व बीना नगर की प्रतिष्ठाभूत "नाक" थे। इन्होंने बीना की हितोपदेनी सभा, नगरपालिका परिषद तथा मंडी कमेटी के अध्यक्ष पदों को वर्षों तक सुशोभित किया है। जैन गुरुकुल खुरई तथा देश की विभिन्न संस्थाओं को असीमित दान दिया है। इस तरह उचित मार्गदर्शन व सहयोग समाज को सदा प्राप्त होता रहा है। ऐसे पुण्यात्मा के वियोग से समाज दुखी है।

पूज्य पिताश्री के स्नेह एवं छत्रच्छाया से हमेशा-हमेशा के लिए वंचित हो जाने से आपको एवं आपके परिवार को असह्य शोक होना स्वाभाविक है। लेकिन हर संसारी प्राणी की मृत्यु अवश्यम्भावी है। संसार की इस गति को कोई रोक नही सकता। इस संसारी प्राणी की मृत्यु तो देर-सवेर होती ही है। आदरणीय सिंघईजी यद्यपि भौतिक शरीर से अब हमारे बीच नहीं है, पर उनकी कीर्ति और यश सदा अमर रहेगा। वे अपने परोपकारी कार्यों से चिरकाल तक याद किए जावेंगे। अतः उनके प्रति शोक करना उचित नहीं है।

आप स्वयं विज्ञ व समझदार हैं। संसार की गतिविधि से भी आप सुपरिचित हैं। अतः उनके वियोगजन्य असह्य दुःख को आप धैर्यपूर्वक सहन करें। समस्त समाज आपके दुख में सहभागी है।

समस्त दिग० जैन समाज बीना दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धान्जलि समर्पित करती है, तथा श्री जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सद्‌गति एवं शाश्वत शान्ति प्राप्त हो एवं शोकसंतृप्त सारे परिवार को दुःख को धैर्यपूर्वक सहन करने का सम्बल प्राप्त हो।

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

बीना
दिनांक ७-६-८४

राजेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
श्री नाभि० न० दि० जैन हितो० सभा
बीना

विमलकुमार सराफ
मंत्री
श्री नाभि० दिग० जैन हितो० सभा
बीना
एवं समस्त जैन समाज

एवं समस्त सदस्यगण
श्री नाभि० दिग० जैन हितो० सभा, बीना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ENGLISH-SECTION

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

God's Prayer

Ku. Bhavna Dubey
Class 11th

God Be In My Head
And In My Understanding
God Be In My Eyes
And In My Looking
God Be In My Mouth
And In My Speaking
God Be In My Heart
And In My Thinking

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Self Help

Sunita Starley
M. A. B. Ed.
Headmistress

Man is born free but he is in chains everywhere. He can not act on free will like an animal because in society we all live together. By nature, man is a selfish creature therefore we cannot hope help from others. Hence, the only way is self help.

Self help is a quality which brings forth all round development of a person. One who is self dependent marches forwards phys icalmental and moral development. He is the builder of his own fate.

"God also helps them who help themselves" is a famous proverb.

One who does not depend on others for his work has to work hard. While working hard he finds peace and achieves number of Success. Even though he does not achieve his aims, he is not dissatisfied but he keeps on his work.

He can face difficulties and troubles and can make a way for himself.

Self service is a service of the own self is well as of society. He transcends the narrow limits of own self and servies the whole Society and person commands a great respece from others and earns a good name in the Society. He enhances his knowledge in different fields and benefits himself and the society.

A self dependent person is always industrious. He keeps doing something and does not indulge in mere talk.

Many great persons and leaders of the world rise to greatness through self help. Self made man is a valuable asset to his soeiety. The prosperity and advancement of the western world of is owing to the people who believe in self help.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Dowery System—A Cure

Ku. Manjusha Sen
X th.

In Indian Society Dowery System is the greatest curse. In Indian families the birth of a daughter is never welcomed. The birth of a girl means the decree of Rs. 10,000 or above on the parents. In other words we can say that the parents can not perform the marriage of their daughter in a good family, if they do not have enough money to fulfil the demands of people of the other side. The result in many cases is suicide either by the girl or by the parents. If we throw a glance to the past history, we will find a number of such examples. We daily read in news papers such types of news where the mother in law's and the husband compelled the poor girl to commit suicide by one way or the other. The cause behind such cases has generally been dowery. There is no hesitation in saying that Dowery System has proved to be the greatest curse for most of the parents and their daughters.

Recently Laws are made against the persons who demanded dowery in the marriage's of their son's. The Government's of different States have made certain ammendments in Dowery Act. For example—Bihar Government has declared that the persons who will demand dowery can not get government Services in their lives. The persons who are already in govt. service will be dismissed from their services, if they demand dowery in their marriage. It is realy a very bold step and the government of states must support it by implementing this act in their states.

It is a true fact that every person whether he is rich or poor realizes it in his heart that dowery system has weakend the roots of our society. A girl is not inferior in any sense to a boy. She is more dutiful to her parents, her mother in law, her kithes and kins than a boy.

The social reformers of Delhi and other big cities have also made efforts to uproot this evil. They have reached the colleges of boys and girls and have inspired the young boys and girls by their speeches to revolt against dowery System. Most of the young girls and boys have taken pledge before them that if at the time of their marriage, dowery will be taken or given, they will totally oppose such marriage. It is a good step. It has brought awakening among the young boys and girls. The young blood, the future citizens of India can do every thing if they are bent upon doing it.

In the same way during International women year. The Janvadi Mahila Samaj of kanpur also demanded that the police action must be taken against both the parties i. e. who give dowery and who receive it.

Many young boys and girls also set examples in some big cities by marring without dowery. The day is not far away when with the co-operation of the people the social reformers and with the cooperation of the young girls and boys the government would be able to uproot this evil from society.

It is also good that the girls are also taking bold steps against this curse i. e. the Dowery System.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Day And Night

Smt. Kiran Thakur
U. D. T.

When Sun Sets in the west,
Birds fly back to their nest,

Day thus ends and comes the night,
All places become calm and quiet

Twinkle, twinkle little Stars,
To be seen in the sky too far,

All of us then go to sleep,
With the name of God on our lips,

Night there ends and comes the day,
With bright and glittering Sun's rays.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाला-परिवार

१.	श्रीमती हरवंश डांगे	एम० ए० एल० टी०	प्राचार्या उ० मा० विभाग
२.	कुमारी गीता ठाकुर	एम० ए० बी० एड०	उ० श्रे० शि०
३.	कुमारी इन्द्रा श्रीपति	एम० ए० बी० एड०	उ० श्रे० शि०
४.	श्रीमती सुलेखा जैन	बी० एस० सी०, बी० एड०	उ० श्रे० शि०
५.	श्रीमती सुधा श्रीवास्तव	बी० ए० आयुर्वेदरत्न	क्रा० शि०
६.	श्री संजय भाटिया	बी० काम०	लिपिक
७.	श्रीमती सुनीता स्टेनली	एम० ए० बी० एड०	प्रधानाध्यापिका पूर्व मा० विभाग
८.	श्रीमती कमला जैन	एम० ए० बी० एड०	सहा० शि०
९.	कुमारी पदमा जैन	एम० ए० बी० लिब	सहा० शि०
१०.	कु० इन्दुप्रभा श्रीवास्तव	एम० ए० एम० एड०	सहा० शि०
११.	श्रीमती कुसुम कुमारी जैन	एम० ए० बी० एड०	सहा० शि०
१२.	कु० अनीता श्रीवास्तव	एम० एल० सी० बी० एड०	सहा० शि०
१३.	श्रीमती किरण ठाकुर	बी० एच० एस० सी०	प्रधानपाठिका प्राथमिक विभाग
१४.	कुमारी सुनीता श्रीवास्तव	बी० ए० बी० एड०	शिक्षिका
१५.	श्रीमती नीलिमा पांडे		शिक्षिका
१६.	कु० माधुरी भागवत	एम० ए० (मांटेसरी ट्रेन्ड	प्रधान पाठिका— शिशु मन्दिर विभाग
१७.	श्रीमती मीना जैन		
१८.	श्री गनेश प्रसाद	भृत्य	
१९.	श्री प्यारे लाल	"	
२०.	श्रीमती मूंगाबाई	"	
२१.	श्रीमती मीना जैन	"	
२२.	श्रीमती लक्ष्मी साहू	"	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन हितोपदेशनी सभा बीना (म०प्र०) के कार्यरत शासी निकाय (कार्यकारी न्यासी) की सूची

१.	श्री राजेन्द्रकुमार जी जैन	अध्यक्ष
२.	श्री सिं० राजकुमार जी जैन	उपाध्यक्ष वरिष्ठ
३.	श्री सिं० कमलकुमार जी	उपाध्यक्ष कनिष्ठ
४.	श्री विमलकुमार जी सराफ	मंत्री
५.	श्री सनमतकुमार जी कठरया	उप-मंत्री
६.	श्री प्रेमचंद जी जैन (सेमरा वाले)	सदस्य प्रबन्ध कारिणी
७.	श्री कृष्णकुमार जी जैन (जरदा वाले)	,, ,,
८.	श्री अभयकुमार जी शास्त्री	,, ,,
९.	श्री चौधरी मूलचंद जी	,, ,,
१०.	श्री श्रीकुमार जी जैन	,, ,,
११.	श्री प्रकाशचंद्र जी जैन	,, ,,

संस्कृत विद्यालय परिवार

१.	श्री पं० मोतीलाल साहित्याचार्य	एम० ए०, साहित्याचार्य	प्रधानाध्यापक स० [illegible]
२.	,, पं० फूलचंद	शास्त्री	सहायक अध्यापक
३.	,, ब्र० चन्द्रसेन	बी० काम०	सहायक अध्यापक
४.	कु० सुधा जैन	बी० ए० आयुर्वेदरत्न	सहायक अध्यापिका
५.	श्रीमती विमला जैन		रसोइन

4513

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक
श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन
हितोपदेशिनी सभा
बीना, (सागर)

मुद्रक
हीरालाल जैन,
सुदर्शन प्रेस,
बीना (म० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi